वर्ग - ४

जुमे के दिन और रात की फ़ज़ीलत और दुआएं

जुमे के दिन की फ़ज़ीलत

जुमे की रात और दिन को दूसरे दिनों और रातों को एक ख़ास इमतियाæज, रफ़अत, शरफ़ हासिल है। रसूले अक्रम (स) से नक़्ल किया गया है कि जुमे की रात और दिन के चौबीस घंटे हैं और उनमे परवरदिगार हर घंटे में छे लाख लोगों को जहन्नम की आग से आज़ादी इनायत फ़रमाता है।

इमाम सादिक़ (अ) से नक़्ल किया गया है के जो व्यक्ति जु मेरात के ज़वाल से लेकर ज़वाले रोज़े जुमा के दरमियान मर जाए ख़ुदा उसे ि़फ़शारे कब्र से महफ़ूज़ रखेगा।

यह भी नक़्ल किया है के जुमा की ख़ास हुरमत और उसका एक अज़ीम हक़ है। लेहाज़ा ख़बरदार उसकी हुरमत उसका हक़ ज़ाया न होने पाए। और इस दौरान परवरदिगार की इबादत में और उसका तक़र्रुब हासिल करने में सुस्ती नहीं दिखाना चाहिए। बेहतरीन आमाल अंजाम देना चाहिए और तमाम सब हराम कामों और चीज़ों को छोड देना चाहिए के ख़ुदा इस दौरान सवाबे इताअत को दुगना कर देता है। और गुनाहों के अज़ाब को मिटा देता है। दुनिया और आख़ेरत में मोमिनीन के दरजात को बुलंद करता है।

शबे जुमा भी फ़ज़ीलत में जुमा के दिन की तरह है के अगर इंसान इस शब में नमाज़ और दुआ के साथ शब्बेदारी कर सकता है तो करना चाहिए के परवरदिगारे आलम मलाएका को मोमिनीन के एहतेराम के लिए पहले आसमान पर भेजता है। के उनकी नेकियों को ज़्यादा बनाए और उनके गुनाहों को मिटा दें। ख़ुदा बेहतरीन मेहेरबान और करीम है।

हदीसे मोअतबर में उन्हीं हज़रत (इमामे सादिक़) से नक़्ल किया गया है:

कभी ऐसा होता है के मोमिन किसी काम के लिए दुआ करता है और परवरदिगार इस दुआ की क़ुबूलियत को इतनी देर ढाल देता है के जुमे का दिन आजाए तो उसकी हाजत को पूरा कर दिया जाए और जुमा की बरकत से इस में इज़ाफा कर दिया जाए।

फ़रमाया के बिरादराने यूसुफ़ ने जब हज़रते याक़ूब से अपने गुनाहों की माफ़ी मांगी तो उन्होंने फ़रमाया के मैं अनक़रीब तुम्हारे लिए परवरदिगार से इस्तेग़फ़ार करूंगा और उन्होंने इस्तेग़फ़ार की जुमा की सहेर तक के लिए मुलतवी कर दिया ताकी यह दुआ क़ुबूल हो जाए।

उनही हज़रत से नक़्ल किया है जब शबे जुमा आती है तो दरया की मछलियां पानी से सर निकलाती हैं और जंगल के जानवर आसमान की तरफ़ सर उठाते हैं और सब परवरदिगार को आवाज़ देते हैं: ख़ुदाया हम पर लोगों के गुनाहों का अज़ाब न करना।

इमाम मोहम्मद बाक़र (अ) से मनक़ूल है के परवरदिगारे आलम एक मलक को हर शबे जुमा में अर्शे आज़म से हुक्म देता है और वह उसी बुलंदी से अव्वले शब से आख़िरे शब तक मालिक की तरफ़ से आवज़ देता रहता है के आया कोई बंदा मोमिन है जो तुलूए सुबह से पहले अपनी दुनियाओ आख़ेरत के लिए कोई दुआ करे ताके ख़ुदा उसकी दुआ को क़ुबूल करे? आया कोई बंदे मोमिन है जो तुलूए सुबह से पहले अपने गुनाहों से तौबा करले ताके ख़ुदा उसकी तौबा को क़ुबूल करले? आया कोई बंदे मोमिन है जिसकी रोज़ी तंग हो और वोह उस से सवाल करे और वो उसकी रोज़ी में वुसअत पैदा कर दे? आया कोई बंदे मोमिन है जो बीमार हो और तुलूए सुबह से पहले उससे गुज़ारिश करे और वह उसे सेहत दे दे? आया कोई बंदे मोमिन है जो गिरफ़्तारियों में मुब्तेला हो और वो तुलूए सुबह से पहले सवाल करे और वो उसे क़ैद से रिहाई दिलाकर उसके रंज ओ ग़म को दूर कर दे? आया कोई बंदे मोमिन है जो मज़लूम हो और तुलूए फ़ज्रो से पहले उससे सवाल करे के वो उसे ज़ालिम के ज़ुल्म से नजात दिला दे और उसके हक़ का बदला लेकर उसका हक़ उसके हवाले कर दे? मलक की ये आवाज़ तुलूए फ़ज्रो तक यूं ही बरक़रार रहती है।

अमीरूल मोमिनीन (अ) से मन्क़ूल है के परवरदिगार ने जुमा के दिन को तमाम दिनों पर मुनतख़ब और रोज़े ईद क़रार दिया है। और उसकी रात को भी वही मरतबा ब॰ख्शा है। और जुमा के दिन के फ़ज़ाएल में से यह भी है के अगर कोई इंसान उस दिन परवरदिगार से कोई दुआ करता है तो उसकी दुआ क़बूल कर दी जाती है। और अगर कुछ लोग अज़ाब के लाएक़ हो जाए और शबे जुमा या जुमे के दिन परवरदिगार से दुआ करे तो परवरदिगार उसके अज़ाब को बरक़रार कर देता है। और जिन ओमूर को शबे जुमा मुकद्दर करता है मोहकम और मुसतहकम बना देता है। लेहाज़ा शबे जुमा बेहतरीन शब और जुमा का दिन बेहतरीन दिन है।

इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ) से रिवायत की गई है के शबे जुमा गुनाह करने से ख़ुसूसियत के साथ परहेज़ करे के उस रात के गुनाहों का अज़ाब दोहरा हो जाता है जिस तरह के नेकियों का सवाब भी दोहरा होता है। और अगर कोई शख़्स मासियत न करे तो परवरदिगार उसके दूसरे गुनाहों को माफ़ कर देता है। और अगर कोई व्यक्ति खुल्लम खुल्ला शबे जुमा गुनाह करता है तो परवरदिगार उसके ज़िंदगी भर के गुनाहों का हिसाब करता है और उसके अज़ाब को दुगना कर देता है।

इमामे रज़ा (अ) से मोतबर सनद से नक़्ल किया है के रसूले अक्रम (स) ने फ़रमाया के जुमे का दिन अफ़ज़लतरीन दिन है और परवरदिगार उस दिन नेकियों के सवाब को दुगना कर देता है। और ग्नाहों को माफ़ कर देता है और इंसान के दरजात को बुलंद कर देता है। दुआओं को क़बूल करता है और रंजओ ग़म को दूर कर देता है। बड़ी बड़ी हाजतें उसी दिन पूरी होती हैं। मालिक अपने बंदो पर ख़ुसूसी मेहेरबानी फ़रमाता है और बहुत से लोगों को जहन्नम की आग से आज़ाद करता है। तो जो व्यक्ति भी उस दिन अल्लाह से दुआ करे और उस दिन के हक को और उस दिन की हुरमत को पहचान ले अल्लाह उसे जहन्नम की आग से आज़ाद कर देगा और अगर कोई व्यक्ति जुमे की रात या दिन को मर जाए तो उसे शहीदों का सवाब इनायत करेगा। और क़यामत के दिन अज़ाब से महफ़ूज़ उठाया जाएगा। लेकिन कोई अगर जुमा की तौहीन करेगा और उसके हक़ को बरबाद करेगा

के नमाज़े जुमा अदा न करे या हराम से परहेज़ न करे तो अल्लाह के लिए ज़रूरी है के अगर तौबा न करे तो उसे जहन्नम में डाल दें।
इमाम बाकिर (अ) से नक़्ल किया गया है के कोई दिन जुमा से बेहतर नहीं है। हद ये है के जुमा के दिन परिंदे भी जब मुलाक़ात करते हैं तो कहते हैं आज का दिन बेहतरीन दिन है।
???इमाम सादिक़ (अ) से नक़्ल किया गया है के जो जुमा का दिन हासिल करे उसे चाहिए के इबादत के अलावा किसी और अमल में मशग़ूल न हो। के ख़ुदा उस दिन अपने बंदो को बख़्शता है और अपनी रहमत नाज़ल करता है। जुमा के दिन के फ़ज़ाएल और ज़्यादा हैं।

जुमे की रात के आमाल

इस सिलसिले में बहुत सी चीज़ें हैं। जिनमें से सिर्फ़ चंद का ज़िक्र किया जा रहा है।
पहले: इन चीज़ों की ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ना:
???ख़ुदा पाको पाकीज़ा है व ख़ुदा सबसे बड़ा है व अललाह के सिवा कोई खुदा नही। ख़ुदाया मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा।

रिवायत है के जुमा की रात नूरानी है और दिन और ज़्यादा नूरानी है लेहाज़ा कसरत के साथ ऐसा कहो और मोहम्मद और आले मोहम्मद (अ) पर सलवात पढ़ो।
इमामे सादिक़ (अ) से नक़्ल है के जुमे की रात को मोहम्मद और आले मोहम्मद पर सलवात पढ़ना हज़ार नेकीयों के बराबर है। और ख़ुदा उसकी वजह से हज़ार बुराईयों को मिटा देता है। इनसान के हज़ार दरजे बुलंद करता है। मुस्तहब है के नमाज़े अस्र जु मेरात से आख़िरे जुमा तक मुसलसल सलवात पढ़ता रहे।
इमामे सादिक़ (अ) से नक़्ल है के जब जुमेरात को अस्र हो ता है तो मलाएका सोने के क़लम और चांदी के अवराक़ लेकर आते हैं और जुमेरात की शाम से जुमे के दिन मग़रिब तक सिवाए मोहम्मद और आले मोहम्मद पर सलवात के किसी और नेकी को दर्ज नहीं करते।

शेख़ तूसी ने कहा के जुमेरात के दिन मुस्तहब है के हज़ार बार मोहम्मद और आले मोहम्मद पर सलवात पढ़े और मुस्तहब है इस सलवात को इस तरह पढ़ा जाए:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ وَ عَجِّلْ فَرَجَهُمْ وَ اَهْلِكْ عَدُوَّهُمْ

°खुदाया मुहम्मद (स) व आले मुहम्मद (स) पर रहमत ना°जल °फर्मा। उन के सुकून में ताजील °फर्मा और

مِنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ مِنَ الْاَوَّلِيْنَ وَ الْآخِرِيْنَ

उन के दुश्मनों को हलाक कर दे चाहे जिन्नात में से हों या इन्सानों मे से, अव्वलीन हों या आ°खरीन में।

शेख़ तूसी ने यह भी फ़रमाया है के आाख़िर जुमेरात के दिन इस प्रकार इस्तेग़फ़ार करना भी मुस्तहब है:

اَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ تَوْبَةَ

मैं उस ख़ुदा से माफ़ी चाहता हूँ जिस के अलावा कोई ख़ुदा नहीं है। वो ही ज़िन्दा और पाइँदा है और मैं

عَبْدٍ خَاضِعٍ مِسْكِيْنٍ مُسْتَكِيْنٍ، لَا يَسْتَطِيْعُ لِنَفْسِهٖ ضَرًّا وَلَا

उस की बार्गाह में इस तरह तौबा करता हूँ जिस तरह एक बंदा ख़ाज़ा ओ मिस्कीन ओ ज़लील तौबा करता

عَدْلًا، وَلَا نَفْعًا وَلَا ضَرًّا، وَلَا حَيَاةً وَلَا مَوْتًا وَلَا نُشُوْرًا، وَصَلَّى اللهُ

है जिस के इख़तियार में न हालात का बदलना है और न कोई फ़ाएदा है और न कोई नु°क्सान है, न मौत व

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعِتْرَتِهِ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ، اَلْاَخْيَارِ الْاَبْرَارِ وَ سَلَّمَ

जिंदगी है और न हश्र व नश्र। पर्वर्दिगार हज़रत मुहम्मद (स) ओर उनकी तय्यबो ताहिर और नेक किर्दार

تَسْلِيمًا.

अज़ीम औलाद पर रहमत और सलाम नाज़ल फ़र्माए।

दूसरा: जुमे की रात को इन सूरों का पढ़ना भी फ़ायदेमंद और सवाब दायक है:

१. सूरह बनी इसराईल
२. सूरह कहफ
३. जो सूरह तासीन से शुरू होते है: शूरह नम्ल और क़सस
४. सूरह सजदा
५. सूरह यासीन
६. सूरह साद
७. सूरह अहक़ाफ़
८. सूरह वाक़ेआ
९. सूरह फ़ुस्सेलत
१०. सूरह दुख़ान
११. सूरह तूर
१२. सूरह क़मर
१३. सूरह जुमा

और अगर इतनी फ़ुरसत न हो तो सिर्फ़ सूरह वाक़ेआ और जो सूरह उस से पहले बताए गए हैं उन्हें पढ़े।

इमामे सा॰दिक (अ) से रिवायत है के जो भी जुमे की रात को सूरह बनी इसराईल पढ़ेगा वह उस समय तक इस दुनिया से न जाएगा जब तक इमामे ज़माना (अ.त.फ.श.) की ज़ियारत न कर ले और फिर उन्हीं के असहाब में शुमार होगा।

फ़रमाया के जो व्यक्ति जुमे की रात को सूरह कहफ़ पढ़ेगा वो राहे खुदा में शहीद होकर जाएगा। ओर परवरदिगार उसे शोहदा के साथ महशूर करेगा।

जो व्यक्ति तीनों तासीन जुमे की रात को पढ़ेगा वह खुदा के दोस्तों में

शुमार होगा और अल्लाह के हिफ्ज़ो अमान में रहेगा। ग़रीबी से महफ़ूज़ रहेगा और आख़ेरत में खुदा बेहिश्त में इस क़दर नेमतें अता करेगा के बंदा राज़ी हो जाए। उसके अलावा करामतें भी इनायत फ़रमाएगा और सौ हूराने जन्नत से उसकी शादी कर देगा।

जो व्यक्ति जुमा की रात को सूरह सजदा की तिलावत करेगा क़यामत में उसका नामे आमाल सीधे हाथ में दिया जाएगा और आमाल का हिसाब न होगा और वह आले मोहम्मद के साथियों में महशूर होगा। इमामे मोहम्मद बाक़िर (अ) से मोअतबर सनद के साथ नक़्ल किया गया है के जो व्यक्ति जुमे की रात को सूरह साद की तिलावत करेगा उसे दुनिया और आख़ेरत में इतना ख़ैर दिया जाएगा जितना पैग़म्बरे मुरसल और मुक़र्रब फ़रिश्तों के अलावा और किसी को नहीं दिया जाता है। और उसे बेहिश्त में जगह दी जाएगी जिसके साथ भी वह रहना चाहेगा। यहाँ तक के अगर वो अपने नौकर को जो उसके घर वालों में शामिल नहीं है उसे भी साथ रखना चाहे तो उसे भी साथ कर दिया जाएगा।

इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ) से नक़्ल किया गया है के जो व्यक्ति शबे जुमा या जुमा के दिन सूरह अहक़ाफ़ पढ़ेगा तो दुनिया में कोई ख़ाफ़ या रंज न देखेंगा। और आख़ेरत के हौल से भी महफ़ूज़ रहेगा।

आपही ने फ़रमाया के जो व्यक्ति शबे जुमा सूरह वाक़ेआ पढ़ेगा, खुदा उसे महबूब बना लेगा और दुनिया में बद हाली और ग़रीबी से महफ़ूज़ रखेगा और आफ़त उस तक नहीं पहोंचेगी। वो आख़ेरत में अमीरूल मोमिनीन (अ) के रोफ़क़ा में शुमार होगा। और यह सूरह हज़रत ही के साथ मख़सूस है।

यह भी रिवायत है के जो व्यक्ति शबे जुमा में सूरह जुमा पढ़ेगा तो यह उसका एक जुमा से दूसरे जुमा तक के गुनाहों का क॰प॰ाफारा हो जाएगा। और यही फ़ज़ीलत सूरह कहफ़ के शबे जुमा में तिलावत की भी वारिद हुई है। बल्कि जो शख़्स सूरह कहफ़ को ज़ोहर, अस्र, जुमा के दिन के बाद पढ़ेगा, उसके लिए भी यही फ़ज़ीलत है।

वाज़ेह रहे के शबे जुमा में बहुत सी नमा॰जें भी वारिद हुई हैं जिनमें से एक नमा॰जें अमीरूल मोमिनीन है और दूसरी दो रकत नमाज़ है जिसमें हर

रअत में हम्द और पंद्रह बार सूरह ज़िलज़ाल वारिद हुआ है। जो भी यह नमाज़ पढ़ेगा परवरदिगार इसको अज़ाबे क़ब्र और हौले महशर से महफ़ूज़ रखेगा।
तीसरी: नमाज़े मग़रिब और इशा की पहली रकत में सूरह जुमा पढ़े और दूसरी रकत में मग़रिब में सूरह तौहीद और ईशा में सूरह आला पढ़े।
चौथे: शबे जुमा में शेर पढ़ने से परहेज़ करें, इमामे जाफ़र सादिक़ (अ) से सहीह हदीस में मनक़ूल है के रोज़ादार के लिए, हालत एहराम में, और हरमे में और जुमा की शब और दिन में शेर पढ़ना मकरूह है। रावी ने अर्ज़ किया के चाहे शेर बरहक हो तो? इमाम (अ) ने कहा हाँ, चाहे वह बरहक ही क्यों न हो। हदीसे मोअतबर में इमामे सादिक़ (अ) से नक़्ल किया गया है के रसूले अक्रम (स) ने फ़रमाया:
जो शबे जुमा या जुमे के दिन शेर पढ़ेगा वह उस दिन या रात के हर सवाब के अलावा उस शेर के महरूम रहेगा। दूसरी रिवायत में यह वारिद हुआ है के उस रात में और उस दिन में उसकी नमाज़ क़ुबूल न होगी।
पाँचवे: मोमिनीन के हक़ में दुआ करे जैसा के जनाबे फ़ातेमा (स) करती थी और अगर दस अदद मर जाने वाले के हक़ में इस्तेग़फ़ार करेगा तो जन्नत उसके लिए लाज़म हो जाएगी।
छटे: उस शब में वह दुआएं पढ़े जो रिवायात में वारिद हुई हैं जिनकी तादाद बहुत है और हम उनमें से चंद का तज़किरा कर रहे हैं।
इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ) से सहीह सनद के साथ नक्ल किया गया है जो व्यक्ति शबे जुमा में नाफ़लए शाम के अंतिम सजदे में सात बार इस दुआ को पढ़ेगा उसके गुनाहों को माफ़ कर दिया जाएगा। और अगर हर शब में ऐसा ही करेगा तो और ज़्यादा बेहतर होगा। दुआ यह है:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡۤ اَسۡئَلُكَ بِوَجۡهِكَ الۡكَرِيۡمِ وَ اسۡمِكَ الۡعَظِيۡمِ اَنۡ تُصَلِّیَ

ख़ुदाया मैं तुझ से तेरी ज़ात ए अक्दस और तेरे नामे बज़ुर्ग के वसीले से दुआ करता हूँ के मुहम्मद (स) व

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اَنْ تَغْفِرَ لِیْ ذَنْبِیَ الْعَظِیْمِ

आले मुहम्मद (स) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और मेरे अज़ीम गुनाहों को माफ़ फ़र्मा दे।

रसूले अक्रम (स) से नक़्ल किया गया है जो व्यक्ति भी इस दुआ को शबे जुमा या जुमे के दिन सात बार पढ़ेगा और उस शब या उस दिन मर जाएगा वह बेहिश्त में दाख़ल होगा। दुआ यह है:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَ اَنَا عَبْدُكَ وَ ابْنُ

ख़ुदाया तू मेरा रब है। तेरे अलावा कोई ख़ुदा नहीं है। तू ने मुझ को पैदा किया है और मैं तेरा बंदा हूँ, तेरी कनीज़ का

اَمَتِكَ وَ فِیْ قَبْضَتِكَ وَ نَاصِیَتِیْ بِیَدِكَ اَمْسَیْتُ عَلٰى عَهْدِكَ وَ

बेटा हूँ, तेरे क़बज़े में हूँ मेरा इख़तियार तेरे हाथ में है, मैं ने तेरे अहद व वादे पर ये शाम की है। जहाँ तक मेरे इम्कान में

وَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ

होगा अमल करूँगा। ख़ुदाया मैं तेरी पनाह चाहता हूँ हर उस बुराई से जो मैंने की है और उस बात से मैं तेरी नेमतों में

بِنِعْمَتِكَ وَ اَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْ لِیْ ذُنُوْبِیْ اِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ

ज़िंदगी गुज़ारूँ और फिर तेरे गुनाह करता रहूँ। ख़ुदाया मेरे गुनाहों को माफ़ करदे के गुनाहों को तेरे अलावा कोई माफ़

اَنْتَ.

नहीं कर सकता।

शेख़े तूसी, सय्यद इब्ने ताऊस, कफ़अमी और सय्यद बि न बाकी ने फ़रमाया है के शबे जुमा और जुमे के दिन में और शबे अरफ़ा और अरफ़ा के दिन इस दुआ का पढ़ना मुसतहब्बात में है। और हम इस दुआ को मिस्बाहे शेख़ से नक़्ल कर रहे हैं:

اَللّٰهُمَّ مَنْ تَعَبَّاَ وَتَهَيَّاَ وَ اَعَدَّ وَ اسْتَعَدَّ لِوِفَادَةٍ اِلٰى مَخْلُوْقٍ رَجَآءَ

ख़ुदाया अगर किसी ने तय्यारी की है या आमदगी की है या एहतेमाम व इंतेज़ाम किया है किसी मख़लूक़ की

رِفْدِهٖ وَ طَلَبَ نَائِلِهٖ وَ جَائِزَتِهٖ فَاِلَيْكَ يَا رَبِّ تَعْبِيَتِيْ وَ اسْتِعْدَادِيْ

बार्गाह में हाज़र होने के लिए ताकी उसके अतिए और उसके जाएज़े व इनाम को हासिल कर ले तो मैं तेरी

رَجَاءَ عَفْوِكَ وَ طَلَبَ نَائِلِكَ وَ جَائِزَتِكَ فَلَا تُخَيِّبْ دُعَائِيْ يَا مَنْ لَا

बार्गाह की तरफ़ तय्यारी और एहतेमाम के साथ हाज़र हो रहा हूँ। तेरी माफ़ी का उम्मीदवार और तेरे जाएज़े व

يَخِيْبُ عَلَيْهِ سَائِلٌ وَ لَا يَنْقُصُهٗ نَائِلٌ فَاِنِّيْ لَمْ آتِكَ ثِقَةً بِعَمَلٍ

इनाम का तलबगार हूँ, ख़ुदाया मेरी दुआओं को नाउम्मीद ना करना तेरी बार्गाह में कोई साएल नाउम्मीद नहीं

صَالِحٍ عَمِلْتُهٗ وَ لَا لِوِفَادَةِ مَخْلُوْقٍ رَجَوْتُهٗ اَتَيْتُكَ مُقِرًّا عَلٰى نَفْسِيْ

होता है। मैं किसी नेक अमल के भरोसे या किसी मख़लूक़ की सिफ़ारिश के सहारे हाज़र नहीं हुआ हूँ बल्के मैं

بِالْاِسَاءَةِ وَ الظُّلْمِ مُعْتَرِفًا بِاَنْ لَا حُجَّةَ لِيْ وَ لَا عُذْرَ اَتَيْتُكَ اَرْجُوْ

अपने नफ़्स के बारे मे बुराई और गुनाहों का इक़रार करते हुए इस एतेराफ के साथ हाज़र हुआ हूँ के मेरे पास न

عَظِيْمَ عَفْوِكَ الَّذِيْ عَفَوْتَ بِهٖ عَنِ الْخَاطِئِيْنَ فَلَمْ يَمْنَعْكَ

कोई दलील है और न कोई उज़्रो है तेरी अज़ीम माफ़ी का उम्मीदवार हूँ जिसके ज़रिए तू ने ख़ताकारों को माफ़

طُوْلُ عُكُوْفِهِمْ عَلٰى عَظِيْمِ الْجُرْمِ اَنْ عُدْتَ عَلَيْهِمْ بِالرَّحْمَةِ فَيَا

किया है और गुनाहगारों का मुसलसल बड़े बड़े जुर्म करते रहना तुझे इस बात से रोक नहीं सका है के तू उन पर

مَنْ رَحْمَتُهٗ وَاسِعَةٌ وَ عَفْوُهٗ عَظِيْمٌ يَا عَظِيْمُ يَا عَظِيْمُ يَا عَظِيْمُ لَا

मेहेरबानी करे। ऐ वो ख़ुदा जिस की रहमत वसी है और जिस की मग़्फिरत अज़ीम है। ऐ मेरे अज़ीम ऐ मेरे बुज़ुर्ग

يَرُدُّ غَضَبَكَ اِلَّا حِلْمُكَ وَ لَا يُنْجِيْ مِنْ سَخَطِكَ اِلَّا التَّضَرُّعُ اِلَيْكَ

ख़ुदा ऐ मेरे बाअ॰ज्मत ख़ुदा तेरे ग़ज़ब को सिवाए तेरे हिल्म के कोई रोक नहीं सकता और तेरी नाराज़गी से

فَهَبْ لِيْ يَا اِلٰهِيْ فَرَجًا بِالْقُدْرَةِ الَّتِيْ تُحْيِيْ بِهَا مَيِّتَ الْبِلَادِ وَ لَا

सिवाए फ़र्याद के कोई बचा नहीं सकता है। मुझे अपनी क़ुदरते कामिले से सुकून अता फ़र्मा जिस के ज़रिए तू

تُهْلِكْنِيْ غَمًّا حَتّٰى تَسْتَجِيْبَ لِيْ وَتُعَرِّفَنِيْ الْاِجَابَةَ فِيْ دُعَائِيْ وَ اَذِقْنِيْ

मुर्दा शहरों को ज़िंदा करता है और मुझे किसी ग़म से हलाक न कर देना यहाँ तक के तू मेरी दुआ क़ुबूल कर ले

طَعْمَ الْعَافِيَةِ اِلٰى مُنْتَهٰى اَجَلِيْ وَلَا تُشْمِتْ بِيْ عَدُوِّيْ وَ لَا تُسَلِّطْهُ

और मुझे उस क़ुबूलियत को दिखला दे। मुझे तमाम ज़िंदगी आा॰फियत का ज़ाएक़ा अता फ़र्माना और दुश्मनों

عَلَيَّ وَ لَا تُمَكِّنْهُ مِنْ عُنُقِيْ اَللّٰهُمَّ اِنْ وَضَعْتَنِيْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَرْفَعُنِيْ

को तानें देने का माक़ा न देना, न उन्हें मेरी गर्दन पर मुसल्लत करना। मेरे ख़ुदा अगर तूने मुझे गिरा दिया तो

وَ اِنْ رَفَعْتَنِيْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَضَعُنِيْ وَ اِنْ اَهْلَكْتَنِيْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ

उठाने वाला कोई नहीं है और अगर तूने मुझे बुलन्द कर दिया तो कोई मुझे गिरा नहीं सकता है। अगर तूने

يَعْرِضُ لَكَ فِيْ عَبْدِكَ اَوْ يَسْاَلُكَ عَنْ اَمْرِهٖ وَ قَدْ عَلِمْتُ اَنَّهٗ لَيْسَ

हलाक कर दिया तो कौन है जो तुझसे मेरे बारे में सिफ़ारिश करे या मेरे बारे में सवाल करे। मैं जानता हूँ के तेरे

فِي حُكْمِكَ ظُلْمٌ وَ لَا فِيْ نَقِمَتِكَ عَجَلَةٌ وَ اِنَّمَا يَعْجَلُ مَنْ يَخَافُ

फ़ैसले में कोई ज़ुल्म नहीं होता है और तेरे अज़ाब में जलदी नहीं होती है के जलदी वो करता है जिसे क़बज़े से

الْفَوْتَ وَ اِنَّمَا يَحْتَاجُ اِلَى الظُّلْمِ الضَّعِيْفُ وَ قَدْ تَعَالَيْتَ يَا اِلٰهِيْ

निकल जाने का ख़तरा होता है और ज़ुल्म वो करता है जो ख़ुद कमज़ोर होता है। तेरी ज़ात उन बातों से बहुत

عَنْ ذٰلِكَ عُلُوًّا كَبِيْرًا اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ فَاَعِذْنِيْ وَ اَسْتَجِيْرُ بِكَ

ज़्यादा बुलन्द व बाला है। ख़ुदाया मैं तेरी पनाह चाहता हूँ मुझे पनाह दे दे। मैं अमन का तलबगार हूँ मुझे अमन दे

فَاَجِرْنِيْ وَ اَسْتَرْزِقُكَ فَارْزُقْنِيْ وَ اَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ فَاكْفِنِيْ وَ

दे रोज़ी चाहता हूँ मुझे रोज़ी अता फ़र्मा। मैं तुझ पर भरोससा करता हूँ तू मेरे लिए काफ़ी हो जा मैं दुश्मन के

اَسْتَنْصِرُكَ عَلٰى عَدُوِّيْ فَانْصُرْنِيْ وَ اَسْتَعِيْنُ بِكَ فَاَعِنِّيْ وَ

मुक़ाबले में तुझ से मदद चाहता हूँ लेहाज़ा मेरी मदद फ़र्मा। मैं इनायत का तलबगार हूँ लेहाज़ा इनायत फ़र्मा। मैं

اَسْتَغْفِرُكَ يَا اِلٰهِيْ فَاغْفِرْ لِيْ آمِيْنَ آمِيْنَ آمِيْنَ.

तुझ से इस्तेग़फ़ार करता हूँ लेहाज़ा मुझे माफ़ कर दे। आमीन आमीन आमीन।

सातवें: दुआ-ए-कुमैल की तिलावत करे जिसका तज़केरा अगले अध्याय में किया जाएगा।

आठवें: दुआ अल्लाहुम्म या शाहेदा कुल्ले नजवा पढ़े जो शबे जुमा में पढ़ी जाती है और जिसका ज़िक्र सफा नं. ९२३ पर है।

???ऐ अल्ला जो हर छुपी बातों का गवाह है...

नवें: दस बार इस दुआ को पढ़े

يَا دَآئِمَ الْفَضْلِ عَلَى الْبَرِيَّةِ يَابَاسِطَ الْيَدَيْنِ بِالْعَطِيَّةِ يَا صَاحِبَ

ऐ मख़लूक़ात पर हमेशाँ फ़ज़्ल करने वाले और दोनो हाथ से अता करने वाले, ऐ अज़ीम तरीन अताया के

الْمَوَاهِبِ السَّنِيَّةِ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اٰلِهٖ خَيْرِ الْوَرٰى سَجِيَّةً وَ اغْفِرْ

मालिक, मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़रमा, जो अपने किरदार मे सबसे बरतर हैं। और ऐ

لَنَا يَاذَا الْعُلٰى فِيْ هٰذِهِ الْعَشِيَّةِ.

ख़ुदा बुलंद व बरतर आज की शाम हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दे।

यह दुआ भी ईदे फ़ित्र की शब में पढ़ने के लिए कहा गया है।
दसवें: अनार खाए के इमाम सादिक़ (अ) हर जुमा की शब में अनार खाते थे। अगर सोते समय खाए तो ज़्यादा बेहतर होगा जैसा कि रिवायत में है कि जो भी सोते समय अनार खाए वह सुबह तक मामून और सलामत रहेगा। बेहतर यह है कि जब अनार खाए तो उसके नीचे एक रूमाल बिछा ले और हर दाने को खाए और किसी को अपना शरीक न बनाए।
ग्यारहवें: शेख़ जाफ़र कुम्मी इबने अहमद कुम्मी ने किताबे उरूस में इमामे सादिक़ (अ) से नक़्ल किया है के जो शख़्स भी नाफ़ेला नमाज़ सुबह की दो रकत के दरमियान सौ बार ये कहे तो परवरदिगारे आलम उसके लिए जन्नत में मकान बना देता है:
???मेरे रब की ज़ात पाकोपाकीज़ा है उसकी हम्द के साथ
???मैं ख़ुदा से माफी मांदता हूँ व उसकी तरफ़ तौबा के लिए मुड़ता हूँ।
बारहवें: शेख़ तूसी और सय्यद और दीगर हज़रात ने भी इस दुआ का ज़िक्र किया है और फ़रमाया है कि इस दुआ को शबे जुमा की सहेर के समय पढ़ा जाए:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّآلِهٖ، وَهَبْ لِيَ الْغَدَاةَ رِضَاكَ، وَاَسْكِنْ

ख़ुदाया मुहम्मद (स) व आले मुहम्मद (स) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और आज की सुबह मुझे अपनी रिज़ा अता

قَلْبِيْ خَوْفَكَ وَاقْطَعْهُ عَمَّنْ سِوَاكَ، حَتّٰى لَا اَرْجُوَ وَلَا اَخَافَ اِلَّا

फ़र्मा दे, मेरे दिल में अपना ख़ौफ पैदा कर दे और उसे हर एक तरफ़ से क़ता करदे ताके मैं तेरे अलावा न किसी

اِيَّاكَ، اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّآلِهٖ، وَهَبْ لِيْ ثَبَاتَ الْيَقِيْنِ

का उम्मीदवार बनूँ और न किसी से ख़ौफ़ज़दा हूँ। खुदाया मुहम्मद (स) व आले मुहम्मद (स) पर रहमत नाज़ल

وَمَحْضَ الْاِخْلَاصِ، وَشَرَفَ التَّوْحِيْدِ وَ دَوَامَ الْاِسْتِقَامَةِ، وَ

फ़र्मा और मुझे यक़ीने कामिल और इख़लासे कामिल अता फ़र्मा। तौहीद का शरफ़ हमेशाकी इस्तेक़ामात, सब्र

مَعْدِنَ الصَّبْرِ وَ الرِّضَا بِالْقَضَاءِ وَ الْقَدَرِ، يَا قَاضِيَ حَوَائِجِ

का मादन, क़ज़ा पर राज़ी रहने की तौफीक़ अता फ़र्मा। ऐ सारी हाजतों के पूरा करने वाले और ख़ामोश लोगों

السَّائِلِيْنَ، يَا مَنْ يَعْلَمُ مَا فِيْ ضَمِيْرِ الصَّامِتِيْنَ، صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

के हाल ए दिल के जानने वाले मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और हमारी दुआ को क़ुबूल

وَ آلِهٖ، وَ اسْتَجِبْ دُعَائِيْ وَ اغْفِرْ ذَنْبِيْ وَ اَوْسِعْ رِزْقِيْ، وَ اقْضِ

फ़र्माले हमारे गुनाहों को माफ़ कर दे हमारे रिज़्क़ मे वुसअत अता फ़र्मा और हमारी ज़ात के बारे में और

حَوَائِجِيْ فِيْ نَفْسِيْ وَ اِخْوَانِيْ فِيْ دِيْنِيْ وَ اَهْلِيْ، اِلٰهِيْ طُمُوْحُ الْاٰمَالِ

बरादरान ए दीनी अ व अयाल के बारे में हाजतों को क़ुबूल फ़र्माले। ख़ुदाया तमाम उम्मीदें तेरे अलावा हर

قَدْ خَابَتْ اِلَّا لَدَيْكَ، وَ مَعَا كِفُ الْهِمَمِ قَدْ تَعَطَّلَتْ اِلَّا عَلَيْكَ،

एक के सामने नाकाम हो जाती हैं और तमाम हिम्मतें तेरी बार्गाह के अलावा मुअत्तल और बेकार हो जाती हैं

وَ مَذَاهِبُ الْعُقُوْلِ قَدْ سَمَتْ اِلَّا اِلَيْكَ، فَاَنْتَ الرَّجَاءُ وَ اِلَيْكَ

अक़्ल के सारे रास्ते सिवाए तेरे बंद हो जाते हैं के तू ही उम्मीदों का मर्कज़ है और तू ही पनाहगाह है ऐ करीम

الْمُلْتَجَاُ، يَا اَكْرَمَ مَقْصُوْدٍ وَ اَجْوَدَ مَسْؤُوْلٍ، هَرَبْتُ اِلَيْكَ

तरीन मक़सूद और करीम तरीन मसऊल मैं तेरी बार्गाह में भाग कर आया हूँ के तू हर भाग कर आने वाले की

بِنَفْسِیْ يَا مَلْجَاَ الْهَارِبِيْنَ، بِاَثْقَالِ الذُّنُوْبِ اَحْمِلُهَا عَلٰی ظَهْرِیْ،

पनाहगाह है। अपने गुनाहों का बोझ अपनी पुश्त पर लाद कर लाया हूँ। मेरा कोई सिफ़ारिश करनेवाला नहीं

لَا اَجِدُ لِیْ اِلَيْكَ شَافِعًا سِوٰی مَعْرِفَتِیْ بِاَنَّكَ اَقْرَبُ مَنْ رَجَاهُ

है। सिवाए इस मारिफ़त के के तू सब से ज़्यादा क़रीब है जिस से तलबगार उम्मीदें वाबस्ता करते हैं या रग़बत

الطَّالِبُوْنَ، وَ اَمَّلَ مَا لَدَيْهِ الرَّاغِبُوْنَ، يَا مَنْ فَتَقَ الْعُقُوْلَ

रखने वाले इस का इशतियाक़ रखते है। ऐ वो पर्वर्दिगार जिस नें अक़्लों को मारिफ़त के ज़रिए कुशादा किया

بِمَعْرِفَتِهٖ، وَ اَطْلَقَ الْاَلْسُنَ بِحَمْدِهٖ، وَ جَعَلَ مَا امْتَنَّ بِهٖ عَلٰی

है और ज़बानों को अपनी हम्द से रवाँ किया है और जो कुछ भी अपने बंदों पर अहसान किया है। उस को

عِبَادِهٖ فِیْ كِفَاءٍ لِتَاْدِيَةِ حَقِّهٖ، صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّآلِهٖ وَ لَا تَجْعَلْ

अपने हक़ को अदा करने के लिए काफ़ी क़रार दिया है। मुहम्मद (स) व आले मुहम्मद (स) पर रहमत नाज़ल

لِلشَّيْطَانِ عَلٰى عَقْلِيْ سَبِيْلًا، وَلَا لِلْبَاطِلِ عَلٰى عَمَلِيْ دَلِيْلًا.

फ़र्मा और शैतान को हमारी अक़्ल पर रास्ता न देना और न बातिल का गुज़र हमारे आमाल पर होने पाए।

उसके बाद जब जुमे के दिन सुबह तुलू हो जाए तो यह दुआ पढ़े:

اَصْبَحْتُ فِيْ ذِمَّةِ اللهِ وَذِمَّةِ مَلَآئِكَتِهٖ وَذِمَمِ اَنْبِيَآئِهٖ وَرُسُلِهٖ

मैं पर्वर्दिगार उस के फ़रिश्तों और उस के अंबिया व मुर्सलीन और हज़रत मुहम्मद (स) व आले मुहम्मद

عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَذِمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَذِمَمِ الْاَوْصِيَآءِ

सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहा की ज़िम्मेदारी में सुबह कर रहा हूँ। मैं आले मुहम्मद (अलैहेमुस्स लामो)

مِنَ آلِ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ آمَنْتُ بِسِرِّ آلِ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِمُ

और उन के वाज़े अमूर, ज़ाहिर व बातिन सब पर ईमान रखता हूँ और इस बात की गवाही देता हूँ कि वो

السَّلَامُ وَعَلَانِيَتِهِمْ وَظَاهِرِهِمْ وَبَاطِنِهِمْ وَاَشْهَدُ اَنَّهُمْ فِيْ عِلْمِ

लोग इल्म ए पर्वर्दिगार और इताद ए इलाही में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो ॰अलैहे व आलेही व

اللهِ وَطَاعَتِهٖ كَمُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ.

आलेहा) के मानिंद हैं।

रिवायत में है के जो व्यक्ति भी जुमे के दिन तीन बार यह दुआ पढ़ेगा उसके गुनाहों को माफ़ कर दिया जाएगा। चाहे वह समुद्र के झाग से ज़्यादा क्यों न हो।

اَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَ اَتُوْبُ اِلَیْهِ.

मैं इस्तेग़फ़ार करता हूँ उस अल्लाह से जिस के अलावा कोई ख़ुदा नहीं है।

जुमे के दिन के आमाल

यह आमाल बहुत हैं लेकिन इस मक़ाम पर सिर्फ़ चंद आमाल का ज़िक्र किया जा रहा है।

एक: जुमा के दिन सुबह की नमाज़ में पहली रकत में सूरह जुमा और दूसरी रकत में सूरह तौहीद पढ़े।

दो: नमाज़े सुबह के बाद बग़ैर कोई गुफ़तगू किए यह दुआ पढ़े: ताके आईंदा जुमा तक के लिए उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा क़रार पाए।

اَللّٰهُمَّ مَا قُلْتُ فِیْ جُمُعَتِیْ هٰذِهٖ مِنْ قَوْلٍ اَوْ حَلَفْتُ فِیْهَا مِنْ حَلْفٍ اَوْ

ख़ुदाया मैं ने इस जुमा में जो बात कही है या जो भी क़सम खाई है या जो भी नज़र की है उन सब पर तेरी

نَذَرْتُ فِیْهَا مِنْ نَذْرٍ فَمَشِیَّتُكَ بَیْنَ یَدَیْ ذٰلِكَ كُلِّهٖ فَمَا شِئْتَ مِنْهُ

मशीयत हावी है। तू जो भी चाहे वो हो जाएगा और न चाहेगा तो वो अंजाम नहीं पा सकता है। ख़ुदाया मेरे

اَنْ یَّكُوْنَ كَانَ وَ مَا لَمْ تَشَاْ مِنْهُ لَمْ یَكُنْ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ وَ تَجَاوَزْ عَنِّیْ

गुनाहों को माफ़ कर दे। ख़ुदाया जिस पर तू सलवात भेजे उस पर मेरी सलवात है और जिस पर तेरी लानत

اَللّٰهُمَّ مَنْ صَلَّیْتَ عَلَیْهِ فَصَلَاتِیْ عَلَیْهِ وَ مَنْ لَعَنْتَ فَلَعْنَتِیْ عَلَیْهِ.

है उस पर मेरी भी लानत है।

कम से कम इस अमल को एक महीने में एक बार अंजाम दें।
रिवायत में है जो जुमा के दिन जो भी नमाज़े सुब्ह के बाद मुसल्ले पर बैठ कर तुलूए आफ़ताब तक ताक़ीबात में मशग़ूल रहेगा अल्लाह उसके लिए जन्नत में सत्तर दर्जे बुलंद करेगा।
शेख़ तूसी ने रिवायत की है के सुन्नत है के नमाज़े सुबह की ताक़ीबात में जुमा के दिन यह दुआ पढे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّی تَعَمَّدْتُ اِلَيْكَ بِحَاجَتِیْ وَ اَنْزَلْتُ اِلَيْكَ الْيَوْمَ فَقْرِیْ وَ

पर्वर्दिगार मैं तेरी बार्गाह का इरादा किया हूँ हाजतों के साथ और अपने फ़क्र व फ़ाके और अपनी मिस्कीनी

فَاقَتِیْ وَ مَسْكَنَتِیْ فَاَنَا لِمَغْفِرَتِكَ اَرْجٰی مِنِّیْ لِعَمَلِیْ وَ لَمَغْفِرَتُكَ وَ

से ख़ुद को तेरे सामने डाल दिया है। मैं अपने अमल से ज़्यादा तेरी मग़ा॰फिरत की उम्मीद रखता हूँ और

رَحْمَتُكَ اَوْسَعُ مِنْ ذُنُوْبِیْ فَتَوَلَّ قَضَآءَ كُلِّ حَاجَةٍ لِیْ بِقُدْرَتِكَ

जानता हूँ कि तेरी मग़ा॰फिरत और रहमत मेरे गुनाहों से ज़्यादा वसीतर है। ख़ुदाया अपनी क़ुद्रत ए कामिले

عَلَيْهَا وَ تَيْسِيْرِ ذٰلِكَ عَلَيْكَ وَ لِفَقْرِیْ اِلَيْكَ فَاِنِّیْ لَمْ اُصِبْ خَيْرًا

से मेरी तमाम हाजतों को पूरा करने की ज़िम्मेदारी ले ले। ये तेरे लिए बहुत आसान है और मैं इस का

قَطُّ اِلَّا مِنْكَ وَلَمْ يَصْرِفْ عَنِّیْ سُوْءًا قَطُّ اَحَدٌ سِوَاكَ وَلَسْتُ اَرْجُوْ

मोहताज हूँ। मुझे कोई ख़ैर तेरे अलावा कहीं से नहीं मिला है और न किसी शर को तेरे अलावा कोई दफ़ा

لِاٰخِرَتِیْ وَ دُنْيَایَ وَ لَا لِيَوْمِ فَقْرِیْ يَوْمَ يُفْرِدُنِی النَّاسُ فِیْ حُفْرَتِیْ

कर सकता है। अपने रोज़ फ़॰क्र व फ़ाके के लिए जब तमाम लोग क़ब्र के हवाले कर देंगे और तेरी बार्गाह

وَافْضِ اِلَيْكَ بِذَنْبِيْ سِوَاكَ.

में आना होगा तेरे अलावा किसी से कोई उम्मीद नहीं रखता हूँ।

तीन: रिवायत में है कि जो व्यक्ति भी नमाज़े सुबह और नमाज़े ज़ोहर के बाद और दूसरे दिनों में भी यह सलवात पढ़ेगा वह मरने से पहले इमामे ज़माना (अ) से ज़रूर मुलाक़ात करेगा।
ऐ खुदा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत भेज
और जल्द उनको विजय दे।
और अगर सौ बार इस सलवात को पढ़े तो परवरदिगारे आलम उसकी तीस दुनियवी और तीस आख़ेरतकी हाजतों को पूरा फ़रमाएगा।
चार: नमाज़े सुबह के बाद सूरह रहमान पढ़े और फ़बे अय्ये आलाए रब्बेकोमा तोकज़्ज़ेबान के बाद कहे: ला बे शयईम मिन आलाएका रब्बे ओकज़्ज़ेब. यानी मैं परवरदिगार की किसी भी नेमत का इन्कार नहीं करता हूँ।
पाँच: शेख़ तूसी ने फ़रमाया है के जुमा के दिन नमाज़े सुबह के बाद मुस्तहब है के सौ बार सूरह तौहीद और सौ बार सलवात और सौ बार इस्तेग़फ़ार पढ़े। और उसके बाद सूरह निसा, सूरह हूद, सूरह कहफ़, सूरह साफ़्फ़ात, और सूरह रहमान की तिलावत करे।
छे: सूरह अहक़ाफ़ और सूरह मोमेनून की तिलावत करे। के इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ) से मनक़ूल है के जो शख़्स भी शबे जुमा या जुमा के दिन सूरह अहक़ाफ़ की तिलावत करेगा उसे किसी तरह का ख़ौफ़ नहीं हो सकता है। उसके अलावा आपने फ़रमाया के जो शख़्स जुमा के दिन पाबंदी के साथ सूरह मोमिनून पढ़ेगा परवरदिगार उसका अंजाम अच्छा करेगा और वो ख़ुद अंबिया और मुरसलीन की रिफ़ाक़त में होगा।
सात: सूरज निकलने से पहले दस बार सूरह काफ़ेरून की तिलावत करे। और अगर उसके बाद दुआ करेगा तो उसकी दुआ क़बूल होगी। रिवायत में है के इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ) जुमा के दिन आयतल कुर्सा कि तिलावत

फ़रमाया करते थे ज़ोहर तक। और जब नमाज़ों से फ़ारिग हो जाते थे तो सूरह क़द्र की तिलावत शुरू कर देते थे।
याद रहे के जुमा के दिन आयतल कुर्सा की तिलावत बेहतरीन फ़ज़ाएल की हामिल है।
अल्लामा मजलिसी की रिवायत के मुताबिक़ उनकी शक्ल ये होगी:
आठ: जुमा के दिन ग़ुस्ल करे के यह ग़ुस्ल सुन्नते मोवक्केदा है। रिवायत में है रसूले अक्रम (स) ने अमीरूल मोमिनीन (अ) से फ़रमाया के: या अली जुमा के दिन अपना रोज़ का खाना बेच कर पानी ख़रीदना पड़े तो भी इंसान को भूका रहना चाहिए। के इससे बेहतर कोई सुन्नत नहीं है।
इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ) से नक़्ल किया गया है के जो व्यक्ति भी जुमा के दिन ग़ुस्ल करे और यह दुआ पढे।

اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ

मै गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही वह एक है उसका कोई शरीक नही और मै गवाही

وَرَسُوْلُهٗ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْنِى مِنَ التَّوَّابِيْنَ

देता हूँ के मोहम्मद उसके बंदे व रसूल हैं। ख़ुदाया मुहम्मद (स) व आले मुहम्मद (स) पर रहमत नाज़ल

وَ اجْعَلْنِىْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ.

फ़र्मा। और मुझको तौबा करनेवालों मे से बना दे और पाक लोगों मे से बना दे।

ऐसा व्यक्ति गुनाहों से अगले जुमा तक पाक-ओ-पाकीज़ा रहेगा। और उसे एक मानवी तहारत हासिल होगी।
एहतियात यह है के अगर मुम्किन हो तो ग़ुस्ले जुमा को तर्क न करे और

उसका समय तुलूए सूरज से ज़वाले सूरज है और जिस क़दर भी ज़वाल से नज़दीक हो बेहतर है।
नौ: अपने सर को ख़तमी से धोए के इस तरह इंसान दीवानगी और कोढ़ से महफ़ूज़ रहता है।
दस: नाख़ून और मूछें काटे के उसकी बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत है। उस से रोज़ी में इज़ाफ़ा होता है और इंसान आईंदा जुमा तक गुनाहों से पाक रहता है। और दीवानगी, कोढ़, वग़ैरा से महफ़ूज़ रहता है। इस समय यह भी कहना बेहतर है:
अल्लाह के नाम से।
और अल्लाह (के हुक्म) से
और मुहम्मद (स) व आले मुहम्मद (स) की सुन्नत पर।
नाख़ून काटते समय बाएं हाथ की छोटी उंगली से शुरू करे और दाहिने हाथ की छोटी उंगली पर ख़त्म करे। इसी तरह पैर के नाख़ून भी काटे और फिर नाख़ूनों को दफ़्न कर दे।
ग्यारह : जुमे के दिन इतर लगाना और अपना बेहतरीन लिबास पहन्ना मुसतहब है।
बारह: जुमा के दिन सदका देना दूसरे दिनों के सदके से हज़ार गुना बेहतर है।
तेरह: अपने परिवार के लिए अच्छी चीॅजें मेवा और गोश्त फ़राहम करे। के जुमा की आमद से ख़ुशहाल हो जाए।
चौदह: नाश्ते के समय अनार ख़ाए और कासनी के सात पत्ते ज़वाल से पहले खा ले। इमामे मूसा बिन जाफ़र से नक़्ल किया गया है के जो व्यक्ति नाश्ते के समय अनार खाएगा उसका दिल चालीस दिन तक नूरानी रहेगा। और अगर दो अनार खाएगा तो अस्सी दिन तक, और अगर तीन अनार खाएगा तो १२० दिन तक शैतान के वसवसे से महफ़ूज़ रहेगा। और जो वसवसे शैतानी से महफ़ूज़ हो जाए वह फिर गुनाह नहीं कर सकता। और जो गुनाह नहीं करेगा वह दाख़ले बेहिश्त हो जाएगा। शेख़ ने मिस्बाह में फ़रमाया है के शबे जुमा और जुमा के दिन अनार खाए की बेपनाह

फ़ज़ीलत है।

पंद्रह: अपने को दुनिया के कामों से अलग रखे और मसाएले दीन के सीखने में मशग़ूल हो जाए। जुमे के दिन सैरो सेहात बागों में तफ़रीह और ऐसे पस्त लोगों के साथ नशिस्त में बरबाद न करे जिनका काम सिवाए मसख़रापन और लोगों की ऐबजुई और फ़ुज़ूल बातों के कुछ न हो। क़हक़हा लगाना, शेर पढ़ना, मोहमल बातों में मशग़ूल होना इतने मफ़ासिद रखता है जिसका तज़केरा भी नहीं किया जा सकता है। इमामे सादिक़ (अ) ने फ़रमाया के हैफ़ है उस मुसलमान पर जो हफ़ते में जुमे के दिन को अपने दीन के मसाएल के सीख़ने में सर्फ़ न करे। और अपने व॰क्त को दीन के लिए ख़ाली न रख सके। रसूले अक्रम (स) से मनक़ूल है के जब देखो के जुमे के दिन कोई बूढ़ा इंसान तारीख़े जाहिलीयत और कुफ्र को लोगों के लिए बयान कर रहा है तो समझो के ऐसा आदमी संगसार कर दिए जाने के क़ाबिल है।

सोलह: हज़ार बार सलवात पढ़े के इमाम मोहम्मद बाक़र (अ) ने फ़रमाया है के जुमे का दिन मेरे नज़दीक मोहम्मद और आले मोहम्मद (अ) पर सलवात से ज़्यादा कोई अमल महबूब नहीं है। अगर हज़ार बार न पढ़ सके तो कम से कम सौ बार ज़रूर पढ़े। के क़यामत के दिन उसका चेहरा नूरानी होगा। रिवायत में है जो भी व्यक्ति जुमे के दिन सौ बार सलवात पढ़ेगा और सौ बार सूरह तौहीद पढ़ेगा वह यकीनन बख्श दिया जाएगा।

मै अल्लाह तआला से मग़फिरत चाहता हूँ (जो मेरा) रब है, और उसी से तौबा करता हूँ।

रिवायत में यहां तक वारिद हुआ है के ज़ोहर और अस्र जुमा के दिन के दरमियान सलवात पढ़ना सत्तर हज का सवाब रखता है।

सतरह: रसूले अक्रम (स) और आइम्मे ताहेरीन (अ) की ज़ियारत पढ़े जिसका तज़केरह ज़ियारत के अधयाय में किया जाएगा।

अठ्ठारह: मरहूमीन की ज़ियारत और विशेष रूप से माता पिता की ज़ियारत के लिए जाए। के उसमें बेहद फ़ज़ीलत है। इमाम बाक़र (अ) से मनकूल है के जुमा के दिन अपने मरनेवालों की ज़ियारत करो के उन्हें मालूम होता है

के कौन उनकी ज़ियारत के लिए आया और वो इस प्रकार ख़ुशहाल हो जाते हैं।
उन्नीस: दुआ नुदबा की तिलावत करे के यह चारों ईदों के आमाल में शामिल है और उसका ज़िक्र अपने मक़ाम पर किया जाएगा।
जुमे के दिन की नमा॰जें
बीस: याद रखो के जुमा के दिन के लिए नाफ़ेला के अलावा बीस रकत और है जिसकी कै॰फियत बिनाबरे मशहूर यह है के छे रकत तुलूए सूरज के थोड़े बाद पढ़े, छे रकत नाश्ते के समय, और छे रकत नज़दीक ज़वाल और दो रकत बादे ज़वाल नमाज़े जुमा से पहले। या यह के शुरू की छे रकत नमाज़े जुमा या ज़ोहर के बाद पढ़े जैसा ि़फ़॰क्ह की किताबों में नक़्ल किया गया है। उसके अलावा भी बहुत सी नमाज़े जुमा के साथ मख़सूस नहीं हैं लेकिन जुमा के दिन उनका अदा करना बहर हाल ज़्यादा अफ़ज़ल है।
जिनमें से सबसे पहली नमाज़े कामेला है जिसे जनाबे शेख़े तूसी, सय्यद, शहीद और अल्लामा हिल्ली वगैरह ने मोतबर असनाद से इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ) से नक़्ल किया है। के अपने आबाओ अजदाद के हवाले से रसूले अक्रम (स) का यह इरशाद नक़्ल किया है के जो व्यक्ति जुमा के दिन ज़ोहर से पहले चार रकत नमाज़ अदा करे और हर रकत में सूरह हम्द को दस बार और चारां कुल और Dायतल कुर्सा को दस बार पढ़े। सूरह क़द्र और शहेदल्लाह को भी दस बार पढ़े और चार रकत पढने के बाद इस्तेग़फ़ार करे। और सौ बार इस प्रकार कहे:
मै अल्लाह तआला से माफ़ी मांगता हूँ।
और सौ बार कहे:
अल्लाह तआला पाक है।
और सारि तारा॰rफ अल्लाह तआला के लिए है।
और अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नही है।
और अल्लाह सब से बड़ा है।
और कोई ताक़त व कुव्वत नही सिवा अल्लाह के जो सबसे बुलंद व बड़ा

है।
और सौ बार यह दुआ पढे:
परवरदिगार उससे तमाम अहले ज़मीनो आसमान, शयातीन और हुक्कामे ज़ालिम के शर को दूर कर देगा और उसके अलावा और भी फ़æजाएल इस नमाज़ के नक़्ल किए गाए हैं।
दूसरी नमाज़
नमाज़े हारिस हमदानी जिसे हारिस ने अमीरूल मोमिनीन (अ) से नक़्ल किया है के अगर मुम्किन हो तो जुमा के दिन दस रकत नमाज़ पढ़ो। रूकू और सजदों को बेहतरीन तरीक़े से अंजाम दो हर दो रकत के बाद सुब्हानल्लाह व बेहम्देह कहो के इस नमाज़ की बेहिसाब फ़ज़ीलत है।
अल्लाह तआला पाक है और सारी तारा॰rफ उसी की है।
तीसरी नमाज़
वह नमाज़ जिसे मोतबर सनद के साथ इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ) से नक़्ल किया गया है के जो व्यक्ति भी सूरह ईब्राहीम और सूरह हिज्रो को जुमा के दिन दो रकतों में अलग अलग पढ़े वह ज़िन्दगी में परेशान, दीवाना और बला में मुब्तेला नहीं हो सकता।

नमाज़ हज़रत रसूले अकरम (स)

इन नमाज़ों के अलावा नमाज़े हज़रत रसूले ख़ूदा (स) है जिसे मोतबर सनदों के साथ सय्यद इब्ने ताऊस ने इमाम रज़ा (अ) से नक़्ल किया है। आपने फ़रमाया नमाज़े रसूले अक्रम (स) से क्यों ग़ा॰फिल हो? शायद वह नमाज़े जाफ़र तय्यार से अलग कोई नमाज़ हो। रावी ने कहा हुज़ूर वह भी नमाज़ ताला॰rफ फ़रमा दीजिए।
फ़रमाया के दो रकत नमाज़ इस तरह अदा करो के हर रकत में एक बार सूरह हम्द और पंद्रह बार सूरह क़द्र पढ़ो। उसके बाद रूकू में और रूके से सर उठाने के बाद और पहले सजदे में और दोनो सजदे के दरमियान और दूसरे सजदे में और दूसरे सजदे से सर उठने के बाद पंद्रह पंद्रह बार सूरह क़द्र पढ़ो। उसके बाद तशहहुद और सलाम पढ़कर नमाज़ तमाम करो।

परवरदिगार तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा और तमाम हाजतों को पूरा कर देगा। उसके बाद यह दुआ पढ़ो:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّنَا وَ رَبُّ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ لاَ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اِلٰهًا

अल्लाह के अलावा कोई ख़ुदा नहीं है। वो ही हमारा और हमारे बुज़ुर्गों का पर्वर्दिगार है। उस के अलावा

وَاحِدًا وَ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ لاَ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ لاَ نَعْبُدُ اِلَّا اِيَّاهُ

कोई ख़ुदा नहीं है वो ख़ुदा यकता है और हम सब उस के इताअत गुज़ार हैं। उस के अलावा कोई ख़ुदा

مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَ لَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ لاَ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ

नहीं है। वो एक है, अकेला है, यकता है। उसने अपने वादे को पूरा किया है, अपने बंदों की मदद की है,

وَحْدَهٗ وَحْدَهٗ اَنْجَزَ وَعْدَهٗ وَ نَصَرَ عَبْدَهٗ وَ اَعَزَّ جُنْدَهٗ وَ هَزَمَ

अपने लश्कर को इ॰ज्ज़त दी है और तमाम ग्रोहे कु॰फ्र को हज़ीमत दी है। उस ही के लिए मुल्क है और

الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ فَلَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ

उस ही के लिए हम्द है और वो हर शै पर क़ादिर है। ख़ुदाया तू आस्मान व ज़मीन और इन के दर्मियान हर

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَنْ فِيْهِنَّ فَلَكَ الْحَمْدُ وَ

मंज़ल का नूर है। तू ही आस्मान व ज़मीन और उन के माबैन का क़ायम करने वाला है। तेरे ही लिए हम्द

اَنْتَ قَيَّامُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَنْ فِيْهِنَّ فَلَكَ الْحَمْدُ وَ اَنْتَ

है और तू ही हक़ है और तेरा वादा बर्हक़ और तेरा कलाम हक़ है। तेरे वादे की वफ़ा हक़ है। जन्नत व नार

الْحَقُّ وَ وَعْدُكَ الْحَقُّ وَ قَوْلُكَ حَقٌّ وَ اِنْجَازُكَ حَقٌّ وَ الْجَنَّةُ حَقٌّ وَ

सब हक़ है। ख़ुदाया हम तेरे इताअत गुज़ार हैं। तुझ पर ईमान लाए हैं। तुझ ही पर भरोसा किया और तेरे ही

النَّارُ حَقٌّ اَللّٰهُمَّ لَكَ اَسْلَمْتُ وَ بِكَ اٰمَنْتُ وَ عَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَ

ज़रिए लोगों से मुक़ाबला किया है। तेरी ही बार्गाह में अपने फ़ैसले को हवाले कर दिया है। ऐ ख़ुदा, ऐ

بِكَ خَاصَمْتُ وَ اِلَيْكَ حَاكَمْتُ يَا رَبِّ يَا رَبِّ اغْفِرْ لِيْ مَا قَدَّمْتُ

मालिक, ऐ पर्वर्दिगार हमारे तमाम गुज़शिता और आइनदा गुनाहों को माफ़ कर दे चाहे वो अयाँ या ख़फी

وَ اَخَّرْتُ وَ اَسْرَرْتُ وَ اَعْلَنْتُ اَنْتَ اِلٰهِيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَنْتَ صَلِّ

तरीक़े पर। तू मेरा ख़ुदा है, तेरे अलावा कोई ख़ुदा नहीं है। मुहम्मद (स) व आले मुहम्मद (स) पर रहमत

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اغْفِرْ لِيْ وَ ارْحَمْنِيْ وَ تُبْ عَلَيَّ اِنَّكَ اَنْتَ

नाज़ल फ़र्मा और मुझे माफ़ कर दे व मेरी तौबा को क़ुबूल करले के तू तौबा क़ुबूल करने वाला है और

التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ.

मेहरबान ख़ुदा है।

???
???
???

नमाज़े हज़रते अमीरूल मोमिनीन (अ)

शेख़ तूसी और सय्यद बिन ताऊस ने इमामे सादिक़ (अ) से नक़्ल किया है के आप ने फ़रमाया तुम में से जो भी चार रकत नमाज़े अमीरूल मोमिनीन (अ) बजा लाएगा वह गुनाहों से इस तरह पाक हो जाएगा जैसे अबी अभी पैदा हुआ है। उसकी तमाम हाजतें पूरी कर दी जाएगी। इस नमाज़ मे हर रकत में सूरह हम्द के बाद पचास बार सूरह तौहीद पढ़ा जाएगा। और नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ी जाएगी जो इमाम की तसबीह में शुमार होती है:

سُبْحَانَ مَنْ لاَّ تَبِيْدُ مَعَالِمُهٗ سُبْحَانَ مَنْ لاَ تَنْقُصُ خَزَآئِنُهٗ سُبْحَانَ

पाक है वो ख़ुदा जिसके आसार मिटते वाले नहीं। पाक है वो जिसके ख़ज़ाने कम होने वाले नहीं। पाक है

مَنْ لاَّ اضْمِحْلاَلَ لِفَخْرِهٖ سُبْحَانَ مَنْ لاَّ يَنْفَدُ مَا عِنْدَهٗ سُبْحَانَ مَنْ لاَّ

वो ख़ुदा जिस के मख़ज़न में कमी आने वाली नहीं। पाक है वो ख़ुदा जिस की दौलत ख़तम होने वाली

انْقِطَاعَ لِمُدَّتِهٖ سُبْحَانَ مَنْ لاَّ يُشَارِكُ اَحَداً فِيْ اَمْرِهٖ سُبْحَانَ مَنْ لاَّ

नहीं। और न उसकी मुद्दत तमाम होनेवाली है। पाक है वो ख़ुदा जिसके अम्र में इसका कोई शरीक नहीं

उसके बाद अपनी हाजतें तलब करे और ा॰फिर यह कहे: اِلٰهَ غَيْرُهٗ.

और उसके अलावा कोई ख़ुदा नहीं

يَا مَنْ عَفَا عَنِ السَّيِّئَاتِ وَ لَمْ يُجَازِ بِهَا اِرْحَمْ عَبْدَكَ يَا اَللّٰهُ

ऐ वो पर्वर्दिगार जिस ने गुनाहों को माफ़ कर दिया है और उन का बदला नहीं लिया है अपने बंदों पर रहम

نَفْسِیْ نَفْسِیْ اَنَا عَبْدُكَ يَا سَيِّدَاهُ اَنَا عَبْدُكَ بَيْنَ يَدَيْكَ يَا رَبَّاهُ

कर। ख़ुदाया ये मेरा न॰फ्स है ये मेरा न॰फ्स है मैं तेरा बंदा हूँ। ऐ मेरे मालिक! मैं तेरा बंदा हूँ और तेरे सामने

اِلٰهِیْ بِكَيْنُوْنَتِكَ يَا اَمَلاَهُ يَا رَحْمَانَاهُ يَا غِيَاثَاهُ عَبْدُكَ لاَ حِيْلَةَ

खड़ा हूँ, ऐ मेरे पर्वर्दिगार! ऐ मेरे ख़ुदा! ऐ मेरी उम्मीद! ऐ मुझ पर रहम करने वाले ऐ मेरे फ़र्याद रस! ये तेरा

لَهٗ يَا مُنْتَهٰى رَغْبَتَاهُ يَا مُجْرِیَ الدَّمِ فِیْ عُرُوْقِیْ يَا سَيِّدَاهُ يَا مَالِكَاهُ

बंदा है ये तेरा बंदा है जिस के पास कोई चारा व तदबीर नहीं है। तू उस की रग़बतों की आख़री मंज़ल है

اَيَا هُوَ اَيَا هُوَ يَارَبَّاهُ عَبْدُكَ عَبْدُكَ لاَ حِيْلَةَ لِیْ وَ لاَ غِنٰی بِیْ عَنْ

और तू ही उस की रगों में ख़ून दौड़ाने वाला है। ऐ मेरे मालिक, सरदार, ऐ मेरे मालिक, ऐ वो ख़ुदा जो वो

نَفْسِیْ وَ لاَ اَسْتَطِيْعُ لَهَا ضَرًّا وَ لاَ نَفْعاً اَجِدُ مَنْ اُصَانِعُهٗ

ही है जो है और मेरा पालने वाला है, तेरा बंदा तेरा बंदा जिस के पास कोई चारा व तदबीर नहीं है और उस

تَقَطَّعَتْ اَسْبَابُ الْخَدَايِعِ عَنِّیْ وَ اضْمَحَلَّ كُلُّ مَظْنُوْنٍ عَنِّیْ

के पास अपना कुछ नहीं न अपना नफ़ा व नु॰क्सान की ताक़त रखता है और मेरे पास कोई नहीं है जिस से

اَفْرَدَنِیْ الدَّهْرُ اِلَيْكَ فَقُمْتُ بَيْنَ يَدَيْكَ هٰذَا الْمَقَامَ يَا اِلٰهِیْ

उम्मीद करूँ। सारे धोके देने वाले वसाएल क़ता हो गए हैं और तमाम मोहमिल ख़यालात ख़त्म हो गए हैं

بِعِلْمِكَ كَانَ هٰذَا كُلُّهٗ فَكَيْفَ اَنْتَ صَانِعٌ بِیْ وَ لَيْتَ شِعْرِیْ

ज़माने ने मुझ को अकेला छोड़ कर तेरे हवाले कर दिया है। अब मै तेरे सामने इस मंज़ल पर ख़ड़ा हूँ।

كَيْفَ تَقُوْلُ لِدُعَآئِيْ اَتَقُوْلُ نَعَمْ اَمْ تَقُوْلُ لَا فَاِنْ قُلْتَ لَا فَيَا

ख़ुदाय जो कुछ हुआ है वो सब तेरे इल्म में है। अब देखना ये है कि तू मेरे साथ क्या बरताव करता है। काश

وَيْلِيْ يَا وَيْلِيْ يَا وَيْلِيْ يَا عَوْلِيْ يَا عَوْلِيْ يَا عَوْلِيْ يَا شِقْوَتِيْ يَا شِقْوَتِيْ يَا

मुझे मालूम हो जाता कि तू मेरी दुआ पर हाँ कहेगा या ना कहेगा। अगर नहीं कहेगा तो मेरे लिए वामुसीबता

شِقْوَتِيْ يَا ذُلِّيْ يَا ذُلِّيْ يَا ذُلِّيْ اِلَى مَنْ وَ مِمَّنْ اَوْ عِنْدَ مَنْ اَوْ كَيْفَ اَوْ

है। मैं फ़र्याद करूँगा। वाए बरहाले मा। मैं नाला ओ ज़ारी करूँगा। ये मेरी बद्बख़्ती है ये मेरी शिक़ावत है, ये

مَا ذَا اَوْ اِلٰى اَيِّ شَيْءٍ اَلْجَاُ مَنْ اَرْجُوْ وَ مَنْ يَجُوْدُ عَلَيَّ بِفَضْلِهٖ حِيْنَ

मेरी नालएक़ी है, ये मेरी ज़िल्लत है, ये मेरी बेकसी है। मैं कहाँ जाऊँ, किस से कहूँ, किस के पास फ़र्याद

تَرْفُضُنِيْ يَا وَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ وَ اِنْ قُلْتَ نَعَمْ كَمَا هُوَ الظَّنُّ بِكَ وَ

करूँ और किस से और कहाँ पनाह तलाश करूँ, किस से उम्मीद करूँ, कौन मुझ पर अपना फ़ज़्ल करेगा।

الرَّجَآءُ لَكَ فَطُوْبٰى لِيْ اَنَا السَّعِيْدَ وَ اَنَا الْمَسْعُوْدُ فَطُوْبٰى لِيْ وَ اَنَا

अगर तू छोड़ देगा ऐ वसी मग़्फ़िरत वाले। और अगर तूने हाँ कह दिया जैसा के तेरे बारे में मेरा ख़याल है।

الْمَرْحُوْمُ يَا مُتَرَحِّمُ يَا مُتَرَئِّفُ يَا مُتَعَطِّفُ يَا مُتَجَبِّرُ يَا مُتَمَلِّكُ يَا

और यही तुझसे उम्मीद भी है। तो मेरे लिये ख़ुशी की बात है। मैं नेक बख़्त हूँ, मैं सईद हूँ, मेरे लिए तूबा

مُقْسِطُ لَا عَمَلَ لِيْ اَبْلُغُ بِهٖ نَجَاحَ حَاجَتِيْ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِيْ

है। मैं तेरी रहमत के क़ाबिल हूँ ऐ मेरे रहेम करने वाले। ऐ मेरे मेहेरबानी करने वाले। ऐ रहेम करने वाले। ऐ

جَعَلْتَهٗ فِیْ مَکْنُوْنِ غَیْبِكَ وَ اسْتَقَرَّ عِنْدَكَ فَلَا یَخْرُجُ مِنْكَ اِلٰی

बड़ी ताक़त वाले। ऐ इख़्तयार वाले। ऐ इन्साफ़ करने वाले। मेरे पास कोई अमल नहीं है के मै अपनी

شَیْءٍ سِوَاكَ اَسْئَلُكَ بِهٖ، وَبِكَ وَبِهٖ فَاِنَّهٗ اَجَلُّ وَ اَشْرَفُ اَسْمَآئِكَ

ज़रूरत को पूरा करवा सकूँ। तेरे उस नाम के वसीले से दुआ करता हूँ जिसे तूने अपने ग़ैब में छुपा रखा है

لَا شَیْءَ لِیْ غَیْرُ هٰذَا وَ لَا اَحَدَ اَعْوَدُ عَلَیَّ مِنْكَ یَا كَیْنُوْنُ یَا مُكَوِّنُ

और वो तेरे ही पास सुरिक्षत है। तुझसे निकल कर किसी और की तरफ़ नहीं जा सकता उसी नाम के वासते

یَا مَنْ عَرَّفَنِیْ نَفْسَهٗ یَا مَنْ اَمَرَنِیْ بِطَاعَتِهٖ یَا مَنْ نَهَانِیْ عَنْ

से और तेरी ज़ात के वासते से। वो नाम जो अजिल और अशरफ़ है। मेरे पास इसके अलावा कुछ नहीं है

مَعْصِیَّتِهٖ وَ یَا مَدْعُوُّ یَا مَسْئُوْلُ یَا مَطْلُوْبًا اِلَیْهِ رَفَضْتُ وَصِیَّتَكَ

और न तुझसे ज़्यादा कोई मेहेरबानी करने वाला है। ऐ कामिल हसती ऐ हसती देनेवाले ऐ वो ख़ुदा जिसने

الَّتِیْ اَوْصَیْتَنِیْ وَ لَمْ اُطِعْكَ وَ لَوْ اَطَعْتُكَ فِیْمَا اَمَرْتَنِیْ لَكَفَیْتَنِیْ

अपनी मारेफ़त दी और अपनी इताअत का हुकम दिया और अपनी मासियत से रोका ऐ वो ख़ुदा जिस से

مَا قُمْتُ اِلَیْكَ فِیْهِ وَ اَنَا مَعَ مَعْصِیَتِیْ لَكَ رَاجٍ فَلَا تَحُلْ بَیْنِیْ وَ

दुआ की जाए सवाल किया जाए माँग की जाए। मैने तेरी वसीयतों को छोड़ दिया जो तूने फ़रमाई थीं और

بَیْنَ مَا رَجَوْتُ یَا مُتَرَحِّمًا لِیْ اَعِذْنِیْ مِنْ بَیْنِ یَدَیَّ وَ مِنْ خَلْفِیْ وَ

तेरा कहना नहीं माना। वरना अगर तेरे हुकमों को मान लेता तो तामाम मामेलात के लिए काफ़ी हो जाता।

مِنْ فَوْقِیْ وَ مِنْ تَحْتِیْ وَ مِنْ کُلِّ جِهَاتِ الْاِحَاطَةِ بِیْ اَللّٰهُمَّ بِمُحَمَّدٍ

मगर मैं अपनी मासियत के बावजूद तुझसे उम्मीदवार हूँ। लेहाज़ा मेरे और मेरी उम्मीदों के दरमियान हाएल

سَیِّدِیْ وَ بِعَلِیٍّ وَلِیِّ وَ بِالْاَئِمَّةِ الرَّاشِدِیْنَ عَلَیْهِمُ السَّلَامُ اجْعَلْ

न हो जाना। ऐ मेहेरबानी करनेवाले मुझे सामने से पीछे से ऊपर से नीचे से और हर तरफ़से अपनी पनाह मे

عَلَیْنَا صَلَوَاتِكَ وَ رَافَتَكَ وَ رَحْمَتَكَ وَ اَوْسِعْ عَلَیْنَا مِنْ رِزْقِكَ

लेले। ख़ुदाया मेरे सरदार, हज़रत मुहम्मद (स) मेरे वली और तमाम हादी इमामों (अ) के वास्ते से मुझपर

وَ اقْضِ عَنَّا الدَّیْنَ وَ جَمِیْعَ حَوَآئِجِنَا یَا اَللّٰهُ یَا اَللّٰهُ یَا اَللّٰهُ اِنَّكَ عَلٰی

अपनी रहमत, राफ़त और मेहेरबानी क़रार देदे। मेरे रिज़्क़ को बढ़ा दे, मेरे कर्ज़ को अदा करदे। और मेरी

کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ.

ज़रूरियात पूरी करदे। या अल्लाहो या अल्लाहो या अल्लाहा, तू हर शै पर क़ादिर है।

हज़रत ने फ़रमाया के जो व्यक्ति भी इस नमाज़ को पढ़ेगा और इस दुआ को पढ़ेगा। जब नमाज़ से फ़ारिग होगा तो उसके और उसके ख़ुदा के दरमियान तमाम गुनाह ब॰ख्शे जा चुके होंगे।

इस चार रकत नमाज़ के बारे में शबो रोज़े जुमा बेशुमार हदीसों में फ़ज़ीलत वारिद हुई है। और अगर नमाज़ के बाद यह कहे तो रिवायत में है के उसके पहले के सब गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे। और ऐसा मालूम होगा के उसने बारह दफ़ा क़ुरान ख़त्म किया है। और परवरदिगार उसको क़यामत के दिन की भूख और प्यास से महफ़ूज़ कर देगा।

ख़ुदाया नबी ए अरबी (स) व उसकी आल (स) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा।

जनाबे ज़हरा (स) की नमाज़

रिवायत में है के जनाबे ज़हरा (स) दो रकती नमाज़ पढ़ती थीं जो उन्हें जिब्रईल (अ) ने तालीम की थी। पहली रकत में सूरह हम्द के बाद सूरह क़द्र सौ बार पढ़े। दूसरी रकत में सूरह हम्द के बाद सौ बार सूरह तौहीद है। नमाज़ के बाद आप यह दुआ पढ़ती थीं:

سُبْحَانَ ذِیْ الْعِزِّ الشَّامِخِ الْمُنِیْفِ سُبْحَانَ ذِیْ الْجَلاَلِ الْبَاذِخِ

पाक ओ पाकीज़ा है वो ख़ुदा जो बुलंद और अज़ीम इ॰ज़्ज़त का मालिक है। पाकीज़ा है वो ख़ुदा जो साहेबे

الْعَظِیْمِ سُبْحَانَ ذِی الْمُلْكِ الْفَاخِرِ الْقَدِیْمِ سُبْحَانَ مَنْ لَبِسَ

ज़लाल अज़ीम बुज़ुर्ग है। पाकीज़ा है वो ख़ुदा जो साहेबे मुल्के अज़ीम व क़दीम है। पाकीज़ा है वो ख़ुदा

الْبَهْجَةَ وَ الْجَمَالَ سُبْحَانَ مَنْ تَرَدّٰی بِالنُّوْرِ وَ الْوَقَارِ سُبْحَانَ مَنْ یَرٰی

जिसका लिबास रौनक़ जमाल और हुस्न है। पाकीज़ा है वो ख़ुदा जिसकी रिदा नूर और विक़ार है। पाकीज़ा

اَثَرَ النَّمْلِ فِی الصَّفَا سُبْحَانَ مَنْ یَرٰی وَقْعَ الطَّیْرِ فِیْ الْهَوَآءِ سُبْحَانَ

है वो ख़ुदा जो पत्थर पर चूटियों के पैरों के निशान देखलेता है। जो ि॰फ़ज़ा मे उड़ते हुए परिदों की

مَنْ هُوَ هٰكَذَا لاَ هٰكَذَا غَیْرُهٗ.

परवाज़। वो ख़ुदा वो है जिसके अलावा कोई ऐसा नही है।

सय्यद बिन ताऊस ने फ़रमाया है के दूसरी रिवायत में यह भी वारिद हुआ है के इस नमाज़ के बाद तसबीहे जनाबे फ़ातेमा पढ़े जो हर नमाज़ के बाद पढ़ी जाती है और उसके बाद मोहम्मद और आले मोहम्मद (अ) पर

सलवात पढ़े।
और शेख़ ने मिसबाहुल मुतहज्जिद में फ़रमाया है के नमाज़े जनाबे फ़ातेमा (स) दो रकत है। पहली रकत में हम्द के बाद सौ बार सूरह क़द्र और दूसरी रकत में हम्द के बाद सौ बार सूरह तौहीद है। नमाज़ के बाद तसबीह जनाबे फ़ातेमा और उसके बाद यह दुआ जिसका ज़िक्र किया गया है। बेहतर है के जो व्यक्ति नमाज़ पढ़े वह तसबीह से फ़ारिग़ होने के बाद अपने ज़ानूओं और कोहनियों को खोलकर ज़मीन से मिला ले और उसके बाद सजदे में निहायत ही ख़ुज़ू और ख़ुशू के साथ अपनी हाजतों को तलब करे। और सजदे ही में यह दुआ पढ़े:

يَا مَنْ لَيْسَ غَيْرَهٗ رَبٌّ يُدْعٰى يَا مَنْ لَيْسَ فَوْقَهٗ اِلٰهٌ يُخْشٰى يَا مَنْ

ऐ वो ख़ुदा जिसके अलावा कोई खुदा नही है के जिससे माँगा जाए, उससे बालातर कोई माबूद नही के

لَيْسَ دُوْنَهٗ مَلِكٌ يُتَّقٰى يَا مَنْ لَيْسَ لَهٗ وَزِيْرٌ يُؤْتٰى يَا مَنْ لَيْسَ لَهٗ

जिससे डरा जाए। उसके अलावा कोइ बादशाह नही के जिसकी नाराज़गी से बचा जाए। उसका कोइ वज़ीर

حَاجِبٌ يُرْشٰى يَا مَنْ لَيْسَ لَهٗ بَوَّابٌ يُغْشٰى يَا مَنْ لَا يَزْدَادُ عَلٰى كَثْرَةِ

नही जिसको वसीला बनाया जाए। उसका कोइ दरबान नही जिसे रिशवत दी जाए। उसका कोइ पहरेदार

السُّؤَالِ اِلَّا كَرَمًا وَ جُوْداً وَ عَلٰى كَثْرَةِ الذُّنُوْبِ اِلَّا عَفْوًا وَ صَفْحًا

नही जिसको वसीला बनाया जाए। ऐ वो खुदा ज़यादा माग़ने पर जयादा मेहेरबानी करता है और जयादा

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ افْعَلْ بِيْ.

गुनाहों पर माफ़ी से काम लेता है। मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत भेज और हमारी माँगें पूरी कर।

उसके बाद अपनी हाजत तलब करें।

जनाबे फ़ातेमा (स) की दूसरी नमाज़

शेख़ तुसी और सय्यद बिन ताऊस ने सफ़वान से रिवायत की है के मोहम्मद बिन हलबी जुमे के दिन इमामे सादिक़ (अ) की ख़िदमत में हाज़र हुए और गुज़ारिश की के मैं चाहता हूं के मुझे अमल तालीम फ़रमाएं जो बेहतरीन अमल हो आज के दिन के लिए। तो हज़रत (अ) ने फ़मराया मैं जनाबे रसूले अक्रम (स) की निगाहों में नमाज़े जनाबे हज़रत फ़ातेमा (स) से ज़्यादा अज़ीम नहीं समझा हूँ. और जो कुछ आपने उन्हें तालीम दी है उससे बेहतर कोई और अमल नहीं समझता हूँ। लेहाज़ा जो व्यक्ति भी जुमा के दिन बेहतरीन अमल करना चाहे उसे चाहिए के ग़ुस्ल करे और चार रकत नमाज़ दो सलाम के साथ अदा करे। पहली रकत में हम्द के बाद पचास बार सूरह तौहीद और दूसरी रकत में सूरह हम्द के बाद पचास बार सूरह आदेयात। तीसरी रकत में सूरह हम्द के बाद पचास बार सूरह ज़िलज़ाल और चौथी रकत में हम्द के बाद पचास बार सूरह नस्र पढ़े। जो नाज़ल होने वाला आख़री सूरह है। और फिर यह दुआ पढ़े:

اِلٰهِی وَسَیِّدِی مَنْ تَهَیَّاَ اَوْ تَعَبَّاَ اَوْ اَعَدَّ اَوِ اسْتَعَدَّ لِوِفَادَةٍ مَخْلُوقٍ رَجَاءَ

मेरे परवरदिगार मेरे मालिक अगर किसी ने आमाल की तय्यारी की है के किसी बंदे के

رِفْدِهٖ وَفَوَائِدِهٖ وَنَائِلِهٖ وَفَوَاضِلِهٖ وَجَوَائِزِهٖ فَاِلَیْكَ یَا اِلٰهِی كَانَتْ تَهْیِئَتِیْ

दरबार मे हाज़री की के उसके अताया, फ़ाएदे और इनाम हासिल कर सके तो मेरी सारी

وَتَعْبِئَتِیْ وَاِعْدَادِیْ وَاسْتِعْدَادِیْ رَجَاءَ فَوَائِدِكَ وَمَعْرُوفِكَ وَنَائِلِكَ

तय्यारी तेरी बारगाह के लिए है। तेरेही फ़ायदे और तेरीही नेकियों और तेरीही जाएज़े और

وَجَوَائِزِكَ فَلَا تُخَيِّبْنِي مِنْ ذٰلِكَ يَا مَنْ لَا تَخِيبُ عَلَيْهِ مَسْأَلَةُ السَّائِلِ وَ

इनाम से उम्मीद रखता हूँ और नाउम्मीद नही होता हूँ के तेरे अताया मे कमी नही होती है।

لَا تَنْقُصُهُ عَطِيَّةُ نَائِلٍ فَإِنِّي لَمْ آتِكَ بِعَمَلٍ صَالِحٍ قَدَّمْتُهُ وَلَا شَفَاعَةِ

अपने किसी पिछले अमल के सहारे या किसी मख़लूक़ के भरोसे तेरे पास नही आया हूँ।

مَخْلُوقٍ رَجَوْتُهُ أَتَقَرَّبُ إِلَيْكَ بِشَفَاعَتِهِ إِلَّا مُحَمَّدًا وَأَهْلَ بَيْتِهِ صَلَوَاتُكَ

बस मुहम्मद व आले मुहम्मद की सिफ़ारिश के ज़रिए तुझसे क़ुरबत चाहता हूँ। तेरी अज़ीम

عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ أَتَيْتُكَ أَرْجُو عَظِيمَ عَفْوِكَ الَّذِي عُدْتَ بِهِ عَلَى

माफ़ी का उम्मीदवार हूँ। जिससे तूने गुनहगारों को उस समाय माफ़ किया है जब वो अपने

الْخَطَّائِينَ عِنْدَ عُكُوفِهِمْ عَلَى الْمَحَارِمِ فَلَمْ يَمْنَعْكَ طُوْلُ عُكُوفِهِمْ

गुनाहों पर अडे हुए थे। मगर उनकी ये हरकत माने नही हुई है के तू माफ़ न करे। तू हमेशाँ

عَلَى الْمَحَارِمِ أَنْ جُدْتَ عَلَيْهِمْ بِالْمَغْفِرَةِ وَ أَنْتَ سَيِّدِي الْعَوَّادُ

नेमतें देनेवाला है और मैं हमेशाँ ग़लतियाँ करनेवाला हूँ। ख़दाया मुहम्मद और उन्की पाक

بِالنَّعْمَاءِ وَ أَنَا الْعَوَّادُ بِالْخَطَاءِ أَسْأَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَآلِهِ الطَّاهِرِينَ أَنْ

आल का वासता मेरे बड़े गुनाहों को माफ़ करदे के तेरी अज़ीम ज़ात के अलावा कोई माफ़

تَغْفِرَ لِي ذَنْبِيَ الْعَظِيمَ فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الْعَظِيمَ إِلَّا الْعَظِيمُ يَا عَظِيمُ يَا

नही कर सकता है। ऐ अज़ीम। ऐ अज़ीम। ऐ अज़ीम। ऐ अज़ीम। ऐ अज़ीम। ऐ अज़ीम। ऐ

عَظِيمُ يَا عَظِيمُ يَا عَظِيمُ يَا عَظِيمُ يَا عَظِيمُ يَا عَظِيمُ.

अज़ीम ख़ुदा।

सय्यद बिन ताऊस ने जमालुल उसबू में हर इमाम की तरफ़ से कोई न कोई नमाज़ और दुआ नक्ल की है। मुनासिब है के इस मक़ाम पर उसका ज़िक्र कर दिया जाए।

नमाज़े इमामे हसन (अ)

जुमा के दिन यह चार रकत नमाज़ है। नमाज़े अमीरूल मोमिनीन (अ) की तरह है। और उसके अलावा चार रकत नमाज़ और है। जिसमें हर रकत में सूरह हुम्द के बाद पच्चीस बार सूरह तौहीद है।
इमामे हसन (अ) की दुआ।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَتَقَرَّبُ اِلَيۡكَ بِجُوۡدِكَ وَ كَرَمِكَ وَ اَتَقَرَّبُ اِلَيۡكَ بِمُحَمَّدٍ عَبۡدِكَ

परवरदिगार मै तेरी मेहेरबानी के सहारे और हज़रत मुहम्मद जो तेरे बंदे और रसूल हैं और

وَ رَسُوۡلِكَ وَ اَتَقَرَّبُ اِلَيۡكَ بِمَلَآئِكَتِكَ الۡمُقَرَّبِيۡنَ وَ اَنۡبِيَآئِكَ وَ رُسُلِكَ اَنۡ

ख़ास मलाएका और अंबिया और मुरसलीन के वसीले से तेरी क़ुरबत चाहता हूँ ताके तू

تُصَلِّیَ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبۡدِكَ وَ رَسُوۡلِكَ وَ عَلٰۤی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَنۡ تُقِيۡلَنِیۡ عَثۡرَتِیۡ تَسۡتُرَ

मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़िल करे और मेरे गुनाहों पर परदा डालदे और

عَلَیَّ ذُنُوۡبِیۡ وَ تَغۡفِرَ هَالِیۡ وَ تَقۡضِیَ لِیۡ حَوَآئِجِیۡ وَ لَاۤ تُعَذِّبۡنِیۡ بِقَبِيۡحِ كَانَ مِنِّیۡ

उन्हें माफ़ करदे और हाजतों को पूरा करदे। और मेरे ख़राब आमाल पर अज़ाब न करे।

فَاِنَّ عَفْوَكَ وَ جُوْدَكَ يَسَعُنِیْ اِنَّكَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ.

इस लिए के तेरा करम मेरी सहाएता कर सकता है और तू हर चा॰rज पर क़ादिर है।

जुमे के दिन इमाम हुसैन (अ) की नमाज।
यह नमाज़ चार रकत है जिसकी हर रकत में सूरह हम्द पचास बार और सुरह तौहीद पचास बार। रूकू में भी सूरह हम्द और सूरह तौहीद दस दस बार। और रूकू से उठने के बाद फिर इसी तरह और पहले सजदे में और फिर दोनों सजदों के दरमियान और फिर दूसरे सजदे में भी इसी तरह पढे।

इमाम हुसैन (अ) की दुआ।

नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़े:
ऐ ख़ुदा तू वो है जिसने आदम व हव्वा की दुआ क़ुबूल की।
जो बहुत लंबी है किताब के अंत में दी गई है।

नमाज़े इमाम ०जैनुल आबेदीन (अ)

यह नमाज़ चार रकत है। हर रकत में एक बार सूरह हम्द और सौ बार सूरह तौहीद।

हज़रत की दुआ

يَا مَنْ اَظْهَرَ الْجَمِيْلَ وَ سَتَرَ الْقَبِيْحَ يَا مَنْ لَمْ يُؤَاخِذْ بِالْجَرِيْرَةِ وَ لَمْ

ऐ वो ख़ुदा जिसने नेकियों को ज़ाहिर किया और बुराईयों पर परदा डाल दिया जराएम की सज़ा नही दी

يَهْتِكِ السِّتْرَ يَا عَظِيْمَ الْعَفْوِ يَا حَسَنَ التَّجَاوُزِ يَا وَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ يَا

और परदे को चाक नही किया। ऐ बड़ी माफ़ी वाले ऐ बेहतरीन दरगुज़र करने वाले। ऐ फैली हुई माफ़ी

بَاسِطَ الْيَدَيْنِ بِالرَّحْمَةِ يَا صَاحِبَ كُلِّ نَجْوٰى يَا مُنْتَهٰى كُلِّ شَكْوٰى يَا

वाले। ऐ दोनो हाथों से दान करने वाले। ऐ राज़ के साथी हर फ़रयाद की अख़री मनिज़ल। ऐ करीम माफ़

كَرِيْمَ الصَّفْحِ يَا عَظِيْمَ الرَّجَآءِ يَا مُبْتَدِئًا بِالنِّعَمِ قَبْلَ

करने वाले। वड़ी उम्मीदों के मरकज़। हक़ होने से पहले नेमतें देने वाले। ऐ मेरे रब ऐ मेरे सरदार ऐ मेरे

اسْتِحْقَاقِهَا يَا رَبَّنَا وَ سَيِّدَنَا وَ مَوْلَانَا يَا غَايَةَ رَغْبَتِنَا اَسْئَلُكَ

मौला मेरी चाहतों की अंतिम मंज़ल मै तुझसे सवाल करता हूँ के मुहम्मद व आले मुहम्मद (स) पर रहमत

اَللّٰهُمَّ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ.

नाज़िल कर।

नमाज़े इमाम बाक़िर (अ)

यह नमाज़ दो रकत है और हर रकत में एक बार सूरह हम्द और सौ बार पढ़े:

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ.

???पाकीज़ा है अल्लाह और सारी तारीफ़ उसी के लिए और उस के अलावा कोई ख़ुदा नहीं है और वो सबसे बड़ा है।

उसके बाद हज़रत की यह दुआ पढे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُكَ یَا حَلِیۡمُ ذُوۡ اَنَاةٍ غَفُوۡرٌ وَدُوۡدٌ اَنۡ تَتَجَاوَزَ عَنۡ

परवरदिगार मै तुझसे सवाल करता हूँ के तू हलीम है बरदाश्त करनेवाला है माफ़ करनेवाला और मोहब्बत

سَیِّئَاتِیۡ وَ مَا عِنۡدِیۡ بِحُسۡنِ مَا عِنۡدَكَ وَ اَنۡ تُعۡطِیَنِیۡ مِنۡ

करनेवाला है। ख़ुदाया मेरी ग़लतियों को माफ़ करदे और मेरी ख़ताओं को अपने एसानों से बख़्शदे।

عَطَآئِكَ مَا یَسَعُنِیۡ وَ تُلۡهِمَنِیۡ فِیۡمَا اَعۡطَیۡتَنِیۡ الۡعَمَلَ فِیۡهِ

मुझे वो अतिये अता फ़रमा जो वसी हों और मुझे उन अतियों के साथ ये तौफ़ीक़ दे के मै तेरी इताअत

بِطَاعَتِكَ وَ طَاعَةِ رَسُوۡلِكَ وَ اَنۡ تَعۡطِیَنِیۡ مِنۡ عَفۡوِكَ مَا

और तेरे रसूल की इताअत कर सकूँ और वो माफ़ी अता फ़रमा के जिसके बाद मै इज़्ज़त व करामत का

اَسۡتَوۡجِبُ بِهٖ كَرَامَتَكَ اَللّٰهُمَّ اَعۡطِنِیۡ مَا اَنۡتَ اَهۡلُهٗ وَلَا تَفۡعَلۡ

हक़दार बन जाऊँ। ख़ुदाया मुझे वो अता फ़रमादे जिसका तू अहल है। और मेरे साथ वो बरताओ न करना

بِیۡ مَا اَنَا اَهۡلُهٗ فَاِنَّمَا اَنَا بِكَ وَلَمۡ اُصِبۡ خَیۡرًا قَطُّ اِلَّا مِنۡكَ یَا اَبۡصَرَ

जिसका मै अहल हूँ। इस लिए के मै तेरा बानदा हूँ और कोई ख़ैर तेरे अलावा कहीं से नही पा सकता हूँ।

الۡاَبۡصَرِیۡنَ وَ یَا اَسۡمَعَ السَّامِعِیۡنَ وَ یَا اَحۡكَمَ الۡحَاكِمِیۡنَ وَ یَا جَارَ

ऐ सबसे ज़्यादा निगाह रखनेवाले सबसे बेहतर सुन्नेवाले सबसे अच्छा फ़ैसला करनेवाले। हर पनाह

الۡمُسۡتَجِیۡرِیۡنَ یَا مُجِیۡبَ دَعۡوَةِ الۡمُضۡطَرِّیۡنَ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ

माँगनेवाले को पनाह देनेवाले और हर मुज़तर कि दुआ कुबूल करनेवाले मुहम्मद व आले मुहम्मद पर

مُحَمَّدٍ.

रहमत नाज़ल कर।

नमाज़े इमाम सादिक़ (अ)

दो रकत नमाज़ है। हर रकत में एक बार सूरह हम्द और सौ बार आयते शहेदल्लाह। उसके बाद हज़रत की दुआ।

يَا صَانِعَ كُلِّ مَصْنُوْعٍ يَا جَابِرَ كُلِّ كَسِيْرٍ وَ يَا حَاضِرَ كُلِّ مَلاَءٍ وَ يَا

ऐ हर मसनू के बनाने वाले, हर शिकस्ता के जोड़नेवाले। हर इजतिमा के हिज़र, हर नजवा के

شَاهِدَ كُلِّ نَجْوٰى وَ يَا عَالِمَ كُلِّ خَفِيَّةٍ وَ يَا شَاهِدُ غَيْرَ غَائِبٍ وَ

गवाह, हर छुपी बात के जाननेवाले। हर जगह हाज़र रहनेवाले। हर एक पर ग़ालिबआनेवाले।

غَالِبُ غَيْرَ مَغْلُوبٍ وَ يَا قَرِيْبُ غَيْرَ بَعِيْدٍ وَ يَا مُؤْنِسَ كُلِّ وَحِيْدٍ وَ يَا

सबसे क़रीब रहनेवाले। हर तनहा के मूनिस। ऐ हय्यो क़य्यूम। जो मुरदों को ज़िनदगी और

حَيُّ مُحْيِيَ الْمَوْتٰى وَ مُمِيْتَ الْأَحْيَآءِ الْقَآئِمَ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا

ज़िनदोंको मौत देनेवाले और हर नफ्स के आमाल की निगरानी करनेवाला है। ऐ वो ज़िनदा जो

كَسَبَتْ وَ يَا حَيًّا حِيْنَ لاَ حَيَّ لاَ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اٰلِ

उस समय भी ज़िनदा था जब कोई जीवित न था। तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है। मुहम्मद व

مُحَمَّدٍ.

आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल कर।

नमाज़े इमाम मुसा काज़म (अ)

दो रकत नमाज़। हर रकत में एक बार सूरह हम्द और बारह बार सूरह तौहीद। उसके बाद हज़रत की दुआ:

اِلٰهِیْ خَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لَكَ وَ ضَلَّتِ الْاَحْلَامُ فِيْكَ وَ وَجِلَ كُلُّ

ख़ुदाया तेरे सामने सारी आवा॰जें दब गई हैं सारी अक़्लें गुम हो गई हैं। हर दिल ख़ैफ़जदा है। सब भाग

شَیْءٍ مِنْكَ وَ هَرَبَ كُلُّ شَیْءٍ اِلَيْكَ وَ ضَاقَتِ الْاَشْيَآءُ دُوْنَكَ وَ مَلَأَ

कर तेरी ही तरफ़ आ रहे हैं। सारी दुनिया तेरे अलावा तंग है। तेरे नूर ने हर शै को भर दिया है। तू अपने

كُلَّ شَیْءٍ نُوْرُكَ فَاَنْتَ الرَّفِيْعُ فِیْ جَلَالِكَ وَ اَنْتَ الْبَهِیُّ فِیْ جَمَالِكَ وَ

जलाल में बुलंद अपने जमाल में हसीन अपनी क़ुदरत में अज़ीम है। तू वो है जिसे कोई चीज़ थका नही

اَنْتَ الْعَظِيْمُ فِیْ قُدْرَتِكَ وَ اَنْتَ الَّذِیْ لَا يَئُوْدُكَ شَیْءٌ يَا مُنْزِلَ

सकती है। ऐ नेमत के नाज़ल करनेवाले ऐ रंज के दूर करनेवाले ऐ हाजतों के पूरा करनेवाले मेरी हाजतों

نِعْمَتِیْ يَا مُفَرِّجَ كُرْبَتِیْ وَ يَا قَاضِیَ حَاجَتِیْ اَعْطِنِیْ مَسْئَلَتِیْ بِلَا اِلٰهَ

को अता फ़रमादे अपनी तौहीद के वासते से मैं तुझपर ख़ुलूस के साथ ईमान लाया। तेरे अहद पर सुबह की

اِلَّا اَنۡتَ اٰمَنۡتُ بِكَ مُخۡلِصاً لَكَ دِيۡنِيۡ اَصۡبَحۡتُ عَلٰى عَهۡدِكَ وَ

और जहाँ तक मुमिकन हुआ उस पर क़ायम हूँ और अपने गुनाहों से इसतिग़फ़ार कर रहा हूँ। जिन्हे तेरे

وَعۡدِكَ مَا اسۡتَطَعۡتُ اَبُوۡٓءُ لَكَ بِالنِّعۡمَةِ وَ اَسۡتَغۡفِرُكَ مِنَ الذُّنُوۡبِ

अलावा कोई नही माफ़ कर सकता है। ऐ वो ख़ुदा जो बुलंदियों के बावजूद क़रीब है। और क़ुरबत के

الَّتِيۡ لاَ يَغۡفِرُهَا غَيۡرُكَ يَا مَنۡ هُوَ فِيۡ عُلُوِّهٖ دَانٍ وَ فِيۡ دُنُوِّهٖ عَالٍ وَ فِيۡ

बावजूद बुलंद है। और अपनी नूरानियत में रौशनी देने वाला है और अपनी सलतनत मे क़वी है। मुहम्मद

اِشۡرَاقِهٖ مُنِيۡرٌ وَ فِيۡ سُلۡطَانِهٖ قَوِيٌّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اٰلِهٖ.

और आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़रमा।

नमाज़े ईमाम रेज़ा (अ)

छे रकत नमाज़ है। हर रकत में एक बार सूरह हम्द और दस बार सूरह हल अता। उसके बाद आपकी दुआ:

يَا صَاحِبِيۡ فِيۡ شِدَّتِيۡ وَ يَا وَلِيِّيۡ فِيۡ نِعۡمَتِيۡ وَ يَا اِلٰهِيۡ وَ اِلٰهَ اِبۡرَاهِيۡمَ وَ

ऐ श्दित मे मेरे साथी नेमत मे मेरे मालिक मेरे ख़ुदा इब्राहीम इस्माईल इसहाक़ ओ याक़ूब के परवरदिगार ऐ

اِسۡمَاعِيۡلَ وَ اِسۡحٰقَ وَ يَعۡقُوۡبَ يَا رَبَّ كٓهٰيٰعٓصٓ وَ يٰسٓ وَ

काफ़ हे या औन साद यासीन और क़ुराने हकीम के मालिक मै तुझसे सवाल कर रहा हूँ के तू बेहतरीन

الْقُرْآنِ الْحَكِيْمِ اَسْئَلُكَ يَا اَحْسَنَ مَنْ سُئِلَ وَ يَا خَيْرَ مَنْ

सवाल किये जाने के लाएक़ है और तुझसे दुआ कर राहा हूँ के तू बेहतरीन दुआ के क़ाबिल है ऐ सबसे

دُعِيَ وَ يَا اَجْوَدَ مَنْ اَعْطٰى يَا خَيْرَ مُرْتَجٰى اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى

ज़्यादा अता करनेवाले और सबसे बेहतरीन मरकज़े उम्मीद मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल

مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ.

फ़रमा।

नमाज़े इमाम जवाद (अ)

यह दो रकत नमाज़ है। हर रकत में एक बार सूरह हम्द और सत्तर बार सूरह तौहीद। उसके बाद आपकी दुआ।

اَللّٰهُمَّ رَبَّ الْاَرْوَاحِ الْفَانِيَةِ وَ الْاَجْسَادِ الْبَالِيَةِ اَسْئَلُكَ بِطَاعَةِ

ख़ुदा या ऐ फ़ना होनेवाली अरवाह और मिट जाने वाले अजसाम के मालिक मै तुझसे सवाल

الْاَرْوَاحِ الرَّاجِعَةِ اِلٰى اَجْسَادِهَا وَ بِطَاعَةِ الْاَجْسَادِ الْمُلْتَئِمَةِ

करता हूँ अरवाह की इताअत के वासते से जो जिस्म तक पलट के आने वाली है और उन

بِعُرُوْقِهَا وَ بِكَلِمَتِكَ النَّافِذَةِ بَيْنَهُمْ وَ اَخْذِكَ الْحَقَّ مِنْهُمْ وَ

जिस्मों की इताअत के वासते से जो रगों से जुडे हुए हैं। तेरे कलमे का वास्ता जो सबमें नाफ़ज़ है

الْخَلَآئِقُ بَيْنَ يَدَيْكَ يَنْتَظِرُوْنَ فَصْلَ قَضَآئِكَ وَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَكَ وَ

और तेरे हक़ के लेने का वास्ता के तमाम मख़लूक़ात तेरे सामने हैं। तेरे फ़ैसले के मुन्तज़र हैं और

يَخَافُوْنَ عِقَآبَكَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اجْعَلِ النُّوْرَ فِيْ بَصَرِيْ

तेरे अज़ाब से भयबीत हैं। ख़ुदाया मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़रमा। मेरी आखों

وَ الْيَقِيْنَ فِيْ قَلْبِيْ وَ ذِكْرَكَ بِاللَّيْلِ وَ النَّهَارِ عَلٰى لِسَانِيْ وَ عَمَلاً

मे नूर मेरे दिल मे यक़ीन और मेरी ज़बान पर दिन रात अपने ज़िक्र को जारी कर दे और मुझे

صَالِحاً فَارْزُقْنِيْ.

अमले सालेह अता फ़रमा।

नमाज़े इमामे अली नक़ी (अ)

यह दो रकत नमाज़ है। पहली रकत में सूरह हम्द और सूरह यासीन। और दूसरी रकत में सूरह हम्द और सूरह रहमान। आप की दुआ यह है:

يَا بَآرُّ يَا وَصُوْلُ يَا شَاهِدَ كُلِّ غَآئِبٍ وَ يَا قَرِيْبُ غَيْرَ بَعِيْدٍ وَ يَا غَالِبُ

ऐ नेकी करनेवाले ऐ बेहतरीन राबिता रखनेवाले ऐ हर ग़ायब के गवाह हर एक से क़रीब सब पर ग़ालिब

غَيْرَ مَغْلُوْبٍ وَ يَا مَنْ لاَ يَعْلَمُ كَيْفَ هُوَ اِلاَّ هُوَ يَا مَنْ لاَ تُبْلَغُ قُدْرَتُهٗ

आनेवाले। और जिसके अलावा हालात को कोई नही जानता और न कोई उसकी क़ुदरत तक पहुँच सकता

اَسْئَلُكَ اللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ الْمَكْنُوْنِ الْمَخْزُوْنِ الْمَكْتُوْمِ عَمَّنْ شِئْتَ

है। मै तुझसे उस नाम के हवाले से जो क़ुदरत के छुपे हुए ख़ज़ाने मे है और हर एक से छुपा दिया गया है

الطَّاهِرِ الْمُطَهَّرِ الْمُقَدَّسِ النُّوْرِ التَّآمِّ الْحَيِّ الْقَيُّوْمِ الْعَظِيْمِ نُوْرِ

पाक ओ पाका॰rजा है। मुक़द्दस है नूर है ताम व कामिल है और हय्यो क़य्यूम अज़ीम है आसमानो का नूर

السَّمٰوٰتِ وَ نُوْرِ الْاَرَضِيْنَ عَالِمِ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ الْكَبِيْرِ

ज़मीनो का नूर है और ग़ैब ओ शहृद का जाननेवाला है। ऐ ख़ुदाए कबीर व मुताआल व अज़ीम मेरा सवाल

الْمُتَعَالِ الْعَظِيْمِ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ.

ये है के मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़िल फ़रमा।

नमाज़े इमाम हसन अस्करी (अ)

यह चार रकत नमाज़ है। पहली दो रकतों में सूरह हम्द के बाद पंद्रह बार सूरह ज़िलज़ाल और आाख़िर की दो रकत में सूरह हम्द के बाद पंद्रह बार सूरह तौहीद। आपकी दुआ यह है:

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِاَنَّ لَكَ الْحَمْدُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْبَدِيْءُ قَبْلَ كُلِّ

ख़ुदाया मै उस वासते से सवाल करता हूँ के तेरे लिए हम्द है तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है। हर शै से पहले

شَيْءٍ وَ اَنْتَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الَّذِيْ لَا يُذِلُّكَ شَيْءٌ وَ

तेरा वजूद है। तू ज़िंदा है और ज़िंदा रखनेवाला है। तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है। और कोई चीज़ तुझे

اَنْتَ كُلَّ يَوْمٍ فِيْ شَاْنٍ لاَ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَالِقُ مَا يُرٰى وَ مَا لاَ يُرٰى

कमज़ोर नही कर सकती है। तू हर रोज़ एक नई शान रखता है। और तेरे अलावा कोई दूसरा ख़ुदा नही है।

الْعَالِمُ بِكُلِّ شَئٍ بِغَيْرِ تَعْلِيْمٍ اَسْئَلُكَ بِاٰلَائِكَ وَ نَعْمَآئِكَ بِاَنَّكَ

तू हर दिखनेवाली और न दिखने वाली मख़लूक का ख़ालिक़ है। बग़ैर किसी तालीम के हर शै का जानने

اللّٰهُ الرَّبُّ الْوَاحِدُ لَا اِلٰهَ اِلاَّ اَنْتَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ وَ اَسْئَلُكَ بِاَنَّكَ

वाला है। मै तुझसे तेरी नेमतों और बख़शिशों का सवाल करता हूँ के तू वो ख़ुदा है जिसके अलावा कोई

اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْوِتْرُ الْفَرْدُ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِيْ لَمْ يَلِدْ

ख़ुदा नही है। तू रहमान व रहीम है। मेरा सवाल इस लिए है के तेरे सिवा कोई ख़ुदा नही है। तू वाहिद है

وَ لَمْ يُوْلَدْ وَ لَمْ يَكُنْ لَهٗ كُفُوًا اَحَدٌ وَ اَسْئَلُكَ بِاَنَّكَ اللّٰهُ لاَ اِلٰهَ اِلَّا

अहद है समद है न तेरे कोई बेटा है न कोई बाप है। और न तेरा कोई हमसर है। मै तुझसे इस लिए सवाल

اَنْتَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ الْقَآئِمُ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ اَلرَّقِيْبُ

करता हूँ के तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है। तू लता॰rफ ओ ख़बीर है। हर न॰फ्स के हाल का निगरान है।

الْحَفِيْظُ وَ اَسْئَلُكَ بِاَنَّكَ اللّٰهُ الْاَوَّلُ قَبْلَ كُلِّ شَئٍ وَ الْاٰخِرُ بَعْدَ كُلِّ

हर एक की रक्षा करनेवाला है। और मै तुझसे उस वासते से सवाल करता हूँ के तू हर चा॰rज से पहले था

شَئٍ وَ الْبَاطِنُ دُوْنَ كُلِّ شَئٍ اَلضَّآرُّ النَّافِعُ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ وَ

और हर चा॰rज के बाद रहनेवाला है। हर गहराई पर नज़र रखनेवाला है। लाभ और हान्ि तेरे हाथ मे है।

اَسْئَلُكَ بِاَنَّكَ اَنْتَ اللهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ الْبَاعِثُ

तू वो इल्म व हिकमतवाला है मेरा सवाल इस लिए है के तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है। तू ज़िन्दा व

الْوَارِثُ الْحَنَّانُ الْمَنَّانُ بَدِیْعُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ذُو الْجَلَالِ وَ

क़ायम रखने वाला मुरदों को ज़िनदा करने वाला। सबका वारिस सब पर मेहेरबान। आसमान व ज़मीन

الْاِکْرَامِ وَ ذُوالطَّوْلِ وَ ذُوْ الْعِزَّةِ وَ ذُوْ السُّلْطَانِ لاَ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

का पैदा करनेवाला। जलाल व इक्राम वाला। ईनाम वाला इ॰ज्ज़त वाला और हुकूमत वाला है। तेरे

اَحَطْتَ بِکُلِّ شَیْءٍ وَ عِلْماً وَ اَحْصَیْتَ کُلَّ شَیْءٍ عَدَدًا صَلِّ عَلٰی

अलावा कोई ख़ुदा नही है। तेरा इल्म हर चाज़ को घेरे हुए है। और तूने ही हर चीज़ का हिसाब अपने

مُحَمَّدٍوَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ.

हाथों मे रखा है। ख़ुदाया मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़रमा।

नमाज़े हज़रत साहेबुज़ ज़मान (अ)

यह दो रकत नमाज़ है। हर रकत में सूरह हम्द को इय्याका नाअबुदू व इय्याका नस्तईन पढने के बाद इसी आयत को सौ बार दोहराए। उसके बाद सूरह को मुकम्मल करे। बाद इसके सूरह तौहीद पढ़े। नमाज़ तमाम होने के बाद यह दुआ पढे:

اَللّٰهُمَّ عَظُمَ الْبَلآءُ وَ بَرِحَ الْخَفَآءُ وَ انْکَشَفَ الْغِطَآءُ وَ ضَاقَتِ

ख़ुदाया बलाएं बढ गई हैं परदे उठ गए हैं और इतमामे हुज्जत ज़ाहिर हो गया है। और ज़मीनो

الْاَرْضُ بِمَا وَسِعَتِ السَّمَآءُ وَ اِلَيْكَ يَا رَبِّ الْمُشْتَكٰى وَ عَلَيْكَ

आसमान के फ़ैलाओ के बवजूद तंग हो गई है। और अब तेरी ही बारगाह में फ़रयाद है। और हर

الْمُعَوَّلُ فِي الشِّدَّةِ وَ الرَّخَآءِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اٰلِ مُحَمَّدٍ

शिद्दत व बद हाली में तुझही पर भरोसा है। मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़रमा।

نِالَّذِيْنَ اَمَرْتَنَا بِطَاعَتِهِمْ وَ عَجِّلِ اللّٰهُمَّ فَرَجَهُمْ بِقَآئِمِهِمْ وَ اَظْهِرْ

जिनकी इताअत का हुकुम दिया है और ज़हूरे क़ायम के ज़रये उनके सुकून मे उजलत फ़रमा और

اِعْزَازَهٗ يَا مُحَمَّدُ يَا عَلِيُّ يَا عَلِيُّ يَا مُحَمَّدُ اِكْفِيَانِيْ فَاِنَّكُمَا كَافِيَايَ يَا

उनकी अ॰ज्मत को ज़ाहिर फ़रमा। ए मुहम्मद ए अली ए अली ए मुहम्मद। मेरे लिए काफ़ी हो

مُحَمَّدُ يَا عَلِيُّ يَا عَلِيُّ يَا مُحَمَّدُ اُنْصُرَانِيْ فَاِنَّكُمَا نَاصِرَايَ يَا مُحَمَّدُ يَا عَلِيُّ يَا

जाएं के मेरे लिए आपही काफ़ी हैं। ए मुहम्मद ए अली ए अली ए मुहम्मद। आप दोनो हमारी

عَلِيُّ يَا مُحَمَّدُ اِحْفَظَانِيْ فَاِنَّكُمَا حَافِظَايَ يَا مَوْلَايَ يَا صَاحِبَ

मदद करें के आपही मददगार हैं। ए मुहम्मद ए अली ए अली ए मुहम्मद। आप हमारी रक्षा करें

الزَّمَانِ يَا مَوْلَايَ يَا صَاحِبَ الزَّمَانِ يَا مَوْلَايَ يَا صَاحِبَ الزَّمَانِ

के आपही हमारे रक्षक हैं। ऐ मौला ऐ साहिबु॰ज्ज़मान। ऐ मेरे आक़ा ऐ साहिबुल अस्र ऐ मेरे

الْغَوْثَ الْغَوْثَ الْغَوْثَ اَدْرِكْنِيْ اَدْرِكْنِيْ اَدْرِكْنِيْ اَلْاَمَانَ الْاَمَانَ

सरदार। ऐ साहिबु॰ज्ज़मान फ़रयाद फ़रयाद फ़रयाद आप हमारी मदद करें आप हमारी मदद करें

الْاَمَانَ.

आप हमारी मदद करें। अमान अमान अमान दें।

नमाज़े जाफ़रे तय्यार (अ)

इस नमाज़ को अकसीरे आज़म और किबरीते अहमर से ताबीर किया गया है। और इन्तेहाई मोतबर असनाद के साथ उसके बेशुमार फ़ज़ाएल वारिद हुए हैं जिनमें बड़े बड़े गुनाहों की बख़शिश भी शामिल है। उसका बेहतरीन समय रोज़े जुमा का आगाज़ है। यह चार रकत नमाज़े है। दो तशÔहुद और सलाम के साथ। पहली रकत में सूरह हम्द के बाद सूरह ज़िलज़ाल। दूसरी रकत में सूरह हम्द के बाद सूरह आदेयात। तीसरी रकत में सूरह हम्द के बाद सूरह नस्र और चौथी रकत में सूरह हम्द के बाद सूरह तौहीद। और हर रकत में िक़रात के बाद पंद्रह बार पढ़े:

पाकीज़ा है अल्लाह और सारी तारीफ़ उसी के लिए और उस के अलावा कोई ख़ुदा नही है और वो सबसे बड़ा है।

उसके बाद रूकू में। रूकू से सर उठाने के बाद। पहले सजदे में। दोनों सजदों के दरमियान। दूसरे सजदे में। दूसरे सजदे के बाद दस दस बार यही तस्बीहात पढ़े। जो कुल मिलाकर हर रकत में ७५ बार होगा।

शेख़ कुलैनी ने अबू सईद मदाएनी से रिवायत की है के इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ) ने फ़रमाया: क्या तुम्हें ऐसी चीज़ न सिखाऊँ जिसको तुम नमाज़े जाफ़रे तय्यार में पढ़ा करो। तो मैने कहा: बेशक। फ़रमाया: जब चौथी रकत के आख़री सजदे में जाओ तो तसबीहाते अरबा के बाद यह दुआ पढ़ो:

سُبْحَانَ مَنْ لَبِسَ الْعِزَّ وَ الْوَقَارَ سُبْحَانَ مَنْ تَعَطَّفَ بِالْمَجْدِ وَ تَكَرَّمَ

पाकीज़ा है वो जिसका लिबास इ॰ज्ज़तो विक़ार है। पाकीज़ा है वो जो मेहेरबानी और करम करनेवाला है।

بِهٖ سُبْحَانَ مَنْ لَّا يَنْبَغِيْ التَّسْبِيْحَ اِلَّا لَهٗ سُبْحَانَ مَنْ اَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ

पाकीज़ा है वो जिसके अलावा कोई लाएक़े तसबीह नही है। पाकीज़ा है वो जिसका इल्म हर चा॰ज को

عِلْمُهٗ سُبْحَانَ ذِى الْقُدْرَةِ وَ الْكَرَمِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِمَعَاقِدِ مِنْ

घेरे हुए है। पाकीज़ा है वो अहसान व नेमतवाला है। पाकीज़ा है वो जो क़ुदरत व करमवाला है। ख़ुदाया मै

عَرْشِكَ وَ مُنْتَهَى الرَّحْمَةِ مِنْ كِتَابِكَ وَ اسْمِكَ الْاَعْظَمِ وَ كَلِمَاتِكَ

तेरे अर्शे आज़म के मक़ामाते इ॰ज़्ज़त व जलालत और तेरी किताब के इन्तेहा ए रहमत के वसीले से और

التَّآمَّةِ الَّتِيْ تَمَّتْ صِدْقًا وَ عَدْلاً صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اَهْلِ بَيْتِهٖ وَ

तेरे इस्मे आज़म और तेरे कलेमात ए ताम्मा द्वारा जो सच्चाई और इनसाफ़ के साथ तमाम हुए हैं ये सवाल

افْعَلْ بِيْ كَذَا وَ كَذَا.

करता हूँ के मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़रमा दे।

उसके बाद अपनी हाजत तलब करो।

शेख़ और सय्यद ने मुफ़॰ज़्ज़ल बिन उमर से रिवायत की है के मैने इमाम जाफ़र सादिक़ (अ) को देखा के आपने नमाज़ जाफ़र तय्यार तमाम करने के बाद हाथों को बुलंद किया और इस तरह हर दुआ एक सांस के बराबर पढ़ी:

ऐ रब, ऐ रब।

ऐ मेरे रब, ऐ मेरे रब।

रब, रब।

ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह।

ऐ जिनदा, ऐ जिनदा।

ऐ रहीम, ऐ रहीम।
सात बार:
ऐ रहमान, ऐ रहमान।
सात बार:
ऐ सबसे ज़यादा रहेम करने वाले।
उसके बाद आपने यह दुआ पढ़ी:

اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ اَفۡتَتِحُ الۡقَوۡلَ بِحَمۡدِكَ وَ اَنۡطِقُ بِالثَّنَآءِ عَلَيۡكَ وَ

ख़ुदाया मै अपनी बात को तेरी तारीफ़ से शुरू करता हूँ और तेरी बुज़ुर्गार्ि्ीr बयान करता हूँ के तेरी

اُمَجِّدُكَ وَ لاَ غَايَةَ لِمَدۡحِكَ وَ اُثۡنِىۡ عَلَيۡكَ وَ مَنۡ يَبۡلُغُ غَايَةَ

तारा॰rफ की कोई सीमा नही है। मै तेरी तारा॰rफ ज़रूर करता हूँ लेकिन तेरी तारीफ़ की हद और तेरी

ثَنَآئِكَ وَ اَمَدَ مَجۡدِكَ وَ اَنّٰى لِخَلِيۡقَتِكَ كُنۡهُ مَعۡرِفَةِ مَجۡدِكَ وَ

बुज़ुर्गी की हद को कौन पा सकता है? और मख़लूक़ात के बस मे कहाँ है के तेरी बुज़ुर्गी को पहचान

اَىَّ زَمَنٍ لَمۡ تَكُنۡ مَمۡدُوۡحًا بِفَضۡلِكَ مَوۡصُوۡفًا بِمَجۡدِكَ

सकें? वो कौनसा ज़माना था जब तू अपने फ़ज़्ल से तारा॰rफ के लाएक़ और बुज़ुर्गी से तौसा॰rफ के

عَوَّادًا عَلَى الۡمُذۡنِبِيۡنَ بِحِلۡمِكَ تَخَلَّفَ سُكَّانُ اَرۡضِكَ عَنۡ

लाएक़। और अपने हिल्म से गुनहगारों पर मुसलसल मेहेरबानी करनेवाला नही था? ज़मीन के बाशिंदों ने

طَاعَتِكَ فَكُنۡتَ عَلَيۡهِمۡ عَطُوۡفًا بِجُوۡدِكَ جَوَادًا بِفَضۡلِكَ

तेरी इताअत से मूह मोड़ लिया। लेकिन तू अपने करम से मेहेरबान है। अपने फज़्ल से अहसान करनेवाला

عَوَّادًا بِكَرَمِكَ يَا لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْمَنَّانُ ذُوْ الْجَلَالِ وَ

और अपने करम को मुसलसल शामिले हाल करने वाला है। ऐ वो ख़ुदा जिसके अलावा कोई ख़ुदा नही

الْاِكْرَامِ.

है। जो इन्तेहाई अहसान करने वाला और साहिबे जालाल व इकराम है।

उसके बाद हज़रत ने फ़रमाया के ऐ मुफ़ज़्ज़ल, जब भी कोई हाजत दरपेश हो तो नमाज़े जाफ़रे तय्यार अदा करो इस दुआ को पढ़ो और परवरदिगार से हाजत तलब करो। इन्शाअल्लाह हाजत पूरी हो जाएगी।
लेखक: शेख़ तूसी ने हाजत पूरी होने के लिए इमामे सादिक़ (अ) से रिवायत की है के बुध, जुमेरात और जुमे को रोज़ा रखो और जुमेरात के दिन जब शाम तक वक्त हो जाए तो दस मसाकीन को तीन पाव (७५० ग्राम) नफ़र सदक़ा दो और जुमा के दिन गुस्ल करके सेहरा में जाकर नमाज़े जाफ़रे तय्यार अदा करो। फिर घुटने खोलकर ज़मीन से मिलाकर यह दुआ पढ़ो:

يَا مَنْ اَظْهَرَ الْجَمِيْلَ وَ سَتَرَ الْقَبِيْحَ يَا مَنْ لَمْ يُؤَاخِذْ بِالْجَرِيْرَةِ وَ لَمْ

ऐ वो परवरदिगार जिसने नेकियाँ दिखाईं और बुरायाँ छुपा दीं। ऐ वो मालिक जिसने जराएम की सज़ा नही

يَهْتِكِ السِّتْرَ يَا عَظِيْمَ الْعَفْوِ يَا حَسَنَ التَّجَاوُزِ يَا وَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ يَا

दी और बुराईयों का परदा चाक नही किया। ऐ बहुत माफ़ करने वाले ऐ बेहतरीन दर गुज़र करनेवाले। ऐ

بَاسِطَ الْيَدَيْنِ بِالرَّحْمَةِ يَا صَاحِبَ كُلِّ نَجْوٰى وَ مُنْتَهٰى كُلِّ شَكْوٰى يَا

बहुतही माफ़ करने वाले। ऐ दोनो हाथों से रहमत अता करनेवाले। ऐ हर मख़फ़ी राज़ के हमराज़ और हर

مُقِيْلَ الْعَثَرَاتِ يَا كَرِيْمَ الصَّفْحِ يَا عَظِيْمَ الْمَنِّ يَا مُبْتَدًا بِالنِّعَمِ

फ़रयाद की अंतिम मनाज़िल। ऐ बहेकने से संभालनेवाले ऐ बेहतरीन माफ़ करनेवाले। अज़ीम अहसान

قَبْلَ اسْتِحْقَاقِهَا.

वाले। ऐ ज़रूरत से पहले अता करनेवाले।

लेखक का बयान है के इन तीन दिनों में रोज़ा और जुमे के दिन ज़वाल के समय दो रकत नमाज़े हाजत में बुहत सी रिवायत वारिद हुई हैं।
२१. जुमे के दिन के आमाल में यह भी है के ज़वाले आफ़ताब के समय वह दुआ पढ़े जिसे मुहम्मद बिन मुस्लिम ने इमामे सादिक़ (अ) से नक़्ल किया है। और वह मिस्बाहे शेख़ के अनुसार इस प्रकार है:

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ كَثِيْرًا طَيِّبًا كَأَفْضَلِ مَا صَلَّيْتَ عَلٰى اَحَدٍ

मुहम्मद (स) व आले मुहम्मद (स) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा कसरत से और बेहतरीन जो तूने अपने किसी

مِنْ خَلْقِكَ.

मख़लूक़ को अता किया हो।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا

अल्लाह के अलावा कोई ख़ुदा नही है। वो सबसे बड़ा है। वो पाक व पाका॰rजा है। सारी हम्द उस

وَلَمْ يَكُنْ لَهٗ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهٗ وَلِيٌّ مِنَ الذُّلِّ وَ كَبِّرْهُ

अल्लाह के लिए है जिसने किसी को अपना बेटा नही बनाया न कोई उसका हुकूमत मे भागीदार है और न

उसके बाद यह कहे: تَكْبِيْرًا.

कमज़ोरी मे मददगार है। उसके बढ़प्पन को मानना ज़रूरी है।

يَا سَابِغَ النِّعَمِ يَا دَافِعَ النِّقَمِ يَا بَارِءَ النَّسَمِ يَا عَلِيَّ الْهِمَمِ يَا

ऐ मुकम्मल नेमतोंवाले ऐ अज़ाब के रफ़ा करनेवाले ऐ ज़िन्दगीयों के ईजा द करने वाले। ऐ बुलंद

مُغْشِيَ الظُّلَمِ يَا ذَا الْجُودِ وَالْكَرَمِ يَا كَاشِفَ الضُّرِّ وَ الْاَلَمِ يَا

इरादोंवाले ऐ अंधेरोंको ढाकनेवाले। ऐ जूद व करमवाले। ऐ रंज व अलम को दूर करनेवाले ऐ अंधेरों मे

مُؤْنِسَ الْمُسْتَوْحِشِيْنَ فِي الظُّلَمِ يَا عَالِمًا لَا يُعَلَّمُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

डरे हुए लोगों के साथी। ऐ बग़ैर तालीम के जानने वाले। मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा

وَآلِ مُحَمَّدٍ وَ افْعَلْ بِيْ مَا اَنْتَ اَهْلُهٗ يَا مَنِ اسْمُهٗ دَوَآءٌ وَذِكْرُهٗ شِفَاءٌ وَ

और मेरे साथ वो बरताओ कर जिसका तू अहल है। ऐ वो ज़ात जिसका नाम दवा है और जिसका ज़िक्र

طَاعَتُهٗ غَنَاءٌ اِرْحَمْ مَنْ رَاْسُ مَالِهِ الرَّجَآءُ وَسِلَاحُهُ الْبُكَآءُ

शिफ़ा है। और उसकी इताअत सरमाया है। उस पर रहम फ़रमा जिसका कुल सरमाया उम्मीद है, और

سُبْحَانَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ يَا بَدِيْعَ السَّمَاوَاتِ وَ

जिसका असलहा रोना है। ऐ पाक ओ बेनियाज़। तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है। ऐ मोहसिन ऐ मेहेरबान ऐ

उसके बाद दस बार: الْاَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ.

ज़मिन व आसमान के पैदा करनेवाले। ऐ जलाल व इक्राम वाले।

२२. जुमा के दिन नमाज़े ज़ोहर को सुरह जुमा और मुनाफ़ेक़ून के साथ और नमाज़े अस्र को सुरह जुमा और सूरह तौहीद के साथ पढ़े।
शेख़ सदूक़ ने इमामे सादिक़ (अ) से रिवायत की है के हमारे शिओं के लिए यह बात लाज़म है के शबे जुमा की नमाज़ में सूरह जुमा और सूरह आला। और ज़ोहर की नमाज़ में सूरह जुमा और सूरह मुनाफ़ेक़ून पढ़ें। ऐसा करना रसूले अक्रम (स) के अमल का इतेबा है और इसका अज्रो सवाब सिर्फ़ बेहिश्त है।
शेख़ कुलैनी ने सहीह जैसी हसन सनद के साथ हलबी से रिवायत की है के मैने इमामे सादिक़ (अ) से सवाल किया के अगर जुमा के दिन फ़ुरादा नमाज़ पढ़ूं या नमाज़े जुमा के बजाए नमाज़े ज़ोहर पढ़ूँ तो? क्या उसे भी बुलंद आवाज़ से पढ़ूँ? तो फ़रमाया के बेशक। और सूरह जुमा और मुनाफ़ेक़ून भी पढ़ो।
२३. शेख़ तूसी ने मिसबाह में जुमा के दिन ज़ोहर के बाद के ताक़ीबात में इमामे सादिक़ (अ) से नक़्ल किया है के जो व्यक्ति भी नमाज़े के बाद सात बार सूरह हम्द, सात बार सूरह नास, सात बार सूरह फ़लक़, सात बार सूरह तौहीद, सात बार सूरह काफ़ेरून पढ़कर सूरह बरात का आख़री हिस्सा: लक़द जाअकुम रसूलुन मिन अन॰फोसेकुम और सूरह हश्र का आख़री हिस्सा: लव अन्ज़ल्ना हा ज़ल कुरआन...ता आख़िर सूरह और सूरह आले इम्रान की पाँच आयात: इन्न फ़ी ख़लिक़स समावाते वल अर्ज़ इन्नका ला युख़लेफ़ुल मीआद तक पढ़ ले वह इस जुमा से अगले जुमा तक तमाम दुशमनों के शर और बलाओं से महफ़ूज़ रहेगा।
२४. उन्ही हज़रत से यह रिवायत है के जो व्यक्ति भी सुबह या ज़ोहर के बाद कहे:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ صَلٰوتَكَ وَصَلٰوةَ مَلَائِكَتِكَ وَرُسُلِكَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ

ख़ुदाया अपने मलाएका और मुरसलीन की सलवात पर मुहम्मद और आले मुहम्मद पर क़रार दे

مُحَمَّدٍ.

दे।

उसके एक साल तक के गुनाह दर्ज न किए जाएंगे।
और यह कहा के जो व्यक्ति नमाज़े सुबह और नमाज़े ज़ोहर के बाद यह कहे: वह इमामे ज़माना (अ) की ज़ियारत के बग़ैर दुनिया से न जाएंगा।
ख़ुदाया मुहम्मद (स) व आले मुहम्मद (स) पर रहमत नाज़ल कर। और उनकी फ़रज मे जलदी कर।
लेखक के अनुसार अगर पहली दुआ को ज़ोहर के जुमे के दिन के बाद तीन बार पढ़े तो अगले जुमा तक हर बला से महफ़ूज़ रहेगा।
और यह भी रिवायत में है के जो व्यक्ति भी जुमा के दिन दो नमाज़ों के दरमियान सलवात पढ़ेगा उसे सत्तर रकत नमाज़ का सवाब हासिल होगा।
२५. सहीफ़ा कामेला की इन दुआओं को पढ़े:
१. ऐ वो जो रहम करता है उनपर जिसपर बंदे रहम नही करते।
२. ऐ ख़ुदा ये बहुत मुबराक और ख़ुशहाली का दिन है।
फिर दुआ करे क़ुबूल होगी और इमामे ैजनुल आबेदिन (अ) ऐसा ही करते थे।
२६. शेख़ ने मिस्बाह में फ़रमाया है के अइम्मे मासूमीन (अ) से रिवायत नक़्ल की गई है के: जो व्यक्ति भी जुमा के दिन ज़ोहर के बाद दो रकत नमाज़ अदा करेगा, और हर रकत में सूरह हम्द के बाद सात बार सूरह तौहीद पढ़ेगा, और नमाज़ के बाद इस तरह दुआ करे, हर बला से महफ़ूज़ रहेगा और उसे हज़रत रसूले अक्रम (स) और हज़रत इब्राहीम (अ) की दोस्ती नसीब होगी।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِی مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ الَّتِیْ حَشْوُهَا الْبَرَكَةُ وَ عُمَّارُهَا

ख़ुदाया मुझे जन्नत का अहल बनादे जिसके अंदर बरकत ही बरकत है और जिसके मेमार

اَلْمَلَآئِكَةُ مَعَ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهٖ وَ اَبِيْنَا اِبْرَاهِيْمَ

मलाएका हैं और हमारे पैग़मबर हज़रत मुहम्मद (स) और हमारे पूज्या पिता इब्राहीम रहते

عَلَيْهِ السَّلَامُ.

हैं।

२७. रिवायत में है के जुमा के दिन सलवात का बेहतरीन समय नमाज़े अस्र के बाद है। जब सौ बार इस प्रकार कहना चाहिए:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَعَجِّلْ فَرَجَهُمْ

बारे इलाहा मुहम्मदो आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल कर व उनके सुकून मे ताजील कर।

शेख़ ने कहा है के मुसतहब है के सौ बार यह सलवात पढ़े:

صَلَوَاتُ اللهِ وَمَلَآئِكَتِهٖ وَ اَنْبِيَآئِهٖ وَ رُسُلِهٖ وَ جَمِيْعِ خَلْقِهٖ عَلٰى مُحَمَّدٍ

अल्लाह, मलाएका, अंबिया, मुरसलीन और तमाम मख़लूक़ात की सलवात हज़रत मुहम्मद और आले

وَ آلِ مُحَمَّدٍ وَ السَّلَامُ عَلَيْهِ وَ عَلَيْهِمْ وَ عَلٰى اَرْوَاحِهِمْ وَ اَجْسَادِهِمْ

मुहम्मद पर हो और सलाम हो उनपर और उन तमाम हज़रात पर और उनकी अरवाह व अजसाम पर और

وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ.

अल्लाह की तमाम रहमत व बरकत उनही के लिये है।

शेख़ जलील इब्ने इद्रीस ने किताबे सराएर में जामे बज़ंती से नक़्ल किया है के अबु बसीर का बयान हे के: मैंने इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ) को यह कहते हुए सुना है के: ज़ोहर अस्र के दरमियान सलवात ७० रकत नमाज़ के बराबर है। और अगर कोई व्यक्ति अस्रे जुमा के दिन के बाद कहे तो उस व्यक्ति को उस दिन के जिन्नात इंसान के तमाम आमाल के बराबर सवाब अता किया जाएगा।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ الْاَوْصِيَآءِ الْمَرْضِيِّيْنَ بِاَفْضَلِ

ख़ुदाया हज़रत मुहम्मद और उनकी आल पर बहेतरीन सलवात नाज़ल फ़रमा जो तेरे पसंदीदा ओसिया हैं

صَلَوَاتِكَ وَ بَارِكْ عَلَيْهِمْ بِاَفْضَلِ بَرَكَاتِكَ وَ السَّلَامُ عَلَيْهِمْ وَ عَلٰى

और उन्हे बहेतरीन बरकात अता फ़रमा। सलाम हो उनपर और उनके अरवाह व अजसाम पर और ख़ुदा

اَرْوَاحِهِمْ وَ اَجْسَادِهِمْ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ.

की रहमत व बरकत सब उनही हज़रात के लिए है।

लेखक के अनुसार हदीस के बुज़ुर्गों की किताब में इन्तेहाई मोतबर असनाद के साथ और फ़ज़ीलतों के साथ वारिद हुई है। अगर उसे दस या सात बार पढ़े तो और बेहतर है। इस लिए के इमाम सादिक़ (अ) के अनुसार जो व्यक्ति भी जुमा के दिन अस्र के बाद अपनी जगह से उठने से पहले दस बार इस सलवात को पढ़े उस पर जुमा से जुमा तक उसी समय में फ़रिश्ते सलवात पढ़ते रहेंगे। उनही से रिवायत है के जुमा के दिन नमाज़े अस्र के बाद इस सलवात को पढे:
शेख कुलैनी ने काफ़ी में रिवायत की है के हर जुमा के दिन नमाज़ अदा करने के बाद इस प्रकार सलवात पढ़ो। जो व्यक्ति भी जुमा के दिन नमाज़े अस्र के बाद इस सलवात को पढ़ेगा परवरदिगार उसे एक लाख नेकियां

इनायत करेगा। और उसके एक लाख गुनाह मिटा देगा। और उसकी एक लाख हाजतें पूरी कर देगा। और उसके एक लाख दरजात बुलंद कर देगा।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ الْاَوْصِيَآءِ الْمَرْضِيِّيْنَ بِاَفْضَلِ

ख़ुदाया हज़रत मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़रमा जो तेरे पसंदीदा ओसिया हैं। अपनी

صَلَوَاتِكَ وَ بَارِكْ عَلَيْهِمْ بِاَفْضَلِ بَرَكَاتِكَ وَ السَّلَامُ عَلَيْهِ وَ

बहेतरीन सलवात और बहेतरीन बरकात उन्हें अता फ़रमा। उनपर तेरा सलाम और तेरी रहमत व बरकत

عَلَيْهِمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ.؞؞؞ اَسْتَغْفِرُ اللهَ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ.

हो।

शेख़ ने यह भी कहा है के रिवायत में यह भी आया है के जो व्यक्ति इस सलवात को सात बार पढ़ेगा परवरदिगार उसे हर बंदे के बराबर नेकी इनायत फ़रमाएगा और उसके आमाल उस दिन में क़ुबूल होंगे। और क़यामत के दिन इस शान से आएगा के उसकी पेशानी से नूर सातेह होगा। इन्शाअल्लाह अरफ़ा के दिन के आमाल में एक सलवात और बताई जाएगी जिसका पढ़ने वाला मोहम्मद (स) और आले मोहम्मद (अ) की ख़ुशनूदी का हक़दार होगा।

२८. नमाज़े अस्र के बाद सत्तर बार कहे: ताके परवरदिगार उसके तमाम गुनाहों को माफ़ कर दे।

मै अल्लाह से मग़फ़िरत मांगता हूँ और उससे माफ़ी चाहता हूँ।

२९. सौ बार सूरह क़द्र पढ़े। इमामे मूसा काज़म (अ) से रिवायत हुई है के परवरदिगार की तरफ़ से जुमा के दिन के लिए हज़ार नसीमे रहमत है जिसमे से हर बंदे को अपनी मशीयत के अनुसार अता फ़रमाता है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति अस्रे जुमा के बाद सौ बार सूरह क़द्र पढ़ ले तो

परवरदिगार हज़ार में भी इज़ाफ़ा कर देता है।
३०. दुआ अशरात भी पढ़े जिसका ज़िक्र आने वाला है।
३१. शेख़ तूसी का इरशाद है के क़ुबूलियते दुआ के साथ जुमा के दिन का आख़री घंटा है। लेहाज़ा इस समय ज़्यादा दुआ करनी चाहिए। रिवायत में यह भी आया है के क़ुबूलियत का समय वो समय है जब आधा सूरज दूब जाए के जनाबे फ़ातेमा (स) ऐसे ही समय पर दुआ करती थीं। और मुस्तहब है के इस समय वह दुआ पढ़े जो रसूले अक्रम (स) से नक़्ल की गई है।

سُبْحَانَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ يَا بَدِيْعَ السَّمَاوَاتِ وَ

पाक व पाकीज़ा है तू ऐ ख़ुदा तेरे अलावा कोई माबूद नही है। ऐ मेहेरबान ऐ मोहसिन ऐ आसमान व ज़मीन

الْاَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ.

के पैदा करनेवाले ऐ साहेबे जलाल व इक्राम।

इसके अलावा जुमा के दिन आख़री लम्हों में दुआ से मात जिसका ज़िक्र आईंदा आनेवाला है।
वाज़ेह रहे के जुमा के दिन अनेक एतेबार से इमामे ज़माना (अ) से ताल्लुक़ रखता है। एक यह के आपकी विलादते बा सआदत जुमा के दिन हुई है। और दूसरी बात यह के आपका ज़हूर भी जुमा के दिन होने वाला है। लेहाज़ा उस दिन ज़हूर का इंतेज़ार और उसकी दुआ आम दिनों से ज़्यादा होनी चाहिए। जिसकी तरफ़ आपकी मख़सूस ज़ियारत में भी इशारा किया गया है।

هٰذَا يَوْمُ الْجُمُعَةِ وَ هُوَ يَوْمُكَ الْمُتَوَقَّعُ فِيْهِ ظُهُوْرُكَ وَ الْفَرَجُ فِيْهِ

आज जुमे का दिन है। जो आपका दिन है, जिसमे हमे आप के ज़हूर का इन्तेज़ार है जिसमे आप के हाथों

لِلْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى يَدِكَ.

मोमि नीन को फ़रज हासिल होगी।

बलके जुमा के दिन का ईद होना और उसका चार ईदों में शुमार होना भी हक़ा॰rकतन इसी एतेबार से है। के उस दिन दुनिया कुफ्र और शिर्क और मासियात की कसाफ़त और ज़ालिमों जाबिरों मुलहिदों और मुना॰फिकों की ख़बासत से पाक हो जाएगी। और आं हज़रत कलमए हक़ के इज़हार शरियते इसलामी की सर बुलंदी से साहेबाने इमान के चश्मे दिल को मुनव्वर कर देंगे। और मोमिनीन पूरी तरह ख़ुश हो जाएंगे। व अशरक़तिल अ॰र्जो बे नूरे रब्बेहा। मुनासिब है के उस दिन में सलवात कबीर भी पढ़े और वह दुआ भी पढ़े जिसके बारे में इमाम रज़ा (अ) ने हुक्म फ़रमाया है। इसका ज़िक्र सरदाबे ग़ैबत के आमाल में किया जाएगा।

اَللّٰهُمَّ ادْفَعْ عَنْ وَلِيِّكَ وَخَلِيفَتِكَ وَحُجَّتِكَ عَلٰى خَلْقِكَ...

ऐ ख़ुदा अपने वली, अपने ख़ला॰rफा और अपने मख़लूक़ पर अपनी हुज्जत की रक्षा कर।

उसके अलावा के दुआ भी पढ़े जिसे शेख़ अमरी ने अबु अली बिन हमाम को लिखाई थी। और कहा था के इसे ज़माने ग़ैबत में ज़रूर पढ़ना चाहिए। यह सलवात और यह दुआ तूलानी थी इस लिए इस मक़ाम पर नक़्ल नहीं की जा सकी। हज़रात मिसबाहुल मुतहज्जिद या जमालुल उसबू में मुलाहेज़ा फ़रमा सकते हैं।

अलबत्ता इस मक़ाम पर उस सलवात का ज़िक्र किया जा रहा है जो अबुल हसन ज़र्राब इसफ़हानी की तरफ़ मनसूब है। और उसे शेख़ व सय्यद ने

अस्रे जुमा के आमाल में लिखा है। और सय्यद ने फ़रमाया है के यह सलवात इमामे अस्र (अ.त.फ.श.) से मरवी है। लेहाज़ा अगर किसी वजह से जुमा के दिन के अस्र के ताक़ीबात छूट भी जाएं तो इस सलवात को नहीं छोडना चाहिए। के हमे परवरदिगार की तरफ़ से इसके इमतेयाज़ की ख़बर दी गई है। उसके बाद इस सलवात को असनद के साथ नक़्ल किया है।
लेकिन शेख़ ने मिसबाह में यूं नक़्ल किया है के यह सलवात इमामे अस्र (अ.त.फ.श.) की तरफ़ से अबुल असन ज़र्राब इस्फ़हानी के लिए मक्के में सादिर हुई है। और हमने इख़तेसार की बिना पर उसकी सनद नहीं लिखी है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ وَخاتَمِ النَّبِيِّيْنَ؟؟؟

ख़ुदा के नाम से जो बहुत मेहेरबान व निहायत रहमवाला है। ख़ुदाया रहमत नाज़िल फ़रमा हज़रत मुहम्मद

وَحُجَّةِ رَبِّ الْعالَمِيْنَ الْمُنْتَجَبِ فى الْميثاقِ الْمُصْطَفى فِي

पर जो मुरसलीन के सरदार अंबियाके ख़ातम और रब्बुल आलामीन की हुज्जत हैं। मीसाक़ के दिन उनका

الظِّلالِ الْمُطَهَّرِ مِنْ كُلِّ آفَةِ الْبَرِىءِ مِنْ كُلِّ عَيْبِ الْمُؤَمَّلِ

इंतिख़ाब हुआ है। ख़ुदा की रहमत के साए मे मुनतख़ब हर आफ़त से पाकीज़ा हर ऐब से बरी नजात के

لِلنَّجاةِ الْمُرْتَجى لِلشَّفاعَةِ الْمُفَوَّضِ اِلَيْهِ دينُ اللهِ، اَللّٰهُمَّ

लिए उम्मीद का मरकज़ शफ़ाअत के लिए तव॰क्॰को की मांज़िल हैं। और ख़ुदा का दीन उनके हवाले

شَرِّفْ بُنْيانَهُ وَعَظِّمْ بُرْهانَهُ وَأَفْلِحْ حُجَّتَهُ وَارْفَعْ دَرَجَتَهُ وَاَضِئْ

कर दिया गया है।ख़ुदाया उनकी बुनियादों को बुलंदनर फ़रमादे। उनके बुरहान को सबसे बड़ा बनादे।

نُوْرَهٗ وَبَيِّضْ وَجْهَهٗ وَاَعْطِهِ الْفَضْلَ وَالْفَضِيلَةَ وَالْمَنْزِلَةَ

उनकी दलील को कामयाब करदे उनके दरजे को बुलंद फ़रमा। उनके नूरको रौशन कर। उनके चिहरे को

وَالْوَسِيلَةَ وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيعَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُوْدًا يَغْبِطُهٗ بِهِ

रौशनकर और उन्हें फ़ज़्ल व फ़ज़ीलत व मनिज़लत व वसीला व ऊँचा दरजा अता फ़रमा। और उस

الْاَوَّلُوْنَ وَالْآخِرُوْنَ وَ صَلِّ عَلٰى اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ وَارِثِ

मक़ामे महमूद तक पहुंचादे जिसपर अव्वलीनो आख़रीन ग़ब्ता करें। ख़ुदाया रहमत नाज़ल फ़रमा

الْمُرْسَلِيْنَ وَقَائِدِ الْغُرِّ الْمُحَجَّلِيْنَ وَسَيِّدِ الْوَصِيِّيْنَ وَحُجَّةِ رَبِّ

मोमिनीन के अमीर मुरसलीन के वारिस रौशन पेशानी लोगों के नेता औसिया के सरदार और रब्बुल

الْعَالَمِيْنَ، وَصَلِّ عَلَى الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ اِمَامِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ وَارِثِ

आलमीन की हुज्जत पर ख़ुदाया रहमत नाज़ल फ़रमा हज़रत हसन बिन अली पर जो मोमिनीन के इमाम,

الْمُرْسَلِيْنَ وَحُجَّةِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، وَصَلِّ عَلَى الْحُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ

मुरसलीन के वारिस और रब्बुल आलामीन की हुज्जत थे। ख़ुदाया रहमत नाज़ल फ़रमा हज़रत हुसैन बिन

اِمَامِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ وَارِثِ الْمُرْسَلِيْنَ وَحُجَّةِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ،

अली पर जो मोमिनीन के इमाम, मुरसलीन के वारिस और रब्बुल आलामीन की हुज्जत थे। ख़ुदाया

وَصَلِّ عَلٰى عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ اِمَامِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ وَارِثِ

रहमत नाज़ल फ़रमा हज़रत अली बिन हुसैन पर जो मोमिनीन के इमाम, मुरसलीन के वारिस और रब्बुल

الْمُرْسَلِيْنَ وَحُجَّةِ رَبِّ الْعالَمِيْنَ، وَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ اِمَامِ

आलामीन की हुज्जत थे। ख़ुदाया रहमत नाज़िल फ़रमा हज़रत मुहम्मद बिन अली पर जो मोमिनीन के

الْمُؤْمِنِيْنَ وَوارِثِ الْمُرْسَلِيْنَ وَحُجَّةِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، وَصَلِّ عَلٰى

इमाम, मुरसलीन के वारिस और रब्बुल आलामीन की हुज्जत थे। ख़ुदाया रहमत नाज़िल फ़रमा हज़रत

جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ اِمَامِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَوَارِثِ الْمُرْسَلِيْنَ وَحُجَّةِ رَبِّ

जाफ़र बिन मुहम्मद पर जो मोमिनीन के इमाम, मुरसलीन के वारिस और रब्बुल आलामीन की हुज्जत थे।

الْعَالَمِيْنَ، وَصَلِّ عَلٰى مُوْسَى بْنِ جَعْفَرٍ اِمَامِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَوَارِثِ

ख़ुदाया रहमत नाज़ल फ़रमा हज़रत मूसा बिन जाफ़र पर जो मोमिनीन के इमाम, मुरसलीन के वारिस और

الْمُرْسَلِيْنَ وَحُجَّةِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، وَصَلِّ عَلٰى عَلِيِّ بْنِ مُوْسٰى اِمَامِ

रब्बुल आलामीन की हुज्जत थे। ख़ुदाया रहमत नाज़िल फ़रमा हज़रत अली बिन मूसा पर जो मोमिनीन के

الْمُؤْمِنِيْنَ وَوَارِثِ الْمُرْسَلِيْنَ وَحُجَّةِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، وَ صَلِّ عَلٰى

इमाम, मुरसलीन के वारिस और रब्बुल आलामीन की हुज्जत थे। ख़ुदाया रहमत नाज़िल फ़रमा हज़रत

مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ اِمَامِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَوَارِثِ الْمُرْسَلِيْنَ وَحُجَّةِ رَبِّ

मुहम्मद बिन अली पर जो मोमिनीन के इमाम, मुरसलीन के वारिस और रब्बुल आलामीन की हुज्जत थे।

الْعَالَمِيْنَ، وَصَلِّ عَلٰى عَلِيِّ بْنِ مُحَمَّدٍ اِمَامِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَوَارِثِ

ख़ुदाया रहमत नाज़ल फ़रमा हज़रत अली बिन मुहम्मद पर जो मोमिनीन के इमाम, मुरसलीन के वारिस

الْمُرْسَلِيْنَ وَ حُجَّةِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، وَصَلِّ عَلَى الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ

और रब्बुल आलामीन की हुज्जत थे। ख़ुदाया रहमत नाज़ल फ़रमा हज़रत हसन बिन अली पर जो

اِمَامِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ وَارِثِ الْمُرْسَلِيْنَ وَحُجَّةِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ،

मोमिनीन के इमाम, मुरसलीन के वारिस और रब्बुल आलामीन की हुज्जत थे। ख़ुदाया रहमत नाज़ल

وَصَلِّ عَلَى الْخَلَفِ الْهَادِى الْمَهْدِيِّ اِمَامِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَوَارِثِ

फ़रमा फ़रजंदे रसूल हादी महदी पर जो मोमिनीन के इमाम, मुरसलीन के वारिस और रब्बुल आलामीन

الْمُرْسَلِيْنَ وَحُجَّةِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اَهْلِ

की हुज्जत हैं। ख़ुदाया रहमत नाज़ल फ़रमा हज़रत मुहम्मद और उनके अहलेबैत पर जो इमाम हादी

بَيْتِهِ الْاَئِمَّةِ الْهَادِيْنَ الْعُلَمَاءِ الصَّادِقِيْنَ الْاَبْرَارِ الْمُتَّقِيْنَ

ओलमा सादिक़ीन अबरार और मुत्तक़ी हैं। तेरे दीन के सुतून तेरी ताहीद के अरकान और तेरि वही के

دَعَائِمِ دِيْنِكَ وَاَرْكَانِ تَوْحِيْدِكَ وَتَرَاجِمَةِ وَحْيِكَ وَ حُجَجِكَ عَلٰى

तरजुमान। मख़लुक़ात पर तेरी हुज्जत और ज़मीन पर तेरे ख़ुलफ़ा हैं। उन्हें तूने अपने लिए चुना है। और

خَلْقِكَ وَخُلَفَائِكَ فِى اَرْضِكَ الَّذِيْنَ اخْتَرْتَهُمْ لِنَفْسِكَ وَ

अपने बंदों मे चुनिन्दा क़रार दिया है और अपने दीन के लिए पसंद किया है। और अपनी मारिफ़त के

اصْطَفَيْتَهُمْ عَلٰى عِبَادِكَ وَارْتَضَيْتَهُمْ لِدِيْنِكَ وَخَصَصْتَهُمْ

लिए मख़सूस कर दिया है। और अपनी करामत से अ जीमतर बना दिया है। और अपनी रहमत की दरया

بِمَعْرِفَتِكَ وَجَلَّلْتَهُمْ بِكَرَامَتِكَ وَغَشَّيْتَهُمْ بِرَحْمَتِكَ

मे डुबो दिया है। उनह अपनी नेमत से पाला है और अपनी हिकमत की ग़िज़ा दी है। अपने नूरका लिबास

وَرَبَّيْتَهُمْ بِنِعْمَتِكَ وَغَذَّيْتَهُمْ بِحِكْمَتِكَ وَ اَلْبَسْتَهُمْ نُوْرَكَ

पहनाया है और अपने मलकूत मे बुलंद बनाया है। उन्हें मलाएका के हलके मे रखा है। और अपने नबी के

وَرَفَعْتَهُمْ فِيْ مَلَكُوْتِكَ وَحَفَفْتَهُمْ بِمَلَائِكَتِكَ وَشَرَّفْتَهُمْ

ज़रिये शराफ़त और करामत अता फ़रमाई है। ख़ुदाया हज़रत मुहम्मद और उनकी आल पर रहमत नाज़ल

بِنَبِيِّكَ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَ آلِهٖ، اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلَيْهِمْ

फ़रमा। वो रहमत जो दाएमी और तय्यब व ताहिर हो। जिसका अहाता तेरे अलावा कोई दूसरा न कर

صَلَاةً زَاكِيَةً نَامِيَةً كَثِيْرَةً دَائِمَةً طَيِّبَةً لَا يُحِيْطُ بِهَا اِلَّا اَنْتَ وَ

सकता हो। और जिसका इल्म तेरे अलावा किसी के पास नही है और उसका शुमार भी किसी के लिए

لَا يَسَعُهَا اِلَّا عِلْمُكَ وَ لَا يُحْصِيْهَا اَحَدٌ غَيْرُكَ، اَللّٰهُمَّ وَصَلِّ عَلٰى

मुमकिन नही है। ख़ुदाया रहमत नाज़िल फ़रमा अपने वली पर जो तेरी सुन्नत का ज़िन्दा करनेवाला। तेरे

وَلِيِّكَ الْمُحْيِيْ سُنَّتَكَ الْقَائِمِ بِأَمْرِكَ الدَّاعِيْ اِلَيْكَ الدَّلِيْلِ

अम्र के साथ क़याम करनेवाला। तेरी तरफ़ दावत देनेवाला और तेरे दीन के लिए रहनुमा है। वो

عَلَيْكَ، حُجَّتِكَ عَلٰى خَلْقِكَ وَخَلِيْفَتِكَ فِيْ اَرْضِكَ وَ شَاهِدِكَ عَلٰى

मख़लूक़ात पर तेरी हुज्जत ज़मीन मे तेरा ख़लीफ़ा और बंदों के दरमियान तेरा गवाह है। ख़ुदाया उसे बा

عِبَادِكَ، اَللّٰهُمَّ اَعِزَّ نَصْرَهٗ وَمُدَّ فِيْ عُمُرِهٖ وَزَيِّنِ الْاَرْضَ بِطُوْلِ

इ॰ज़्ज़त नुसरत अता फ़रामा और तूले उम्र अता फ़रमा और उसके तूले बक़ा से ज़मीन को ज़ीनत अता

بَقَائِهٖ، اَللّٰهُمَّ اكْفِهٖ بَغْيَ الْحَاسِدِيْنَ وَاَعِذْهُ مِنْ شَرِّ الْكَائِدِيْنَ وَ

फ़रमा। ख़ुदाया उसे हासिदों के ज़ुल्म और मक्कारों के शर से अपनी पनाह मे रखना। ज़ालिमों के इरादों

اَزْجُرْ عَنْهُ اِرَادَةَ الظَّالِمِيْنَ وَخَلِّصْهُ مِنْ اَيْدِى الْجَبَّارِيْنَ،

को रद कर देना और जाबिरों के हाथों से उसे महफ़ूज़ रखना। ख़ुदाया अपने वली को उसकी ज़ात,

اَللّٰهُمَّ اَعْطِهٖ فِيْ نَفْسِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ وَشِيْعَتِهٖ وَرَعِيَّتِهٖ وَخَاصَّتِهٖ

ज़ुर्रियत, उसके शिया, उसकी रिआया, उसके ख़वास व अवाम और उसके दुशमनों और तमाम अहले

وَعَامَّتِهٖ وَعَدُوِّهٖ وَجَمِيْعِ اَهْلِ الدُّنْيَا مَا تُقِرُّ بِهٖ عَيْنَهٗ وَتَسُرُّ بِهٖ

दुनिया के बारे मे वो इनायत फ़रमा जो उसकी आँखों की ठंडक हो। और जिससे उसे दिलको सुरूर

نَفْسَهٗ وَبَلِّغْهُ اَفْضَلَ مَا اَمَّلَهٗ فِيْ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ

हासिल हो। उसे दुनिया व आख़िरत की त्माम बहतरी अता फ़रमा के तू हर शै पर क़ादिर है। ख़ुदाया जिस

شَىْءٍ قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ جَدِّدْ بِهٖ مَا اُمْتُحِىَ مِنْ دِيْنِكَ اَحْيِ بِهٖ مَا بُدِّلَ

क़दर दीन महो हो गया है उसके ज़रिए उसकी तजदीद फ़रमा। किताब के अहकाम जो बदल गए हैं उन्हे

مِنْ كِتَابِكَ وَاَظْهِرْ بِهٖ مَا غُيِّرَ مِنْ حُكْمِكَ حَتّٰى يَعُوْدَ دِيْنُكَ بِهٖ

ज़िदा फ़रमा। और जिन अहकाम को तबदील कर दिया गया है उन्हे ज़ाहिर फ़रमादे ताके उसके ज़रिए

وَ عَلِيٍّ الْمُرْتَضٰى وَفَاطِمَةَ الزَّهْرَاءِ وَالْحَسَنِ الرِّضَا وَالْحُسَيْنِ

ख़ुदाया हज़रत मुहम्मद मुसतफ़ा अली मुरतज़ा फ़ातिमा ज़हरा हसने रेज़ा और हुसैन मुनतख़ब और तमाम

الْمُصَفّٰى وَجَمِيْعِ الْاَوْصِيَاءِ مَصَابِيْحِ الدُّجٰى وَ اَعْلَامِ الْهُدٰى

औसिया पर रहमत नाज़ल फ़रमा जो अंधेरों के चराग़, हिदायत के परचम, तक़वा के मीनारे, रीसमाने

وَمَنَارِ التُّقٰى وَالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى وَالْحَبْلِ الْمَتِيْنِ وَالصِّرَاطِ

हिदायत, हबलुल मतीन और सिराते मुसतक़ीम हैं। ख़ुदाया अपने वाली और अपने इमाम औलिया अहद

الْمُسْتَقِيْمِ، وَصَلِّ عَلٰى وَلِيِّكَ وَ وُلَاةِ عَهْدِكَ وَ الْاَئِمَّةِ مِنْ وُلْدِهٖ

और उन आईम्मा पर जो उसकी औलाद मे हैं रहमत नाज़ल फ़रमा। उन्हे तूले हयात अता फ़रमा और

وَمُدَّ فِيْ اَعْمَارِهِمْ وَزِدْ فِيْ آجَالِهِمْ وَبَلِّغْهُمْ اَقْصٰى آمَالِهِمْ دِيْنًا

उनकी मुद्दते हयात बढ़ा। और उनहे तमाम दीनी दुनयवी और उख़रवी मक़ासिद तक पहुँचा दे के तू हर शै

وَدُنْيَا وَآخِرَةً اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

पर क़ुदरत रखनेवाला है।

हदीस के अनुसार, सनीचर की रात भी जुमे की रातो समान पवित्र है। इस लिए जुमे की सब दुआएं सनीचर की रात को भी पढ़ना चाहिए।

वर्ग - ५

पवित्र मासूमीन और हफ़्ते के दिन

नबी करीम और अइम्मा (अ) के नामों से हफ़ते के दिनों की मुनासिबत और इन दिनों में उन हज़रात की ज़ियारत।

सय्यद बिन ताउस ने जमालुल उसबू में लिखा है के इब्ने बाबवय ने अपनी सनद के साथ सक़र बिन अबी दल्फ़ से रिवायत की है के:
जब मुतवक्किल ने इमाम अली नक़ी (अ) को सामर्राह बुलवाया तो एक दिन मैं हज़रत की ख़िदमत में हाज़र हुआ के आप (अ) के हालात पुछूं। उस समय हज़रत ज़राकी दरबाने मुतवक्किल की कैद में थे। जब मैं वहां पहुँचा तो उसने पूछा के कैसे आना हुआ?
मैंने कहा के मैं आप की मुलाक़ात के लिए हाज़र हुआ हूँ।
उसके बाद मैं काफ़ी समय वहाँ बैठा रहा और अनेक विष्यों पर बातचीत होती रही। यहाँ तक के जब तमाम लोग चले गए तो उसने फिर पूछा के कैसे आना हुआ?
मैंने फिर वही जवाब दिया।
तो उसने कहा शायद तुम अपने मौला की ख़बर लेने आए हो।
मैंने डर कर यह कहा के मेरा मौला ख़लीफ़ा है।
उसने कहा ख़ामोश हो जाओ तुम्हारा मौला बरहक़ है और यही मेरा एतेक़ाद भी है।
मैंने कहा अलहम्दो लिल्लाह।
उसके बाद उसने कहा क्या तुम उनसे मिलना चाहते हो? मैंने कहा बेशक।

उसने कहा थोडी देर बैठ जाओ ताके डाक्या उनके पास से बाहर आ जाए।
मैं मुन्तिज़र रहा यहाँ तक के वह व्यक्ति बाहर आ गया।
तो उस समय उसने एक बच्चे को हुक्म दिया के मुझे हज़रत के पास ले जाए।
जब मैं हज़रत के पास पहुँचा तो मैंने देखा के आप चटाई पर बैठे हुए हैं और सामने एक क़बर खोदी हुई है। मैने सलाम किया आपने जवाब दिया और कहा के बैठ जाओ। उसके बाद पूछा के कैसे आना हुआ?
मैंने कहा के आपकी ख़ैरियत लेने आया हूँ।
उसके बाद जब मेरी निगाह क़ब्र पर पड़ी तो मैं रोने लगा। आप ने कहा न रो इस समय मुझे कोई नुक़सान नहीं पहुँच सकता है।
मैने कहा अल हम्दो लिल्लाह। उसके बाद मैंने कहा: मैंने रसूले अक्रम (स) की एक हदीस सुनी है जिसके माने समझ में नहीं आए हैं।
फ़रमाया के वह हदीस क्या है?
मैंने कहा के हुज़ूर (स) ने फ़रमाया है अय्याम से दुश्मनी न करो के वह तुमसे दुश्मनी करेंगे। तो आप (अ) ने कहा: यहाँ दिनों से मुराद हम लोग हैं। जब तक के ज़मीनो आसमान क़ायम है। सनीचर रसूले ख़ुदा (स) हैं। इतवार अमीरूल मोमिनीन (अ) हैं। पीर हसन और हुसैन (अ) हैं। मंगल अली बिन हुसैन, मोहम्मद बिन अली, और जाफ़र बिन मोहम्मद (अ) हैं। बुध मूसा बिन जाफ़र, अली बिन मूसा, और मोहम्मद बिन अली और मैं हूँ। जुमेरात मेरा बेटा हसन है और जुमा मेरे बेटे का बेटा है। यह हैं दिनों के माने। लेहाज़ा ख़बरदार उनसे दुनिया में दुश्मनी न करना वरना यह आख़ेरत में इसका इंतेकाम लेंगे।
उसके बाद कहा के चले जाओ के मैं तुम्हारे बारे में मुत्मईन नहीं हूँ। और डरता हूँ के तुम्हे भी कोई अिज़यत पहुँच जाए।
सय्यद ने इसी हदीस को दूसरी सनद से क़ुतुब रावंदी से नक़्ल किया है। और उसके बाद ज़ियारतें भी नक़्ल की हैं।
सनीचर के दिन रसूले अक्रम (स) की ज़ियारत इस तरह की जाए:

اَشْهَدُ اَنْ لاَّ اِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ وَحْدَهٗ لاَ شَرِيْكَ لَهٗ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ رَسُوْلُهٗ

मै गवाही देता हूँ के अल्लाह के अलावा कोई ख़ुदा नही है और उसका कोइ शरीक नही है और आप

وَ اَنَّكَ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ رِسَالاَتِ رَبِّكَ

अल्लाह के रसूल हैं और आपही हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हैं। आपने पैग़ामाते इलाही को पहुचाया

وَ نَصَحْتَ لِاُمَّتِكَ وَ جَاهَدْتَّ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ

है। और उम्मतको नसीहत की है। राहे ख़ुदा मे हिकमत और नेक मौज़ा के साथ जिहाद किया है। और जो

الْحَسَنَةِ وَاَدَّيْتَ الَّذِيْ عَلَيْكَ مِنَ الْحَقِّ وَ اَنَّكَ قَدْ رَؤُفْتَ

हक़ आपके ज़िम्मे था उसे अदा कर दिया है। आपने मोमिनीन पर मेहेरबानी और काफ़रों पर सख़ती की।

بِالْمُؤْمِنِيْنَ وَ غَلَظْتَ عَلَى الْكَافِرِيْنَ وَ عَبَدْتَّ اللّٰهَ مُخْلِصًا حَتّٰى

और ख़ुलूस के साथ अल्लाह की इबादत की यहाँ तक के दुनिया से चले गए। परवरदिगार आपको

اَتَاكَ الْيَقِيْنُ فَبَلَغَ اللّٰهُ بِكَ اَشْرَفَ مَحَلِّ الْمُكَرَّمِيْنَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

मुकर्रमीन की बुलंदतरीन मनिज़ल पर पहुचाए। शुक्र है उस ख़ुदा का जिसने हमको आपके ज़रिए शिर्क

الَّذِيْ اسْتَنْقَذَنَا بِكَ مِنَ الشِّرْكِ وَ الضَّلاَلِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى

और ज़लालत से निकाल लिया है। ख़ुदाया मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़रमा और अपनी

مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَاجْعَلْ صَلَوَاتِكَ وَ صَلَوَاتِ مَلاَئِكَتِكَ وَ اَنْبِيَآئِكَ

अपने मलाएका अंबिया व मुरसलीन व इबादे सालिहीन, तमाम अहले समावात व अर्ज़ और तमाम

الْمُرْسَلِيْنَ وَ عِبَادِكَ الصَّالِحِيْنَ وَ اَهْلِ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرَضِيْنَ وَ

अव्वलीन व आख़रीन के तसबीह गुज़ारों की सलवात को हज़रत मुहम्मद पर क़रार दे जो तेरे बंदे तेरे

مَنْ سَبَّحَ لَكَ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ مِنَ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ عَلٰى

रसूल नबीए अमीन मुनतिख़ब पसंदीदा मुख़लिस और ख़ालिस बंदे हैं जिनको तूने मुंतिख़ब किया है। और

مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَ رَسُوْلِكَ وَ نَبِيِّكَ وَ اَمِيْنِكَ وَ نَجِيْبِكَ وَ حَبِيْبِكَ

उन्हे फ़ज़्ल फ़ज़ीलत वसीला और बुलंदतरीन दर्जा इनायत फ़रमाया है। उन्हे उस मक़ामे महमूद तक पहुचा

وَ سَفِيِّكَ وَصِفْوَتِكَ وَ خَاصَّتِكَ وَ خَالِصَتِكَ وَ خِيَرَتِكَ مِنْ

दे जिस पर अव्वलीन व आख़रीन ग़ब्ता करें। ख़ुदाया तूने फ़रमाया है के अगर लोग अपने आप पर ज़ुल्म

خَلْقِكَ وَ اَعْطِهِ الْفَضْلَ وَالْفَضِيْلَةَ وَالْوَسِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ

करने के बाद पैगंबर के पास आ जाएँ और अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करें और पैगंबर भी उनके हक़ मे

الرَّفِيْعَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُوْداً يَّغْبِطُهٗ بِهِ الْاَوَّلُوْنَ وَالْاٰخِرُوْنَ

इस्तिग़फ़ार करदे तो यक़ीनन अल्लाह को तौबा क़ुबूल करनेवाला और मेहेरबान पाएंगे। ख़ुदाया मै तेरे नबी

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ قُلْتَ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَلَمُوْا اَنْفُسَهُمْ جَاؤُكَ

की बारगाह मे आ गया हूँ इस्तिग़फ़ार करते हुए और गुनाहों से तौबा करते हुए। लेहाज़ा मुहम्मद व आले

فَاسْتَغْفَرُوْا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّاباً

मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़रमा और मेरे गुनाहों को माफ़ करदे। ऐ मेरे सरदार मै आपके और आपके

رَّحِيْمًا اِلٰهِیْ فَقَدْ اَتَيْتُ نَبِيَّكَ مُسْتَغْفِرًا تَآئِباً مِّنْ ذُنُوْبِیْ فَصَلِّ

अहले बैत के ज़रिए ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्जे हूँ। जो मेरा और आपका दोनो का रब है। वो मेरे गुनाहों को

عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَاغْفِرْهَالِیْ يَا سَيِّدَنَا اَتَوَجَّهُ بِكَ وَ بِاَهْلِ بَيْتِكَ

माफ़ करदे। ऐ हबीबे क़ुलूब हम आपके ग़म मे सोगवार हैं। और ये बहुत बड़ी मुसीबत है के वही का

फिर तीन बार कहे: اِلَی اللّٰهِ تَعَالٰی رَبِّكَ وَ رَبِّیْ لِيَغْفِرَ لِیْ

सिमसिला मुनक़ता हो गया है और हमने आपको खो दिया है।

फिर कहे: اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

हम सब अल्लाह के लिए हैं और उसी की बारगाह में पलट कर जानेवाले हैं।

اُصِبْنَا بِكَ يَا حَبِيْبَ قُلُوْبِنَا فَمَا اَعْظَمَ الْمُصِيْبَةَ بِكَ حَيْثُ انْقَطَعَ

ऐ मेरे सरदार। ऐ ख़ुदा के रसूल आप पर और आपके अहले बैते ताहिरीन पर सलवात हो। ये दिन

عَنَّا الْوَحْیُ وَ حَيْثُ فَقَدْنَاكَ فَاِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ يَا سَيِّدَنَا يَا

आपका है और इस दिन मे मै आपका महमान हूँ और फिर आपकी पनाह मे हूँ। लेहाज़ा आप मेरी

رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَ عَلٰی اٰلِ بَيْتِكَ الطَّاهِرِيْنَ هٰذَا يَوْمُ

ज़ियाफ़त फ़रमाएँ और मुझे पनाह दें के आप करीम हैं और ज़ियाफ़त को पसंद करते हैं और पनाह देने

السَّبْتِ وَهُوَ يَوْمُكَ وَ اَنَا فِيْهِ ضَيْفُكَ وَ جَارُكَ فَاَضِفْنِیْ وَ اَجِرْنِیْ فَاِنَّكَ

पर मामूर हैं। मेरी ज़ियाफ़त फ़रमाएं और बेहतरीन ज़ियाफ़त फ़रमाएं और मुझे पनाह दें और बेहतरीन

كَرِيْمٌ تُحِبُّ الضِّيَافَةَ وَ مَأْمُوْرٌ بِالْاِجَارَةِ فَاَضِفْنِیْ وَ اَحْسِنْ ضِيَافَتِیْ وَ

पनाह दें। आपको उस मांज़िलत का वास्ता जो अल्लाह की आपकी और आपके अहलेबैत के

اَجِرْنَا وَ اَحْسِنْ اِجَارَتَنَا بِمَنْزِلَةِ اللهِ عِنْدَكَ وَ اٰلِ بَيْتِكَ وَ بِمَنْزِلَتِهِمْ

नज़दीक है। और आप सब की अल्लाह के नज़दीक है। और उस इल्म का वास्ता जो मालिक ने

عِنْدَهٗ وَ بِمَا اسْتَوْدَعَكُمْ مِنْ عِلْمِهٖ فَاِنَّهٗ اَكْرَمُ الْاَكْرَمِيْنَ.

आपको इनायत किया है के वो बेहतरीन करम करनेवाला है।

लेखक: मैं जब चाहता हूँ के हज़रत की यह ज़ियारत पढ़ूं तो पहले वह ज़ियारत पढ़ता हूँ जो हज़रत इमाम रज़ा (अ) ने बज़ंती को तालीम की थी। इसके बाद यह ज़ियारत पढ़ता हूँ। इस ज़ियारत की कैफ़यत सनदे सही के साथ इबने अबी नस्र बज़ंती से यूं नक़्ल की गई है।
उन्होंने इमामे रेज़ा (अ) से पूछा के नमाज़ के बाद किस तरह रसूले अक्रम (स) पर सलवातो सलाम पढ़ा जाए तो आप (अ) ने फ़रमाया यूँ कहो:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ

सलाम हो आप पर ऐ रसूले ख़ुदा। और ख़ुदा की रहमत व बरकत हो आप पर। सलाम हो आप पर

عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدُ بْنَ عَبْدِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خِيَرَةَ اللهِ اَلسَّلَامُ

ऐ हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सलाम हो आप पर ऐ बरगुज़ीदए ख़ुदा। सलाम हो आप पर ऐ

عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صِفْوَةَ اللهِ اَلسَّلَامُ

हबीबे ख़ुदा। सलाम हो आप पर ऐ दोस्त मुख़लिसे परवरदिगार। सलाम हो आप पर ऐ अमीने वही

عَلَيْكَ يَا اَمِيْنَ اللهِ اَشْهَدُ اَنَّكَ رَسُوْلُ اللهِ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ مُحَمَّدُ بْنُ

ए ख़ुदा। मै गवाही देता हूँ के आप अल्लाह के रसूल हैं। आपही हज़रत मुहम्मद बिन अबदुल्लाह हैं

عَبْدِ اللهِ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ نَصَحْتَ لِاُمَّتِكَ وَ جَاهَدْتَ فِي سَبِيْلِ

और मै गवाही देता हूँ के आपने अपनी उम्मत को नसीहत की है। राहे ख़ुदा मे जिहाद किया है।

رَبِّكَ وَ عَبَدْتَهُ حَتّٰى اَتَاكَ الْيَقِيْنُ فَجَزَاكَ اللهُ يَا رَسُوْلَ اللهِ

और ता हयात उसकी इबादत करते रहे हैं। या रासूल अल्लाह ख़ुदा आपको बेहतरीन जज़ादे जो

اَفْضَلَ مَا جَزٰى نَبِيًّا عَنْ اُمَّتِهٖ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ

किसी नबी को उसकी उम्मत की तरफ़से दी गई है। ख़ुदाया मुहम्मद व आले मुहम्मद पर वो

اَفْضَلَ مَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَ آلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ

बेहतरीन रहमत नाज़िल फ़रमा जो तूने इब्राहीम और आले इब्राहीम पर नाज़ल की है के तू साहेबे

مَجِيْدٌ.

मज्द व बढ़कपन है।

रविवार के दिन की ज़ियारत

ज़ियारते हज़रत अमीरूल मोमिनीन (अ)

उस व्यक्ति की रिवायत की बिना पर जिसने जागने की हालत में देखा है के हज़रत साहेबु॰ज्ज़मान (अ.त.फ.श.) इन कलेमात के ज़रिये इतवार के दिन अमीरूल मोमिनीन (अ) की ज़ियारत पढ़ रहे थे।

اَلسَّلاَمُ عَلَى شَّجَرَةِ النَّبَوِيَّةِ وَالدَّوْحَةِ الْهَاشِمِيَّةِ الْمُضِيْئَةِ

सलाम हो नबुव्वत के शजरए तय्यबा और बनी हाशिम के अज़ीम दरखते करम पर जो रौशनी देने वाला है

الْمُثْمِرَةِ الْمُوْنِقَةِ بِالْاِمَامَةِ وَ عَلٰى اَهْلِ بَيْتِكَ الطَّيِّبِيْنَ

और नबुव्वत का फल देने वाला और इमामत के फूलोंसे सजा हुआ है। और आपके दोनो हम साए आदम

الطَّاهِرِيْنَ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ وَ عَلَى الْمَلاَئِكَةِ الْمُحْدِقِيْنَ بِكَ

व नूह पर सलाम हो। सलाम हो आप पर और आपके अहलेबैते तय्यबीन व ताहिरीन पर। सलाम हो आप

وَالْحَآفِّيْنَ بِقَبْرِكَ يَا مَوْلاَىَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ هٰذَا يَوْمُ

पर और उन मलाएका पर जो आपकी क़ब्र के चारों ओर जमा हैं। ऐ मौला ऐ अमीरूल मोमिनीन ये

الْاَحَدِ وَ هُوَ يَوْمُكَ وَ بِاسْمِكَ وَ اَنَا ضَيْفُكَ فِيْهِ وَ جَارُكَ

रवीवार का दिन है जो आपका है और आपके नाम से है। और इसमे मै आपका मेहमान हूँ। और आपकी

فَاَضِفْنِىْ يَا مَوْلاَىَ وَ اَجِرْنِىْ فَاِنَّكَ كَرِيْمٌ تُحِبُّ الضِّيَافَةَ وَ

पनाह मे हूँ मेरी ज़ियाफ़त फ़रमाएं और मुझे पनाह दें के आप करीम है और ज़ियाफ़त को पसंद करते हैं

مَأْمُوْرٌ بِالْاِجَارَةِ فَافْعَلْ مَا رَغِبْتُ اِلَيْكَ فِيْهِ وَ رَجَوْتُهٗ

और पनाह देने के मामूर हैं। जो मै चाहता हूँ वही बरताओ मेरे साथ करें। और जो मेरी उम्मीदें है उन्हें पूरा

مِنْكَ بِمَنْزِلَتِكَ وَ اٰلِ بَيْتِكَ عِنْدَ اللهِ وَ مَنْزِلَتِهٖ عِنْدَكُمْ وَ

फ़रमाएं। उस मांज़िलत के वास्ते से जो आपको और आपके घरवालों को अल्लाह के यहाँ हासिल है और

بِحَقِّ ابْنِ عَمِّكَ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ سَلَّمَ وَ

जो ख़ुदा की मंजिलत आप हज़रात के नज़दीक है और आपके भाई रसूले अक्रम के हक़ का वास्ता

عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ

अल्लाह आप सब पर रहमतें नाज़िल करे।

ज़ियारते हज़रत फ़ातेमा ज़हरा (स)

اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا مُمْتَحَنَةُ امْتَحَنَكِ الَّذِىْ خَلَقَكِ فَوَجَدَكِ لِمَا

सलाम हो उस साबिरा पर जिसका इमतिहान परवरदिगार ने लिया और उसे साबिर पाया। मै आपकी

امْتَحَنَكِ صَابِرَةً اَنَا لَكِ مُصَدِّقٌ صَابِرٌ عَلٰى مَا اَتٰى بِهٖ اَبُوْكِ وَ وَصِيُّهٗ

तसदीक़ करता हूँ और आपके पूजय पिता और उनके वसी के लाए हुए क़ानून पर साबिर व शाकिर हूँ।

صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْهِمَا وَ اَنَا اَسْئَلُكِ اِنْ كُنْتُ صَدَّقْتُكِ اِلاَّ اَلْحَقْتِنِىْ

आपसे मेरी यही गुज़ारिश है के अगर मेरी तसदीक़ वाक़ई है तो मुझे उन हज़रात की बारगाह तक पहुचा

بِتَصْدِيْقِىْ لَهُمَا لِتُسَرَّ نَفْسِىْ فَاشْهَدِىْ اَنِّىْ ظَاهِرٌ بِوَلَايَتِكِ وَ وِلَايَةِ

दीजिय ताके मेरा दिल ख़ुश हो जाए। आप गवाह रहें के मैं आप और आपके घरवालोंकी मुहब्बत के

اٰلِ بَيْتِكِ صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ.

तुफ़ैल तय्यब व ताहिर हूँ। और उनकी मवद्दत।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا مُمْتَحَنَةُ اِمْتَحَنَكِ الَّذِیْ خَلَقَكِ قَبْلَ اَنْ يَخْلُقَكِ

सलाम हो आप पर ऐ मुमतहेना जिसकी परिक्षा उसकी ख़िलकत से पहले किया गया था। और आपने

وَ كُنْتِ لِمَا امْتَحَنَكِ بِهٖ صَابِرَةً وَنَحْنُ لَكِ اَوْلِيَآءُ مُصَدِّقُوْنَ وَ

अपनी परिक्षा मे सबर किया। हम आप के चाहनेवले और जो कुछ भी आपके पूजय पिता लाए (स)

لِكُلِّ مَا اَتٰى بِهٖ اَبُوْكِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ آلِهٖ وَ سَلَّمَ وَاَتٰى بِهٖ وَصِيُّهٗ

उसकी तसदीक़ करनेवाले हैं। और जो कुछ उनके वसी (अ) लाए हैं उसके लिए सरापा तसलीम हैं। और

عَلَيْهِ السَّلَامُ مُسَلِّمُوْنَ وَ نَحْنُ نَسْاَلُكَ اَللّٰهُمَّ اِذْ كُنَّا مُصَدِّقِيْنَ

तुझसे हमारा सवाल है बारे इलाहा के हम उनकी तसदीक़ करनेवाले हैं। तो हमारी इस तसदा॰ाक की

لَهُمْ اَنْ تُلْحِقَنَا بِتَصْدِيْقِنَا بِالدَّرَجَةِ الْعَالِيَةِ لِنُبَشِّرَ اَنْفُسَنَا بِاَنَّا

बिनापर हमे उनके बुलंदतरीन दरजात से मिलादे ताके हम अपने आपको ख़ुशखबरी दे सकें के हम उनकी

قَدْ طَهُرْنَا بِوَلَايَتِهِمْ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ.

विलायत के ज़रिए पाक व पाकीज़ा हो गए।

सोमवार के दिन इमाम हसन और इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत

सोमवार का दिन इमाम हसन और इमाम हुसैन (अ) का है।

सोमवार के दिन इमाम हसन (अ) की ज़ियारत

اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَابْنَ رَسُوْلِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا بْنَ اَمِيْرِ

सलाम हो आप पर ऐ रसूले रब्बिल आलामीन के फ़रज़्ंद। सलाम हो आप पर ऐ

الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا بْنَ فَاطِمَةَ الزَّهْرَآءِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا

अमीरूल मोमिनीन के दिलबंद। सलाम हो आप पर ऐ फ़ातिमा ज़हरा के लख़ते जिगर।

حَبِيْبَ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا صِفْوَةَ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْنَ اللهِ

सलाम हो आप पर ऐ हबीबे ख़ुदा। सलाम हो आप पर ऐ मुनतिख़बे ख़ुदा। सलाम हो

اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا نُوْرَ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا

आप पर ऐ अमीने ख़ुदा। सलाम हो आप पर ऐ हुज्जते ख़ुदा। सलाम हो आप पर ऐ

صِرَاطَ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا بَيَانَ حُكْمِ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا نَاصِرَ

रब्बानी नूर। सलाम हो आप पर ऐ सिराते मुसतक़ीम। सलाम हो आप पर ऐ बय्यने हुकमे

دِيْنِ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ اَيُّهَا السَّيِّدُ الزَّكِيُّ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْبَرُّ

इलाही। सलाम हो आप पर ऐ नासिरे दीने किरदगार। सलाम हो आप पर ऐ सय्यदे

الْوَفِيُّ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْقَآئِمُ الْأَمِيْنُ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ اَيُّهَا

पाकीज़ा सिफ़ात। सलाम हो आप पर ऐ मोसिने बावफ़ा। सलाम हो आपपर ऐ क़ायम

الْعَالِمُ بِالتَّاوِيْلِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْهَادِى الْمَهْدِيُّ اَلسَّلاَمُ

अमानतदार। सलाम हो आप पर ऐ आलिमे तावीले क़ुरान। सलाम हो आप पर ऐ हादीए

عَلَيْكَ اَيُّهَا الطَّاهِرُ الزَّكِيُّ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ اَيُّهَا التَّقِيُّ النَّقِيُّ اَلسَّلاَمُ

महदी। सलाम हो आप पर ऐ ताहिरे ज़की। सलाम हो आप पर ऐ तक़ी नक़ी। सलाम हो

عَلَيْكَ اَيُّهَا الْحَقُّ الْحَقِيْقُ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الشَّهِيْدُ الصِّدِّيْقُ

आप पर ऐ हक़्क़े साबित। सलाम हो आप पर ऐ शहीदे सादिक़। सलाम हो आप पर ऐ

اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا اَبَا مُحَمَّدٍ الْحَسَنَ بْنَ عَلِيٍّ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ.

अबू मुहम्मद अल हसन बिन अली सब रहमतें और बरकतें आपके लिए हैं।

सोमवार के दिन इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत

اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَابْنَ رَسُوْلِ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَابْنَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ

सलाम हो आप पर ऐ फ़रजंदे रसूल। सलाम हो आप पर ऐ फ़रजंदे अमीरूल मोमिनीन। सलाम हो

اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَابْنَ سَيِّدَةِ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَا اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ اَقَمْتَ

आप पर ऐ फ़रजंदे सय्यदते निसाइल आलमीन। मै गवाही देता हूँ के बे शक आपने नामज़ कायम

الصَّلٰوةَ وَ اٰتَيْتَ الزَّكٰوةَ وَ اَمَرْتَ بِالْمَعْرُوْفِ نَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ

की है ज़कात अदा की है। नेकियों का हुकुम गिया है। बुराईयों से रोका है। अल्लाह की सच्ची

عَبَدْتَّ اللهَ مُخْلِصًا وَ جَاهَدْتَّ فِي اللهِ حَقَّ جِهَادِهٖ حَتّٰى اَتَاكَ الْيَقِيْنُ

इबादत की है। राहे ख़ुदा मे मुकम्मल जिहाद किया है। यहाँ तक के शहादत से हमकिनार हो गए

فَعَلَيْكَ السَّلَامُ مِنِّيْ مَا بَقِيْتُ وَ بَقِيَ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَ عَلٰى آلِ بَيْتِكَ

हैं। मेरी तरफ़ से आप पर और आपके अहलेबैते ताय्यबीनत ताहिरीन पर सलाम। उस समय तक

الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ اَنَا يَا مَوْلَايَ مَوْلًى لَّكَ وَلِاٰلِ بَيْتِكَ سِلْمٌ لِمَنْ

जब तक मै बाक़ी रहूँ और ये रात व दिन बाक़ी हैं। मै आपका और आपके घरवालोंका ग़ुलाम

سَالَمَكُمْ وَ حَرْبٌ لِمَنْ حَارَبَكُمْ مُؤْمِنٌ بِسِرِّكُمْ وَ جَهْرِكُمْ وَ ظَاهِرِكُمْ

हूँ। जिस से आपकी सुलह है उस से सुलाह करनेवाला हूँ। और जिस से आपकी जंग है उस से

وَ بَاطِنِكُمْ لَعَنَ اللّٰهُ اَعْدَآئَكُمْ مِنَ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ وَ اَنَا اَبْرَءُ اِلَى اللّٰهِ

जंग करनेवाला हूँ। आपके खुले व छिपे सब पर ईमान रखता हूँ। ख़ुदा अव्वलीन व आा॰खिरीन

تَعَالٰى مِنْهُمْ يَا مَوْلَايَ يَا اَبَا مُحَمَّدٍ يَا مَوْلَايَ يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ هٰذَا يَوْمُ

सब मे से आपके दुशमनो पर लानत करे। मै उन सब से बेजार हूँ। ऐ मेरे मौला हसन और मेरे

الْاِثْنَيْنِ وَهُوَ يَوْمُكُمَا وَ بِاسْمِكُمَا وَ اَنَا فِيْهِ ضَيْفُكُمَا فَاَضِيْفَانِيْ وَ

आक़ा हुसैन। आज सोमवार का दिन है और ये दिन आपके नाम से मनसूब है। मै आप हज़रात

اَحْسِنَا ضِيَافَتِيْ فَنِعْمَ مَنِ اسْتُضِيْفَ بِهٖ اَنْتُمَا وَ اَنَا فِيْهِ مِنْ جَوَارِكُمَا

का महमान हूँ। लेहाज़ा मेरी बेहतरीन ज़ियाफ़त फ़रमाईए। आप से बेहतर ज़ियाफ़त करनेवाला

فَاَجِيْرَانِيْ فَاِنَّكُمَا مَاْمُوْرَانِ بِالضِّيَافَةِ وَالْاِجَارَةِ فَصَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكُمَا

कौन होगा। मै आपकी ख़िदमत मे हूँ। मुझे पनाह दीजिए के आपसे अच्छा पनाह देनेवाला कौन

وَاِلِكُمَا الطَّيِّبِيْنَ.

होगा। ख़ुदा आप पर और आपकी पाकीज़ा औलाद पर रहमतें भेजे।

मंगलवार की ज़ियारत

मंगल का दिन हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ), हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ) और हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ) का है। उन बुज़ुर्गों की ज़ियारत यह है:

اَلسَّلاَمُ عَلَيْكُمْ يَا خُزَّانَ عِلْمِ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكُمْ يَا تَرَاجِمَةَ وَحْيِ

सलाम हो आप हज़रात पर ऐ ख़ुदा के इल्म के ख़ज़ानेदारों। सलाम हो आप हज़रात पर ऐ वही ए ख़ुदा के

اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكُمْ يَا اَئِمَّةَ الْهُدٰى اَلسَّلاَمُ عَلَيْكُمْ يَا اَعْلاَمَ

तरजुमानो। सलाम हो आप हज़रात पर ऐ आइम्मा ए ख़ुदा। सलाम हो आप हज़रात पर ऐ तक़वा के

التُّقٰى اَلسَّلاَمُ عَلَيْكُمْ يَا اَوْلاَدَ رَسُوْلِ اللهِ اَنَا عَارِفٌ بِحَقِّكُمْ

परचमदार। सलाम हो आप हज़रात पर ऐ औलादे रसूले ख़ुदा। मै आप हज़रात के हक़ का आरिफ़ और

مُسْتَبْصِرٌ بِشَانِكُمْ مُعَادٍ لِاَعْدَآئِكُمْ مَوَالٍ لِّاَوْلِيَائِكُمْ بِاَبِيْ اَنْتُمْ

आपकी शानका जाननेवाला हूँ। आपके दुश्मनो का दुश्मन और आपके दोस्तों का दोस्त हूँ। आप पर मेरे

وَ اُمِّيْ صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْكُمْ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَتَوَالٰى اٰخِرَهُمْ كَمَا تَوَالَيْتُ

माँ बाप क़ुरबान हों। और आप पर परवरदिगार की रहमत नाज़ल हो। ख़ुदाया मै इन हज़रात के अव्वल व

اَوَّلَهُمْ وَ اٰبَرَءُ مِنْ كُلِّ وَلِيْجَةٍ دُوْنَهُمْ وَ اَكْفُرُ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ

आख़िर सब को दोस्त रखता हूँ। और उनके गैरों की मुहब्बत से बिलकुल बरी हूँ। मै हर तागूत व सरकश

وَاللَّاتِ وَالْعُزّٰى صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْكُمْ يَا مَوَالِيَّ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ

और लात व उ॰ज्ज़ा से इन्कार रखता हूँ। मेरे आक़ाओं आप पर सलवात व रहमत व बरकाते परवरदिगार

بَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الْعَابِدِيْنَ وَ سُلَالَةَ الْوَصِيِّيْنَ

हो। सलाम हो आप पर ऐ आबिदीन के सरदार और औलिया के ख़ुलासा ख़ानदान। सलाम हो आप पर ऐ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بَاقِرَ عِلْمِ النَّبِيِّيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَادِقًا

बाक़रे उलूमे अंबियाए मुरसलीन। सलाम हो आप पर ऐ क़ौलो फ़ेल के सादिक़ व मुसद्दिक। मेरे सरकारों

مُّصَدَّقًا فِي الْقَوْلِ وَالْفِعْلِ يَا مَوَالِيَّ هٰذَا يَوْمُكُمْ وَهُوَ يَوْمُ الثُّلَثَآءِ

ये मंगल का दिन है। आप हज़रात का दिन है। और मै आप हज़रात का मेहमान। और आपकी पनाह का

وَ اَنَا فِيْهِ ضَيْفٌ لَّكُمْ وَ مُسْتَجِيْرٌ بِكُمْ فَاَضِيْفُوْنِيْ وَ اَجِيْرُوْنِيْ

तलबगार हूँ। आप मेरी ज़ियाफ़त फ़रमाएं और मुझे पनाह दें। आप हजरात के अपने और अपने ख़ानदान

بِمَنْزِلَةِ اللهِ عِنْدَكُمْ وَ اٰلِ بَيْتِكُمُ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ.

के लोगों के नज़दीक अजमत व मांज़िलते परवरदिगार का वासता।

बुद्धवार की ज़ियारत

बुध के दिन इमाम मूसा बिन जाफ़र, इमाम रेज़ा, इमाम मोहम्मद तक़ी और इमाम अली नक़ी (अ) से मख़सूस है। और ज़ियारत यह है:

اَلسَّلاَمُ عَلَيْكُمْ يَا اَوْلِيَآءَ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكُمْ يَا حُجَجَ اللهِ اَلسَّلاَمُ

सलाम हो आप पर ऐ औलियाए ख़ुदा। सलाम हो आप पर ऐ हुज्जते परवरदिगार। सलाम हो

عَلَيْكُمْ يَا نُوْرَ اللهِ فِيْ ظُلُمَاتِ الْاَرْضِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكُمْ صَلَوَاتُ اللهِ

आप पर ऐ ज़मीन के अंधेरे की तेज़ रौशनी। सलवातो सलाम हो आप पर और आपके अहले बैते

عَلَيْكُمْ وَ عَلٰى اٰلِ بَيْتِكُمُ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ بِاَبِيْ اَنْتُمْ وَ اُمِّيْ لَقَدْ

तय्यबीन व ताहिरीन पर। मेरे माँ बाप आपपर क़ुरबान के आपने ख़ुदा की पुर ख़ुलूस इबादत की

عَبَدْتُّمُ اللهَ مُخْلِصِيْنَ وَ جَاهَدْتُّمْ فِيْ اللهِ حَقَّ جِهَادِهٖ حَتّٰى اَتٰيكُمُ

है और मरते दम तक राहे ख़ुदा मे जिहाद किया है। ख़ुदा जिन व इन्स मे आपके सारे दुश्मनों पर

الْيَقِيْنُ فَلَعَنَ اللهُ اَعْدَآئَكُمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَجْمَعِيْنَ وَ اَنَا اَبْرَءُ اِلَى

लानत करे के मै उन सबसे बरी व बेज़ार हूँ। मेरे मौला अबू इब्राहीम मूसा इब्ने जाफ़र मेरे मौला

اللهِ وَاِلَيْكُمْ مِنْهُمْ يَا مَوْلاَىَ يَا اَبَا اِبْرَاهِيْمَ مُوْسَى بْنَ جَعْفَرٍ يَا مَوْلاَىَ

अबुल हसन अली इब्ने मूसा रज़ा मेरे मौला अबू जाफ़र मुहम्मद बिन अली मेरे मौला अबुल

اَبَا الْحَسَنِ عَلِيَّ بْنَ مُوْسٰى يَا مَوْلاَىَ يَا اَبَا جَعْفَرٍ مُحَمَّدَ بْنَ عَلِيٍّ يَا مَوْلاَىَ يَا

हसन अली बिन मुहम्मद मै आप हज़रात का ग़ुलाम और आपके ज़ाहिर व बातिन पर ईमान

اَبَا الْحَسَنِ عَلِيَّ بْنَ مُحَمَّدٍ اَنَا مَوْلًى لَّكُمْ مُؤْمِنٌ بِسِرِّكُمْ وَ جَهْرِكُمْ

रखनेवाला हूँ। मै आज बुध्दवार के दिन आप हज़रात का मेहमान और आपकी पनाह मे हूँ। आप

مُتَضَيِّفٌ بِكُمْ فِيْ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَهُوَ يَوْمُ الْاَرْبِعَآءِ وَ مُسْتَجِيْرٌ بِكُمْ

मेरी जियाफ़त फ़रमाएं और मुझे पनाह दें। आपको आपके अहमे बैते ताय्यबीन व ताहिरीन का

فَاَضِيْفُوْنِيْ وَ اَجِيْرُوْنِيْ بِاٰلِ بَيْتِكُمُ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ.

वास्ता।

गुरूवार की ज़ियारत

जुमेरात का दिन इमाम हसन अस्करी (अ) का दिन है और उनकी ज़ियारत यह है:

اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ وَ خَالِصَتَهٗ

सलाम हो आप पर ऐ वलीए ख़ुदा। सलाम हो आप पर ऐ हुज्जते परवरदिगार। सलाम हो आप

اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا اِمَامَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ وَارِثَ الْمُرْسَلِيْنَ وَ حُجَّةَ رَبِّ

पर ऐ इमामे मोमिनीन और वारिसे मुरसलीन। ख़ुदा आप और आपके घरवालों पर रहमतें नाज़ील

الْعَالَمِيْنَ صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ وَ عَلٰى اٰلِ بَيْتِكَ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ يَا

फ़रमाए। ऐ मेरे मौला हजरत अबू मुहम्मद अल हसन बिन अली मै आप और आपके

مَوْلاَيَ يَا اَبَا مُحَمَّدٍ الْحَسَنَ بْنَ عَلِيٍّ اَنَا مَوْلًى لَّكَ وَلِاٰلِ بَيْتِكَ وَ هٰذَا

घरवालोंका गुलाम हूँ। और आज गुरूवार का दिन आपका दिन है। लेहाज़ा मै आपका मेहमान हूँ

يَوْمُكَ وَهُوَ يَوْمُ الْخَمِيْسِ وَ اَنَا ضَيْفُكَ فِيْهِ وَ مُسْتَجِيْرٌ بِكَ فِيْهِ

आपकी पनाह मे हूँ। आप मेरी ख़ातिर फ़रमाएं और मुझे पनाह दें। मै आपको आपके तय्यब व

فَاَحْسِنْ ضِيَافَتِيْ وَاِجَارَتِيْ بِحَقِّ اٰلِ بَيْتِكَ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ.

ताहिर अहले बैत का वास्ता देता हूँ।

जुमे की ज़ियारत

जुमे का दिन इमामे ज़माना (अ.त.फ.श.) का दिन है, उनही से मनसूब है और यह वही दिन है जिस दिन इमाम ज़हूर फ़रमाएंगे। उनकी ज़ियारत यह है:

اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ فِيْ اَرْضِهٖ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا عَيْنَ اللهِ فِيْ

सलाम हो आप पर ऐ रूए ज़मीन के हुज्जते परवरदिगार। सलाम हो आप पर ऐ ख़ुदा के निगरान

خَلْقِهٖ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا نُوْرَ اللهِ الَّذِيْ يَهْتَدِيْ بِهِ الْمُهْتَدُوْنَ وَ يُفَرِّجُ

व ज़िम्मेदार। सलाम हो आप पर ऐ नूरे ख़ुदा जिस्से तालिबाने हक़ हिदायत पाते हैं और साहिबाने

بِهٖ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْمُهَذَّبُ الْخَآئِفُ اَلسَّلاَمُ

ईमान की मुसीबतें दूर होती हैं। सलाम हो आप पर ऐ साहिबे तहज़ीबे ख़ौफे ख़ुदा रखनेवाले।

عَلَيْكَ اَيُّهَا الْوَلِيُّ النَّاصِحُ السَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا سَفِيْنَةَ النَّجَاةِ اَلسَّلاَمُ

सलाम हो आप पर ऐ वलीए नासेह। सलाम हो आप पर ऐ सफ़ीनए नजात। सलाम हो आप पर ऐ

عَلَيْكَ يَا عَيْنَ الْحَيَاةِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ وَ عَلٰى آلِ بَيْتِكَ

सरचश्मए हयात। सलाम हो आप पर ख़ुदा आप और आपके पाकीजा घरवालों पर रहमतें नाज़ल

الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ عَجَّلَ اللهُ لَكَ مَا وَعَدَكَ مِنَ

फ़रमाए। सलाम हो आप पर ख़ुदा ने आपसे जिस नुसरत व ज़हूर का वादा फ़रमाया है। उसमे

النَّصْرِ وَ ظُهُوْرِ الْاَمْرِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا مَوْلاَىَ اَنَا مَوْلاَكَ عَارِفٌ

जल्दी करें। सलाम हो आप पर ऐ मौला मै आपका ग़ुलाम और आपके शुरू व अंत का

بِاُولٰيكَ وَ اُخْرٰيكَ اَتَقَرَّبُ اِلَى اللهِ تَعٰالىٰ بِكَ وَ بِآلِ بَيْتِكَ وَاَنْتَظِرُ

माननेवाला हूँ। आपके घरवलों से ख़ुदा की क़ुरबत चाहता हूँ। और आपके ज़हूर का मुनतिज़र

ظُهُوْرَكَ وَ ظُهُوْرَ الْحَقِّ عَلٰى يَدَيْكَ وَ اَسْئَلُ اللهَ اَنْ يُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ

हूँ। के आपके हाथों पर हक़ का ज़हूर होगा। और ख़ुदा से सवाल करता हूँ के मुहम्मद व आले

آلِ مُحَمَّدٍ وَ اَنْ يَجْعَلَنِيْ مِنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ لَكَ وَالتَّابِعِيْنَ وَالنَّاصِرِيْنَ

मुहम्मद पर रहमत नाज़िल फ़रमाए और मुझे आपके मुंन्तजरीन नासिरीन व आपके माननेवालों

لَكَ عَلٰى اَعْدَآئِكَ وَالْمُسْتَشْهَدِيْنَ بَيْنَ يَدَيْكَ فِيْ جُمْلَةِ اَوْلِيَآئِكَ يَا

और दुश्मनों के मुक़ाबले मे आपकी नुसरत करनेवालों और आपके सामने जामे शहादत पीनेवाले

مَوْلاَىَ يَا صَاحِبَ الزَّمَانِ صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْكَ وَ عَلٰى آلِ بَيْتِكَ هٰذَا

साथियों मे क़रार देदे। ऐ मेरे मौला ऐ साहिबुज्जमान ख़ुदा वंदे आलम की रहमतें आप पर और

يَوْمُ الْجُمُعَةِ وَهُوَ يَوْمُكَ الْمُتَوَقَّعُ فِيْهِ ظُهُوْرُكَ وَالْفَرَجُ فِيْهِ

आपके घर वालों पर। ये जुमे का दिन आपका दिन है जिसमे आपके ज़हूर की तव॰व॰।को और

لِلْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى يَدَيْكَ وَ قَتْلُ الْكَافِرِيْنَ بِسَيْفِكَ وَ اَنَا يَا مَوْلَاىَ فِيْهِ

मोमिनीन के राहतो इतमिनान की उम्मीद है। आज के दिन कुफ़्फ़ार आपके हाथों से क़त्ल होंगे।

ضَيْفُكَ وَجَارُكَ وَ اَنْتَ يَا مَوْلَاىَ كَرِيْمٌ مِنْ اَوْلَادِ الْكِرَامِ وَ مَأْمُوْرٌ

और मौला मै आपका मेहमान और आपके ज़ेरे साया हूँ। और मौला आप करीम और औलादे

بِالضِّيَافَةِ وَالْاِجَارَةِ فَاَضِفْنِىْ وَ اَجِرْنِىْ صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْكَ وَ عَلٰى اَهْلِ

किराम मे से हैं। आपको ख़ातिरदारी व पनाह देने का हुकम दिया गया है। आप ख़ातिरदारी

بَيْتِكَ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ.

फ़रमाएँ और मुझे पनाह दें। अल्लाह आप और आपके पाकीज़ा घराने पर रहमतें नाज़ल फ़रमाए।

सय्यद इब्ने ताऊस ने कहा के मैं इस ज़ियारत के बाद हज़रत की तरफ़ इशारा करके यह शेर पढ़ा करता हूँ:

نَزِيلُكَ حَيثُ مَا اتَّجَهَتْ رِكَابِى

जिधर भी जाता हूँ तेरा ही क़सद है मौला।

وَضَيْفكَ حَيْثُ كُنْتُ منَ الْبِلادِ

जहाँ भी ठहरूंगा तेरा ही मेहमान हूँगा।

वर्ग - 6

अमुख मशहूर दुआएं

दुआए सबा

बाज़ मशहूर दुआओं के ज़िक्र में जिनमें से अमीरूल मोमिनीन (अ) की यह दुआ सबा भी है:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

ख़ुदा के नामसे जो रहमान व रहीम है। ऐ वो ख़ुदा जिसने सुबह की ज़ुबान को रौशनी की गोयाई से नूरानी

اَللّٰهُمَّ يَا مَنْ دَلَعَ لِسَانَ الصَّبَاحِ بِنُطْقِ تَبَلُّجِهٖ وَ سَرَّحَ قِطَعَ اللَّيْلِ

फ़रमाया है। और अंधेरी रात के टुकड़ों को हौलअंगेज तारीकियों के साथ आज़ाद फ़रमाया है। और

الْمُظْلِمِ بِغَيَاهِيْبِ تَلَجْلُجِهٖ وَ اَتْقَنَ صُنْعَ الْفَلَكِ الدَّوَّارِ فِيْ

फ़लके दव्वार की सनत को बुजोंकी मिक़दार से मुसतहकम फ़रमाया है। और आफ़ताब की रौश्नी को

مَقَادِيْرِ تَبَرُّجِهٖ وَ شَعْشَعَ ضِيَآءَ الشَّمْسِ بِنُوْرِ تَاَجُّجِهٖ يَا مَنْ دَلَّ عَلٰى

भड़कते हुए नूर से ताबंदा क़रार दिया है। ऐ वो ख़ुदा जो अपनी ज़ात के लिए ख़ुद ही रहनुमा है। और

ذَاتِهٖ بِذَاتِهٖ وَ تَنَزَّهَ عَنْ مُجَانَسَةِ مَخْلُوْقَاتِهٖ وَ جَلَّ عَنْ مُلَآئَمَةِ

तमाम मख़लूक़ात की मुशाबेहत या उनकी कैफ़यात की मुनासिबत से बुलंदतर और पाकीज़ा है। ऐ वो

كَيْفِيَّاتِهٖ يَا مَنْ قَرُبَ مِنْ خَطَرَاتِ الظُّنُوْنِ وَ بَعُدَ عَنْ لَحَظَاتِ

ख़ुदा जो ख़यालात से क़रीबतर और आँखों के मुशाहिदे से दूरतर है। और हर चीज़को उसके वजूद से

الْعُيُوْنِ وَ عَلِمَ بِمَا كَانَ قَبْلَ اَنْ يَّكُوْنَ يَا مَنْ اَرْقَدَنِيْ فِيْ مِهَادِ اَمْنِهٖ

पहले से जानता है। ऐ वो ख़ुदा जिसने मुझे अम्न व अमान के गहवारे मे सुलाया और एसानों और

وَ اَمَانِهٖ وَ اَيْقَظَنِيْ اِلٰى مَا مَنَحَنِيْ بِهٖ مِنْ مِنَنِهٖ وَ اِحْسَانِهٖ وَ كَفَّ

इनामात की दुनिया मे बेदार किया और बुराई के हाथोंको अपने हाथों से और अपनी ताक़त से रद कर

اَكُفَّ السُّوْءِ عَنِّيْ بِيَدِهٖ وَ سُلْطَانِهٖ صَلِّ اللّٰهُمَّ عَلَى الدَّلِيْلِ اِلَيْكَ

दिया। रहमत नाज़िल फ़रमा उस इंसान पर जो अंधेरी रात मे तेरी तरफ़ रहनुमाई करनेवाला और अज़ीम

فِيْ اللَّيْلِ الْاَلْيَلِ وَ الْمَاسِكِ مِنْ اَسْبَابِكَ بِحَبْلِ الشَّرَفِ الْاَطْوَلِ

तरीन शरफ़ के हर वसीले से तमस्सुक करनेवाला और बुलंदियों के अज़ीम दर्जे पर है। रौशन तरीन

وَ النَّاصِعِ الْحَسَبِ فِيْ ذُرْوَةِ الْكَاهِلِ الْاَعْبَلِ وَ الثَّابِتِ الْقَدَمِ عَلٰى

हसब व नसब रखनेवाला और मुश्किलात मे पहले दिन से साबित क़दम रहनेवाला है। और उसकी उस

زَحَالِيْفِهَا فِي الزَّمَنِ الْاَوَّلِ وَ عَلٰى اٰلِهِ الْاَخْيَارِ الْمُصْطَفِيْنَ الْاَبْرَارِ

आल पर जो नेक किरदार और मुनतख़ब है। ख़ुदाया हमारे लिए सुबह के दरवा॰जों को रहमत व फ़लाह

وَ افْتَحِ اللّٰهُمَّ لَنَا مَصَارِيْعَ الصَّبَاحِ بِمَفَاتِيْحِ الرَّحْمَةِ وَ الْفَلَاحِ وَ

की कुजियों से खोल और हमे हिदायत व सलह का बेहतरीन लिबास अता फ़रमा। अपनी अज़मत से

الْبِسْمِ اللّٰهُمَّ مِنْ اَفْضَلِ خِلَعِ الْهِدَايَةِ وَ الصَّلَاحِ وَ اغْرِسِ

हमारे दिलोंमे ख़ुज़ू व ख़ुशू के चश्मे रासिख़ फ़रमादे और अपनी हैबत से हमारी आखोंसे आँसुओंको

اللّٰهُمَّ بِعَظْمَتِكَ فِيْ شِرْبِ جَنَانِيْ يَنَابِيْعَ الْخُشُوْعِ وَاجْرِ اَللّٰهُمَّ

जारी कर दे। हमारी बे राह रवी को क़िनाअत व ख़ुज़ू के एहतेमाम से मोअददिब बान दे। ख़ुदाया अगर

لِهَيْبَتِكَ مِنْ اٰمَاقِيْ زَفَرَاتِ الدُّمُوْعِ وَ اَدِّبِ اللّٰهُمَّ نَزَقَ الْخُرْقِ مِنِّيْ

तेरी रहमत ने बेहतरीन तौफ़ीक से हमारे कामों का आगाज़ न किया। तो हमे रौशन रासते पर ले

بِاَزِمَّةِ الْقُنُوْعِ اِلٰهِيْ اِنْ لَّمْ تَبْتَدِئْنِيْ الرَّحْمَةُ مِنْكَ بِحُسْنِ التَّوْفِيْقِ

जानेवाला कौन होगा? और अगर तेरी मोहलत ने हमे उम्मीदों और ख़ाहिशात के क़ाएदीन के हवाले कर

فَمَنِ السَّالِكُ بِيْ اِلَيْكَ فِيْ وَاضِحِ الطَّرِيْقِ وَ اِنْ اَسْلَمَتْنِيْ اَنَاتُكَ

दिया तो हमारी लग़िज़शोंको ख़ाहिशात की ठोकर से बचानेवाला कौन होगा? और नफ़्स व शैतान की

لِقَائِدِ الْاَمَلِ وَ الْمُنٰى فَمَنِ الْمُقِيْلُ عَثَرَاتِيْ مِنْ كَبَوَاتِ الْهَوٰى وَ

जंग मे तेरी मदद के साथ छोड़ दिया तो गोया के तूने हमे सख़्ती और नाउम्मीदी के हवाले कर दिया।

اِنْ خَذَلَنِيْ نَصْرُكَ عِنْدَ مُحَارَبَةِ النَّفْسِ وَ الشَّيْطَانِ فَقَدْ وَكَلَنِيْ

ख़ुदाया तुझे मालूम है के मै तेरी बारगाह मे सिर्फ उम्मीदों के सहारे आया हूँ। और मैने तेरे रीसमाने

خِذْلَانُكَ اِلٰى حَيْثُ النَّصَبِ وَ الْحِرْمَانِ اِلٰهِيْ اَتَرَانِيْ مَا اَتَيْتُكَ اِلَّا

करमको उस समय पकड़ा है जब मुझे गुनाहों ने तेरे मिलने की जगह से दूर फेक दिया है। वो बदतरीन

مِنْ حَيْثُ الْآمَالِ اَمْ عَلِقْتُ بِاَطْرَافِ حِبَالِكَ اِلَّا حِيْنَ بَاعَدَتْنِیْ

सवारी है जिसपर मेरा नफ़्स ख़ाहिशात के साथ सवार हो गया है। हैफ़ है उस नफ़्स के लिए उन

ذُنُوْبِیْ عَنْ دَارِ الْوِصَالِ فَبِئْسَ الْمَطِیَّةُ الَّتِیْ امْتَطَتْ نَفْسِیْ مِنْ

ख़यालात और उम्मीदों की बिना पर जो उसके सामने आरास्ता हो गईं और हलाकत है उसके लिए के

هَوَاهَا فَوَاهًا لَهَا لِمَا سَوَّلَتْ لَهَا ظُنُوْنُهَا وَمُنَاهَا وَ تَبًّا لَهَا لِجُرْأَتِهَا

उसने अपने सरदार और मौला के सामने जुरअत व जसारत दिखाई है। ख़ुदाया मैने उम्मीदों के हाथों तेरे

عَلٰی سَیِّدِهَا وَ مَوْلَاهَا اِلٰهِیْ قَرَعْتُ بَابَ رَحْمَتِكَ بِیَدِ رَجَآئِیْ وَ

बाबे रहमत को खटखटाया है। और ख़ाहिशात के मज़ालिम से तेरी पनाह मे भाग कर आया हूँ। मैने

هَرَبْتُ اِلَیْكَ لَاجِئًا مِنْ فَرْطِ اَهْوَائِیْ وَ عَلَّقْتُ بِاَطْرَافِ حِبَالِكَ

अपनी मोहब्बतकी ऊगलियोंसे तेरी हिदायत की रस्सी को पकड़ लिया है। अब मेरी तमाम ख़ताओंको

اَنَمِلَ وَلَائِیْ فَاصْفَحِ اللّٰهُمَّ عَمَّا كَانَ اَجْرَمْتُهٗ مِنْ زَلَلِیْ وَ خَطَائِیْ وَ

और ग़लतियोंको माफ़ कर दे और मुझे हलाकत की तबाही से बचाले। तू मेरा सरदार मेरा मौला मेरा

اَقِلْنِیْ مِنْ صَرْعَةِ رِدَائِیْ فَاِنَّكَ سَیِّدِیْ وَ مَوْلَایَ وَ مُعْتَمَدِیْ وَ

मोतमिद और मेरी उम्मीदों का मरकज़ है। तू मेरा आख़री मतलूब और दुनिया व आ°खिरत मे मेरी

رَجَائِیْ وَ غَایَةَ مُنَایَ فِیْ مُنْقَلَبِیْ وَ مَثْوَایَ اِلٰهِیْ كَیْفَ تَطْرُدُ

आख़री आरज़ू है। ख़ुदाया इस मिसकीन को किस तरह हटा देगा जो गुनाहोंसे भाग कर तेरी पनाह मे

مِسْكِيْنًا اِلْتَجَاَ اِلَيْكَ مِنَ الذُّنُوْبِ هَارِبًا اَمْ كَيْفَ تُخَيِّبُ

आया है? और इस तालिबे हिदायत को कैसे नाउम्मीद कर देगा जो दौड़कर तेरे पास आया है? इस प्यासे

مُسْتَرْشِدًا قَصَدَ اِلٰى جَنَابِكَ سَاعِيًا اَمْ كَيْفَ تَرُدُّ ظَمْاٰنَ وَرَدَ اِلٰى

को कैसे पलटादेगा जो तेरे हाज़ पर पानी पीने आया है? यक़ीनन ये नामुमकिन है के तेरे दरया ए रहमत

حِيَاضِكَ شَارِبًا كَلَّا وَ حِيَاضُكَ مُتْرَعَةٌ فِيْ ضَنْكِ الْمَحْوُلِ وَ بَابُكَ

ख़ुश्क तरीन ज़मीनों पर भी छलक रहे हैं? और तेरा बाबे करम हर तलबगार के लिए खुला हुआ है। तू

مَفْتُوْحٌ لِلطَّلَبِ وَالْوُغُوْلِ وَ اَنْتَ غَايَةَ الْمَسْئُوْلِ وَ نِهَايَةَ

आख़री मसऊल है और आख़री मरकज़े उम्मीद है। ख़ुदाया ये मेरे नफ़्स की ज़माम है जिसको मैने तेरी

الْمَاْمُوْلِ اِلٰهِيْ هٰذِهٖ اَزِمَّةُ نَفْسِيْ عَقَلْتُهَا بِعِقَالِ مَشِيَّتِكَ وَ هٰذِهٖ

मशीअत से बांध दिया है। और ये मेरे गुनाहों का बोझ है जिसको मै तेरे अफ़ू व करम से हटाना चाहता

اَعْبَآءُ ذُنُوْبِيْ دَرَاْتُهَا بِرَافَتِكَ وَ رَحْمَتِكَ وَ هٰذِهٖ اَهْوَائِيْ الْمُضِلَّةُ

हूँ? ये मेरे गुनाह गुमराहकुन ख़ाहिशात हैं जिनको मै तेरे लुत्फ़ व करम की बारगाह के हवाले कर दिया

وَكَلْتُهَا اِلٰى جَنَابِ لُطْفِكَ وَ رَافَتِكَ فَاجْعَلِ اللّٰهُمَّ صَبَاحِيْ هٰذَا

है। अब मेरी सुबह को ऐसा बनादे के हिदायत की रौशनी मुझपर नाज़ल हो और मेरे दीन व दुनिया दोनो

نَازِلًا عَلَيَّ بِضِيَآءِ الْهُدٰى وَ السَّلَامَةِ فِي الدِّيْنِ وَ الدُّنْيَا وَ مَسَائِيْ

सलामत रहें। मेरी शामको दुशमनोंके शर से और गुमराह कुन ख़ाहिशात की हलाकतों से महफ़ूज़ बना

جُنَّةً مِنْ كَيْدِ الْاَعْدَاءِ وَ وِقَايَةً مِنْ مُرْدِيَاتِ الْهَوٰى اِنَّكَ قَادِرٌ عَلٰى

दे। तू हर शै पर क़ादिर है। जिसको चाहे मुल्क दे सकता है और जिस से चाहे मुल्क ले सकता है।

مَا تَشَآءُ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَ تَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَ تُعِزُّ مَنْ

जिसको चाहता है इज़्ज़त देता है। और जिसे चाहता है ज़लील कर देता है। ख़ैर तेरे ही हाथों मे है और तू

تَشَآءُ وَ تُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ تُوْلِجُ

हर शै पर क़ादिर है। तू रात को दिन मे और दिन को रात मे दा॰खिल कर देता है। जिंदा को मुर्दा से और

اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ تُوْلِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَ تُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ

मुर्दे को जिंदा से निकाल लेता है। तू जिसे चाहे बेहिसाब रि॰ज्क अता फ़रमा देता है। तेरे अलावा कोई

تُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَ تَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ لَآ اِلٰهَ اِلَّا

ख़ुदा नही है। तू पाक व पाकीज़ा है। और हम्दो सताएश के लाएक़ है। कौन ऐसा है जो तेरी क़दर को

اَنْتَ سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِكَ مَنْ ذَا يَعْلَمُ قُدْرَتَكَ فَلَا يَخَافُكَ وَ

जानता हो और तुझसे डरता न हो। और कौन ऐसा है जो तुझे पहचानता हो और ख़ौफ़ज़दा न हो। तूने

مَنْ ذَا يَعْلَمُ مَا اَنْتَ فَلَا يَهَابُكَ اَلَّفْتَ بِقُدْرَتِكَ الْفِرَقَ وَ فَلَقْتَ

अपनी क़ुदरत के मुताफ़र्रिक़ात को जोड़ दिया है। और सुबह को रौशन कर दिया है? तूने अपने करम

بِلُطْفِكَ الْفَلَقَ وَ نَوَّرْتَ بِكَرَمِكَ دَيَاجِيَّ الْغَسَقِ وَ اَنْهَرْتَ الْمِيَاهَ

से अंधेरी रातोंको नूरानी बना दिया है। और सख़्ततरीन चट्टानो से शीरीन और नमकीन चश्मे जारी कर

مِنَ الصُّمِّ الصَّيَاخِيْدِ عَذْبًا وَّ اُجَاجًا وَّ اَنْزَلْتَ مِنَ الْمُعْصِرَاتِ مَآءً

दिए हैं। तूने बादलों से पानी बरसाया है। और आफ़ाब व महताब को लोगां के लिए भड़कता हुआ रौशन

ثَجَّاجًا وَ جَعَلْتَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لِلْبَرِيَّةِ سِرَاجًا وَّ هَّاجًا مِنْ غَيْرِ

चिराग़ बना दिया है। फिर उन तमाम चीजों की ईजाद मे तुझे न कोई ज़हमत हुई है न कोई मशक़्क़त

اَنْ تُمَارِسَ فِيْمَا ابْتَدَاْتَ بِهٖ لُغُوْبًا وَّلَا عِلَاجًا فَيَا مَنْ تَوَحَّدَ بِالْعِزِّ وَ

बरदाश्त करना पड़ी। ऐ वो ख़ुदा जो इज़्ज़त व बक़ा मे अकेला है। और जिसने सारे बंदोंको मौत व फ़ना

الْبَقَآءِ وَ قَهَرَ عِبَادَهٗ بِالْمَوْتِ وَ الْفَنَآءِ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِهٖ

द्वारा दबा दिया है। हज़रत मुहम्मद और उनकी मुत्तक़ी आल पर रहमत नाज़ल फ़रमा। मेरी आवाज़ को

الْاَتْقِيَآءِ وَ اسْمَعْ نِدَآئِيْ وَ اسْتَجِبْ دُعَآئِيْ وَ اَهْلِكْ اَعْدَآئِيْ وَ حَقِّقْ

सुन ले, मेरी दुआ को क़ुबूल कर ले और मेरी उम्मीदों को पूरा फ़रमा दे। ऐ वो ख़ुदा जिसको रंज व ग़म

بِفَضْلِكَ آمَالِيْ وَ رَجَآئِيْ يَا خَيْرَ مَنْ دُعِيَ لِكَشْفِ الضُّرِّ وَ الْمَامُوْلِ

को दूर करने के लिए पुकारा गया। और जिस से हर मुश्किल मे उम्मीद की जाती है। मैने तेरी बारगाह मे

لِكُلِّ عُسْرٍ وَ يُسْرٍ بِكَ اَنْزَلْتُ حَاجَتِيْ فَلَا تَرُدَّنِيْ مِنْ سَنِيِّ مَوَاهِبِكَ

अपनी हाजतों को पेश कर दिया है। अब मुझे अपने बुलंद तरीन अताया से मायूस वापस न करना ऐ

خَآئِبًا يَا كَرِيْمُ يَا كَرِيْمُ يَا كَرِيْمُ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَ صَلَّى

करीम ऐ करीम ऐ करीम। तेरी रहमत का वास्ता के तू सबसे ज़यादा रहमत करनेवाला है। परवपदिगार

اللّٰهُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّ آلِهٖ اَجْمَعِيْنَ.

बेहतरीन मख़लूक़ात हज़रत मुहम्मद व उनकी तमाम आल पर सलवात नाज़िल फ़रमाए।

फिर सजदे में जाइये और काहिये:

اِلٰهِیْ قَلْبِیْ مَحْجُوْبٌ وَّ نَفْسِیْ مَعْيُوْبٌ وَّ عَقْلِیْ مَغْلُوْبٌ وَّ هَوَآئِیْ

ख़ुदाया मेरा दिल शार्मिंदा है मेरा नफ़्स मायूब है। मेरी अक़्ल मग़लूब है। मेरी ख़ाहिशात ग़ालिब हैं मेरी

غَالِبٌ وَّ طَاعَتِیْ قَلِيْلٌ وَّ مَعْصِيَتِیْ كَثِيْرٌ وَّ لِسَانِیْ مُقِرٌّ بِالذُّنُوْبِ

इताअत कम और मासियत बहुत है। और मेरी ज़बान गुनाहों की इक़रारी है। तो इसके बाद कया चारा ए

فَكَيْفَ حِيْلَتِیْ يَا سَتَّارَ الْعُيُوْبِ وَ يَا عَلَّامَ الْغُيُوْبِ وَ يَا كَاشِفَ

कार है। ऐ ओयूब को छुपानेवाले और ग़ैब के जानने वाले और रंज व ग़म को दूर करनेवाले। मेरे तमाम

الْكُرُوْبِ اِغْفِرْ ذُنُوْبِیْ كُلَّهَا بِحُرْمَةِ مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ يَا غَفَّارُ يَا غَفَّارُ

गुनाहों को हजरत मुहम्मद व आले मुहम्मद की हुरमत के वास्ते से माफ़ कर दे। ऐ बख़्शने वाले ऐ गफ़्फ़ार

يَا غَفَّارُ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

ऐ माफ़ करनेवाले तेरी रहमत का वास्ता ऐ सबसे ज़यादा मेहेरबानी करनेवाले।

अल्लामा मजलिसी ने इस दुआ को किताबे दुआ बिहार में और किताबुस सलात में तौज़ीह के साथ नक़्ल किया है। और कहा है:
यह दुआ मशहूर दुआओं में से है अगर मैंने इसे सय्यद इब्ने बाक़ी की

मिसबाह वे अलावा और कोई मोअतबर किताब में नहीं देखा। लेकिन मशहूर यही है के इस दुआ को नमाज़े सुबह के बाद पढ़ा जाए। और सय्यद इब्न बाक़ी ने इसको नाफ़ेला सुबह के बाद नक़्ल किया है। लेकिन जिस समय भी पढ़ा जाए बेहतरीन अमल होगा।

दुआए कुमैल

दुआ कुमैल इब्ने ज़ियाद नख़ई (र) भी मशहूर दुआओं में से है।
जिसके बारे में अल्लामा मजलिसी ने फ़रमाया है के यह बेहतरीन दुआ है। और इसका नाम दुआ खि॰ज़्र है।
हज़रत अमीरूल मोमिनीन (अ) ने उसे कुमैल को सिखाई थी। जो आपके मख़सूस असहाब में थे। और फ़रमाया है के शबे पंद्रह शाबान और शबे जुमा में इसे पढ़ा जाए। दुश्मनों के शर से महफ़ूज़ रहने के लिए। रोज़ी में बरकत के लिए। गुनाहों की बख़शिश के लिए बेहद मुफ़ीद है। शेख़ तूसी और सय्यद इब्ने ताऊस ने इस दुआ को नक़्ल किया है। इस जगह पर उसे मिस्बाहुल मुतहज्जिद से नक्ल किया जा रहा है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَسْاَلُكَ بِرَحْمَتِكَ الَّتِیْ وَسِعَتْ كُلَّ شَیْءٍ وَ

ख़ुदाके नामसे जो बहुत मेहेरबान निहायत रहेमवाला है। ऐ ख़ुदा मैं तुझसे तेरी उस रहमत का वास्ता देकर सवाल

بِقُوَّتِكَ الَّتِیْ قَهَرْتَ بِهَا كُلَّ شَیْءٍ وَ خَضَعَ لَهَا كُلُّ شَیْءٍ وَ

करता हूँ जो हर चीज़ के बढ़ी हुई है जिसकी वजह से तू हर चीज़ पर ग़ालिब है और हर चीज़ ने उसके आगे

ذَلَّ لَهَا كُلُّ شَیْءٍ وَ بِجَبَرُوْتِكَ الَّتِیْ غَلَبْتَ بِهَا كُلَّ شَیْءٍ وَ

फ़रोतनी की है, व हर चीज़ उससे पस्त है व तेरी उस जबस्त का वास्ता देकर सवाल करता हूँ जिसके सबब से तू

بِعِزَّتِكَ الَّتِیْ لَا یَقُوْمُ لَهَا شَیْءٌ وَ بِعَظَمَتِكَ الَّتِیْ مَلَاَتْ كُلَّ

हर चीज़ पर ग़ालिब आया व तेरी उस इज़्ज़त का वास्ता देकर सवाल करता हूँ जिसके सामने कोई चीज़ नहीं

شَیْءٍ وَ بِسُلْطَانِكَ الَّذِیْ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ وَ بِوَجْهِكَ الْبَاقِیْ

ठेहरती व तेरी उस अज़मत का वास्ता देकर सवाल करता हूँ जिससे हर चीज़ पुर नज़र आती है व तेरी उस

بَعْدَ فَنَاءِ كُلِّ شَیْءٍ وَ بِاَسْمَائِكَ الَّتِیْ مَلَاَتْ اَرْكَانَ كُلِّ شَیْءٍ

हुकूमत का वास्ता देकर सवाल करता हूँ जो हर चीज़ पर छाई हुई है और तेरी उस ज़ात का वास्ता देकर सवाल

وَ بِعِلْمِكَ الَّذِیْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَیْءٍ وَ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الَّذِیْ

करता हूँ जो हर शै के फ़ना हो जाने के बाद बाक़ी रहेगी और उन मुक़द्दस नामों का वास्ता जिनसे हर चीज़ के

اَضَاءَ لَهٗ كُلُّ شَیْءٍ یَا نُوْرُ یَا قُدُّوْسُ یَا اَوَّلَ الْاَوَّلِیْنَ وَ یَا آخِرَ

आला हिस्से भरे हुऐ हैं और तेरे उस इल्म का वास्तेसे सवाल करता हूँ जो हर चीज़ को एहाता किऐ है व तेरी हर

الْآخِرِیْنَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیَ الذُّنُوْبَ الَّتِیْ تَهْتِكُ الْعِصَمَ

उस चीज़ में चमक-दमक है। ऐ नूर ऐ सबसे ज़्यादा पाको पाकीज़ा, ऐ सब पहलों से पहले ऐ सब आख़रों से

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیَ الذُّنُوْبَ الَّتِیْ تُنْزِلُ النِّقَمَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیَ

आख़िर, या ख़दा मेरे वो सब गुनाह बख़्श दे जो नामूस में बट्टा लगा देते हैं ऐ ख़ुदा मेरे वो सब गुनाह बख़्शदे जो

الذُّنُوْبَ الَّتِیْ تُغَیِّرُ النِّعَمَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیَ الذُّنُوْبَ الَّتِیْ

नुज़ूले बला का बाएस होते हैं या ख़ुदा मेरे वो सब गुनाह बख़्श दे जो नेमतों को बदल देते हैं या मेरे ख़ुदा मेरे वो

تَحْبِسُ الدُّعَاءَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیَ الذُّنُوْبَ الَّتِیْ تَقْطَعُ

सब गुनाह बख़्श दे जो बला का कारण होते हैं या ख़ुदा मेरे वो सब गुनाह बख़्शदे जो नेमतों को बदल देते हैं या मेरे

الرَّجَآءَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیَ الذُّنُوْبَ الَّتِیْ تُنْزِلُ الْبَلَاءَ اَللّٰهُمَّ

ख़ुदा मेरे वो सब गुनाह बख़्शदे जो दुआओं को दर्जा मक़बूलियत तक पहुँचने से रोक देते हैं या ख़ुदा मेरे वह सब

اغْفِرْ لِیْ كُلَّ ذَنْبٍ اَذْنَبْتُهٗ وَ كُلَّ خَطِیْٓئَةٍ اَخْطَاْتُهَا اَللّٰهُمَّ

गुनाह बख़्श दे जो उम्मीद को पूरा नहीं होने देते या ख़ुदा मेरे उन सब गुनाहों को बख़्शदे जिनसे बला नाज़ल होती

اِنِّیْٓ اَتَقَرَّبُ اِلَیْكَ بِذِكْرِكَ وَ اَسْتَشْفِعُ بِكَ اِلٰی نَفْسِكَ وَ

है या ख़ुदा मैं तेरी याद के ज़रिया से तेरी हुज़ूरी में तक़र्रूब चाहता हूँ व तेरे हुज़ूर में तेरे ज़िक्र व तेरीही ज़ात को

اَسْاَلُكَ بِجُوْدِكَ اَنْ تُدْنِیَنِیْ مِنْ قُرْبِكَ وَ اَنْ تُوْزِعَنِیْ

अपना सिफ़ारिशी ठेहराता हूँ व तेरे जूदो बख़शिश को व करम को ज़रिया गर्दान कर तुझसे सवाला करता हूँ कि

شُكْرَكَ وَ اَنْ تُلْهِمَنِیْ ذِكْرَكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْاَلُكَ سُؤَالَ

मेरे लिए अपना क़ुर्ब ज़्यादा कर और मुझे अपनी नेमतों का शुक्रिया बजा लाने की तौफ़ीक़ दे व अपनी याद मेरे

خَاضِعٍ مُتَذَلِّلٍ خَاشِعٍ اَنْ تُسَامِحَنِیْ وَ تَرْحَمَنِیْ وَ تَجْعَلَنِیْ

दिल में डालदे या ख़ुदा मैं तुझसे गिड़गिड़ाने वाले, और रोने पीटने वाले का सा सवाल करता हूँ कि तू मेरी

بِقِسْمِكَ رَاضِیًا قَانِعًا وَ فِیْ جَمِیْعِ الْاَحْوَالِ مُتَوَاضِعًا

ख़ताओं से चश्मपोशी फ़रमाऐ व मुझपर रहम फ़रमाऐ व जो कुछ तूने मेरा हिस्सा लगाया है उसपर मैं राज़ी हूँ व

اَللّٰهُمَّ وَ اَسْاَلُكَ سُؤَالَ مَنِ اشْتَدَّتْ فَاقَتُهٗ وَ اَنْزَلَ بِكَ

क़िनाअत करूँ और हर हाल में तेरे (बन्दोंसे) बेतवज्जो पेश आऊं या ख़ुदा मैं तेरे हज़ूर में उस शख़्स का सा

عِنْدَ الشَّدَائِدِ حَاجَتَهٗ وَ عَظُمَ فِيْمَا عِنْدَكَ رَغْبَتُهٗ اَللّٰهُمَّ

सवाल करता हूँ जिस पर फ़ाक़े के कड़ाके गुज़रते हों मगर तेरी ही बारगाह में उसने सख़्तियों की हालत में अपनी

عَظُمَ سُلْطَانُكَ وَ عَلَا مَكَانُكَ وَ خَفِيَ مَكْرُكَ وَ ظَهَرَ اَمْرُكَ

हाजत पैश की हो और जो तेरे ख़ज़ाने में हो उसके बारे में उसकी ख़्वाहिश बढ़ी हुई हो या ख़ुदा! तेरी दलील बड़ी

وَ غَلَبَ قَهْرُكَ وَ جَرَتْ قُدْرَتُكَ وَ لَا يُمْكِنُ الْفِرَارُ مِنْ

क़वी है और तेरा स्तबा बहुत बुलंद है और तेरा बदला लेना समझ से बाहर है और तेरा हुक्म ज़ाहिर है और तेरा

حُكُوْمَتِكَ اَللّٰهُمَّ لَا اَجِدُ لِذُنُوْبِيْ غَافِرًا وَ لَا لِقَبَائِحِيْ

क़हर ग़ालिब है और तेरी क़ुदरत का निज़ाम चल रहा है और तेरी हुकूमत से भाग कर निकल जाना ना मुमकिन

سَاتِرًا وَ لَا لِشَيْءٍ مِنْ عَمَلِيَ الْقَبِيْحِ بِالْحَسَنِ مُبَدِّلًا غَيْرَكَ

है, या ख़ुदा मैं तो अपने गुनाहों के लिए बख़्श देनेवाला और बुराईयों के लिए पर्दा पोशी करनेवाला और जो भी

لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ وَ بِحَمْدِكَ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَ تَجَرَّأْتُ

मेरी बद आमली हो उसको नेकी से बदल देनेवाला तेरे सिवा किसीको नहीं पाता, सिवाए तेरे कोई माबूद नहीं तू

بِجَهْلِيْ وَ سَكَنْتُ اِلٰى قَدِيْمِ ذِكْرِكَ لِيْ وَ مَنِّكَ عَلَيَّ اَللّٰهُمَّ

मुन॰ज्ज़ा है और मैं तेरी तारीफ़ करता हूँ मैंने अपनी ज़ातपर ज़ुल्म किया है और अपनी जिहालत से जरी हो गया

مَوْلَایَ كَمْ مِنْ قَبِيْحٍ سَتَرْتَهٗ وَ كَمْ مِنْ فَادِحٍ مِنَ الْبَلَاءِ

हूँ और चुंकि तू हमेशा से मुझ पर एहसान करता रहा है और तेरी याद मेरे दिल में बैठी हुई है इससे इत्मिनान कर

اَقَلْتَهٗ وَ كَمْ مِّنْ عِثَارٍ وَّ قَيْتَهٗ وَ كَمْ مِّنْ مَكْرُوْهٍ دَفَعْتَهٗ وَ

लिया है या अल्लाह ऐ मेरे मालिक। तूने मेरी कितनी बुराईयों पर पर्दा डाला है व कितनी सख़्तसे सख़्त बलाओं

كَمْ مِّنْ ثَنَآءٍ جَمِيْلٍ لَّسْتُ اَهْلًا لَهٗ نَشَرْتَهٗ اَللّٰهُمَّ عَظُمَ

को तुने टाल दिया व कितनी ख़ताओं से तुने बचा लिया व कितनी अज़ीयतों को तुने दफा फ़रमा दिया व कितनी

بَلَآئِیْ وَ اَفْرَطَ بِیْ سُوْٓءُ حَالِیْ وَ قَصُرَتْ بِیْ اَعْمَالِیْ وَ قَعَدَتْ بِیْ

मेरी ख़ुबियां जिनका मैं मुसतहिक़ न था तुने लोगों में मश्हुर कर दीं। या ख़ुदा मेरी आज़माइश उस वक्त बढ़ गई है

اَغْلَالِیْ وَ حَبَسَنِیْ عَنْ نَفْعِیْ بُعْدُ اَمَلِیْ وَ خَدَعَتْنِیْ الدُّنْيَا

व मेरी बद हाली हदसे ज़्यादा हो गई है व मेरे नेक आमाल कम हैं व सख़्त तकलीफ़ों ने मुझे बिठा दिया है व

بِغُرُوْرِهَا وَ نَفْسِیْ بِجِنَايَتِهَا وَ مِطَالِیْ يَا سَيِّدِیْ فَاَسْاَلُكَ

मेरी उम्मीदों की दराज़ी ने मुझे नफ़े से बाज़ रखा और दुनियाने मुझको अपनी फ़रेबदेही से धोके में रखा व मेरे

بِعِزَّتِكَ اَنْ لَا يَحْجُبَ عَنْكَ دُعَآئِیْ سُوْٓءُ عَمَلِیْ وَ فِعَالِیْ وَ لَا

नफ़्स ने अपनी ख़यानत व टाल मटोल से (मुझे) धोखा दिया ऐ आक़ा पस सवाल करता हूँ तुझसे तेरी इज़्ज़त का

تَفْضَحْنِیْ بِخَفِیِّ مَا اطَّلَعْتَ عَلَيْهِ مِنْ سِرِّیْ وَ لَا تُعَاجِلْنِیْ

वास्ता देकर कि मेरी बदअमली व किरदार मेरी दुआको तेरे हुज़ूर में पहुंचने से न रोकें व मेरे जिन पोशीदा राज़ों

بِالْعُقُوْبَةِ عَلٰى مَا عَمِلْتُهُ فِيْ خَلَوَاتِيْ مِنْ سُوْٓءِ فِعْلِيْ وَ

से तू मुत्तेला है (उनको ज़ाहिर करके) मुझे रूसवा न कर व मैं अपनी गफ़लत, ख़्वाहिशों की कसरत, अपनी

اِسَآئَتِيْ وَ دَوَامِ تَفْرِيْطِيْ وَ جَهَالَتِيْ وَ كَثْرَةِ شَهَوَاتِيْ وَ

जिहालत व नेकी की तरफ़ हमेशा की कम रग़बती के सबब जो बुराईयां छुप छुप कर कर चुका हूँ उनकी मुझे

غَفْلَتِيْ وَ كُنِ اللّٰهُمَّ بِعِزَّتِكَ لِيْ فِيْ كُلِّ اَلْاَحْوَالِ رَؤُوْفًا وَّ

सज़ा देने में जलदी न फ़रमा और ऐ अल्लाह तेरी इज़्ज़त का वास्ता मुझ पर हर हाल में मेहेरबानी दिखला ऐ मेरे

عَلَيَّ فِيْ جَمِيْعِ اَلْاُمُوْرِ عَطُوْفًا اِلٰهِيْ وَ رَبِّيْ مَنْ لِيْ غَيْرُكَ اَسْاَلُهٗ

माबूद! और मेरे परवरदिगार। मेरा तेरे सिवा और है कौन जिससे मैं अपनी मुसीबत के दूर करने का और अपने

كَشْفَ ضُرِّيْ وَ النَّظَرَ فِيْ اَمْرِيْ اِلٰهِيْ وَ مَوْلَايَ اَجْرَيْتَ عَلَيَّ

मामले में ग़ौर करने का सवाल करूं ऐ मेरे माबूद ऐ मेरे मालिक तूने मेरे लिए ये हुक्म जारी किया जिसमें मैंने

حُكْمًا نِاتَّبَعْتُ فِيْهِ هَوٰى نَفْسِيْ وَ لَمْ اَحْتَرِسْ فِيْهِ مِنْ

अपनी ख़्वाहिशे नफ़्सानी की पैरवी की और उसकी कोई निगरानी न की मेरे दुश्मन ने इस ख़्वाहिशे नफ़्सानी को

تَزْيِيْنِ عَدُوِّيْ فَغَرَّنِيْ بِمَا اَهْوٰى وَ اَسْعَدَهٗ عَلٰى ذٰلِكَ

मेरी नज़र में ज़ीनत दे दी इस तरह जो ख़्वाहिश मेरे दिल में पैदा हुई थी उसके ज़रिया से मेरे दुश्मन ने मुझे धोखा

اَلْقَضَآءُ فَتَجَاوَزْتُ بِمَا جَرٰى عَلَيَّ مِنْ ذٰلِكَ بَعْضَ

दिया और कज़ा व कद्र ने इस मामला में उसकी मुसाइदत की इस तरह तेरी मुक़र्रर की हुई हुदूद से और तेरे जारी

حُدُوْدِكَ وَ خالَفْتُ بَعْضَ اَوَامِرِكَ فَلَكَ الْحَمْدُ عَلَيَّ فِيْ

किऐ हुए हुक्म से कुछ तजावुज़ कर गया व तेरे बाज़ एहकाम की मुझसे मुख़ालिफ़त हो गई बहर हाल इन तमाम

جَمِيْعِ ذٰلِكَ وَ لَا حُجَّةَ لِيْ فِيْمَا جَرٰى عَلَيَّ فِيْهِ قَضَآؤُكَ وَ

मामलात में मेरे ज़िम्मे तेरी हम्द बजा लाना वाजिब है व जिस जिस अम्र में तेरे फ़ैसला मेरे ख़िलाफ़ जारी हुआ व

اَلْزَمَنِيْ حُكْمُكَ وَ بَلَآؤُكَ وَ قَدْ اَتَيْتُكَ يَآ اِلٰهِيْ بَعْدَ

तेरा हुक्म व आज़माइश मेरे लिए लाज़म हुई इसमें मेरी कोई हुज्जत नहीं है और मेरे माबूद बाद अपनी कोताही व

تَقْصِيْرِيْ وَ اِسْرَافِيْ عَلٰى نَفْسِيْ مُعْتَذِرًا نَادِمًا مُنْكَسِرًا

अपने नफ़्स पर ज़ियादती करने के उज़्र करता हूँ व निदामतके साथ इंकिसार की हालत में तलबे मग़्फ़िरत करता

مُسْتَقِيْلًا مُسْتَغْفِرًا مُنِيْبًا مُقِرًّا مُذْعِنًا مُعْتَرِفًا لَّا اَجِدُ

व गिड़गिड़ाता इक़रार करता हुआ गुनाहों से दूर होने के यकीन के साथ तेरी दरगाह में हाज़र हुआ हूँ इस लिए कि

مَفَرًّا مِمَّا كَانَ مِنِّيْ وَ لَا مَفْزَعًا اَتَوَجَّهُ اِلَيْهِ فِيْ اَمْرِيْ غَيْرَ

जो कुछ मुझसे हो गया है इससे न भागने का ठिकाना पाता हूँ न रोने पीटने की जगह कि वहीं अपना मामला पेश

قَبُوْلِكَ عُذْرِيْ وَ اِدْخَالِكَ اِيَّايَ فِيْ سَعَةِ رَحْمَتِكَ اَللّٰهُمَّ

करूं सिवाऐ इसके कि तू मेरा उज़्र क़बुल कर ले और अपनी वुस्अते रहमत में मुझे दाख़ल करले या ख़ुदा अब

فَاقْبَلْ عُذْرِيْ وَ ارْحَمْ شِدَّةَ ضُرِّيْ وَ فُكَّنِيْ مِنْ شَدِّ وَثَاقِيْ يَا

मेरा उज़्र क़ुबूल कर व मेरी तकलीफ़ की सख़्ती पर रहम कर और मेरी जकड़बंदियों को दूर कर और मेरे

رَبِّ ارْحَمْ ضَعْفَ بَدَنِیْ وَ رِقَّةَ جِلْدِیْ وَدِقَّةَ عَظْمِیْ یَا مَنْ بَدَاَ

परवरदिगार मेरे जिस्म की नातवानी और मेरी जिल्द के हलके पन और मेरी हड्डियों की कम॰जोरी पर रहम कर,

خَلْقِیْ وَ ذِکْرِیْ وَ تَرْبِیَتِیْ وَ بِرِّیْ وَ تَغْذِیَتِیْ هَبْنِیْ لِابْتِدَآءِ

ऐ वह जिसने मेरे वुजूद का आगाज़ फ़रमाया मेरा नाम भी निकाला मेरी परवरिश का सामान भी किया मेरे हक़ में

کَرَمِكَ وَ سَالِفِ بِرِّكَ بِیْ یَا اِلٰهِیْ وَسَیِّدِیْ وَ رَبِّیْ اَ تُرَاكَ

इस तरह की नेकी भी की और मुझे ग़िज़ा देने के असबाब बहम पहुंचाऐ जैसे तुने करम की इब्तेदा की थी और

مُعَذِّبِیْ بِنَارِكَ بَعْدَ تَوْحِیْدِكَ وَ بَعْدَ مَا انْطَوٰی عَلَیْهِ قَلْبِیْ

जिस तरह पहले से मेरे हक़ मे नेकी करता आ रहा है वैसे ही बरक़रार रख ऐ मेरे सरदार ऐ मेरे परवरदिगार बाद

مِنْ مَعْرِفَتِكَ وَ لَهِجَ بِهٖ لِسَانِیْ مِنْ ذِکْرِكَ وَ اعْتَقَدَهُ

इसके कि मैं तेरी तौहीद का मुक़िर हूँ और बाद इसके कि मेरा दिल तेरी मोहब्बत से सरशार हो चुका और मेरी

ضَمِیْرِیْ مِنْ حُبِّكَ وَ بَعْدَ صِدْقِ اعْتِرَافِیْ وَ دُعَآئِیْ خَاضِعًا

ज़बान तेरी याद में चल रही है और मेरा दिल तेरी मोहब्बत की गिरह बांधे है और बाद इसके मैं तुझे परवरदिगार

لِرُبُوْبِیَّتِكَ هَیْهَاتَ اَنْتَ اَکْرَمُ مِنْ اَنْ تُضَیِّعَ مَنْ رَبَّیْتَهٗ

मान कर सच्चे दिल से अपने गुनाहों का एतराफ़ करता हूँ और गिड़गिड़ा कर तुझसे दुआ मांगता हूँ क्या तू इसको

اَوْ تُبَعِّدَ مَنْ اَدْنَیْتَهٗ اَوْ تُشَرِّدَ مَنْ اٰوَیْتَهٗ اَوْ تُسَلِّمَ اِلَی

पसन्द फ़रमाऐगा कि मुझे अपने जहन्नम में अज़ाब मे देखे ऐसा तो नहीं हो सकता तेरा करम इससे कहीं ज़्यादा है

الْبَلَآءِ مَنْ كَفَيْتَهٗ وَرَحِمْتَهٗ وَ لَيْتَ شِعْرِىْ يَا سَيِّدِىْ وَ

कि तू इसको ज़ाया कर दे जिसकी तूने परवरिश की या उसको दूर कर दे जिसको क़ुर्ब दिया या उसको निकाल दे

اِلٰهِىْ وَ مَوْلَاىَ اَ تُسَلِّطُ النَّارَ عَلٰى وُجُوْهٍ خَرَّتْ لِعَظَمَتِكَ

जिसको तूने पनाह दी या उसे बला के हवाले कर दे जिसके लिए तूने किफ़ायत की व जिसपर तूने रहम किया। ऐ

سَاجِدَةً وَّ عَلٰى اَلْسُنٍ نَطَقَتْ بِتَوْحِيْدِكَ صَادِقَةً وَ

मेरे सरदार! ऐ मेरे माबूद! ऐ मेरे मौला! यह बात मेरी समझ में तो आती नहीं कि तू आतिशे जहन्नम को उन चेहरों

بِشُكْرِكَ مَادِحَةً وَّ عَلٰى قُلُوْبٍ اِعْتَرَفَتْ بِاِلٰهِيَّتِكَ مُحَقِّقَةً وَّ

पर मुसल्लत करेगा जो तेरी अज़मत के लिए तेरी हुज़ूर में सजदा कर चुके व उन ज़बानों पर जो सच्चाई के साथ

عَلٰى ضَمَآئِرَ حَوَتْ مِنَ الْعِلْمِ بِكَ حَتّٰى صَارَتْ خَاشِعَةً وَّ

तेरी तौहीद के बारे में गोया हो चुकीं व तेरे शुक्र में तेरी मदह कर चुकीं व उन दिलों पर जो इज़हारे हक़ीक़त के

عَلٰى جَوَارِحَ سَعَتْ اِلٰى اَوْطَانِ تَعَبُّدِكَ طَآئِعَةً وَ اَشَارَتْ

तौर पर तेरे माबूद होने का एतराफ़ कर चुके हों और उन ख़यालात पर जिन्हें तेरा इल्म इस क़दर मयस्सर हुआ

بِاِسْتِغْفَارِكَ مُذْعِنَةً مَا هٰكَذَا الظَّنُّ بِكَ وَ لَآ اُخْبِرْنَا

कि वह तेरी ही हुज़ूर में पस्त हुए व उन आज़ा व जवारे पर जिनकी बाग डोर उसी हद तक महदूद रही हो कि

بِفَضْلِكَ عَنْكَ يَا كَرِيْمُ يَا رَبِّ وَ اَنْتَ تَعْلَمُ ضَعْفِىْ عَنْ

ख़ाज़े व तेरी फरमांबरदारी का इक़रार करें व यकीन के साथ तुझसे तलबे मग़्फ़िरत करें ऐ साहिबे करम! न तो तेरी

قَلِيلٍ مِّنْ بَلَآءِ الدُّنْيَا وَ عُقُوبَاتِهَا وَ مَا يَجْرِىْ فِيْهَا مِنَ

निस्बत ऐसा यक़ीन है और न तेरे फ़ज़्ल के मुताल्लिक़ हमें ऐसी ख़बर दी गई, ऐ मेरे परवरदिगार हालांकि तू मेरी

الْمَكَارِهِ عَلٰى اَهْلِهَا عَلٰى اَنَّ ذٰلِكَ بَلَآءٌ وَ مَكْرُوْهٌ قَلِيْلٌ

कम॰जोरी को जानता है कि दुनिया की ज़रा सी आज़माइश व उसकी छोटी छोटी सी तकलीफ़ें व जो मकरूहात

مَّكْثُهٗ يَسِيْرٌ بَقَاؤُهٗ قَصِيْرٌ مُّدَّتُهٗ فَكَيْفَ احْتِمَالِىْ لِبَلَآءِ

एहले दुनिया पर गुज़रती रहती हैं (मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता) बावजूदे कि वह आज़माइश व वह तकलीफ़ देरपा

اْلاٰخِرَةِ وَ جَلِيْلِ وُقُوْعِ الْمَكَارِهِ فِيْهَا وَ هُوَ بَلَآءٌ تَطُوْلُ

नहीं होती उसकी मुद्दत थोड़ी और बका चन्द रोज़ी है, तो भला फिर मुझसे आख़रत की बला व वहां की बड़े

مُدَّتُهٗ وَ يَدُوْمُ مَقَامُهٗ وَ لَا يُخَفَّفُ عَنْ اَهْلِهٖ لِاَنَّهٗ لَا يَكُوْنُ

बड़े मकरूहात की बर्दाश्त क्योंकर हो सकेगी? हालांकि वहां की बला की मुद्दत तूलानी और क़याम दवामी होगा

اِلَّا عَنْ غَضَبِكَ وَ اْنتِقَامِكَ وَ سَخَطِكَ وَ هٰذَا مَا لَا تَقُوْمُ

व जो इसमें फंस जाऐंगे उनके अज़ाब में कभी तख़फ़ीफ़ न की जाऐगी इस लिए कि वो अज़ाब तेरे गज़ब, इंतेकाम

لَهُ السَّمٰوَاتُ وَ اْلَارْضُ يَا سَيِّدِىْ فَكَيْفَ لِىْ وَ اَنَا عَبْدُكَ

व गुस्से के सबब से होगा व तेरे ग़ुस्से को न आसमान बर्दाश्त कर सकते हैं व न ज़मीन ऐ मेरे मौला तो भला मेरी

الضَّعِيْفُ الذَّلِيْلُ الْحَقِيْرُ الْمِسْكِيْنُ الْمُسْتَكِيْنُ يَا اِلٰهِىْ

क्या हालत होगी हालांकि मैं तेरा एक कम॰जोर ज़लील हक़ीर मिसकीन व आजिज़ बन्दा हूँ ऐ मेरे माबूद ऐ मेरे

وَ رَبِّیْ وَ سَیِّدِیْ وَ مَوْلَایَ لِاَیِّ الْاُمُوْرِ اِلَیْكَ اَشْكُوْ وَ لِمَا

परवरदिगार ऐ मेरे वाली ऐ मेरे मौला किन किन मामलात की तेरी हुज़ूरी में शिकायत करूँ व किन किन बातों के

مِنْهَا اَضِجُّ وَ اَبْكِیْ لِاَلِیْمِ الْعَذَابِ وَ شِدَّتِهٖ اَمْ لِطُوْلِ

लिए रोऊं व चिल्लऊं दर्दनाक अज़ाब व उसकी सख़्ती के बाइस या तूलानी बला व उसकी तवील मुद्दत के बाइस

الْبَلَآءِ وَ مُدَّتِهٖ فَلَئِنْ صَیَّرْتَنِیْ لِلْعُقُوْبَاتِ مَعَ اَعْدَائِكَ وَ

पस अगर तूने अज़ाब में अपने दुश्मनों के साथ कर दिया व जो अज़ाब के लाएक़ हैं उनका मेरा गठजोड़ कर

جَمَعْتَ بَیْنِیْ وَ بَیْنَ اَهْلِ بَلَآئِكَ وَ فَرَّقْتَ بَیْنِیْ وَ بَیْنَ

दिया नीज़ अपने दोस्तों व मोहब्बत करनेवालों में और मुझमें जुदाई कर दी तो ऐ मेरे माबूद व ऐ मेरे सरदार व मेरे

اَحِبَّآئِكَ وَ اَوْلِیَآئِكَ فَهَبْنِیْ یَا اِلٰهِیْ وَ سَیِّدِیْ وَ مَوْلَایَ وَ

मौला व मेरे परवरदिगार तुझे एख़्तेयार है मैं तेरे अज़ाब पर तो सब्र कर लूंगा पर तेरी रहमत से जुदाई पर क्योंकर

رَبِّیْ صَبَرْتُ عَلٰی عَذَابِكَ فَكَیْفَ اَصْبِرُ عَلٰی فِرَاقِكَ وَ هَبْنِیْ

सब्र करूंगा और माबूद में तेरी आग की हरारत को तो सह जाउंगा मगर तेरी नज़रे करामत के बदल जाने को

(یَا اِلٰهِیْ) صَبَرْتُ عَلٰی حَرِّ نَارِكَ فَكَیْفَ اَصْبِرُ عَنِ النَّظَرِ

क्योंकर बर्दाश्त करूंगा या आतिशे जहन्नम में क्योंकर रह सकूंगा जबकि मुझे तेरे अफ़्व की उम्मीद है पस ऐ मेरे

اِلٰی كَرَامَتِكَ اَمْ كَیْفَ اَسْكُنُ فِی النَّارِ وَ رَجَآئِیْ عَفْوُكَ

सरदार व ऐ मेरे मौला तेरीही इज़्ज़त की क़सम अगर तूने मुझे बोलने का ऐख़्तेयार दे दिया तो मैं एहले जहन्नम के

فَبِعِزَّتِكَ يَا سَيِّدِيْ وَ مَوْلَايَ اُقْسِمُ صَادِقًا لَّئِنْ تَرَكْتَنِيْ

दरमियान उसी तरह से तेरा नाम लेकर चीख़ूंगा जिस तरह उम्मीदवार चींखते हैं व ज़रूर तेरे हुज़ूर में हाऐवाऐ

نَاطِقًا لَاَضِجَّنَّ اِلَيْكَ بَيْنَ اَهْلِهَا ضَجِيْجَ الْآمِلِيْنَ وَ

करूंगा जैसा फ़रयादी करते हैं व ज़रूर तेरी रहमत के फ़िराक़ में रोऊंगा जैसे ना उम्मीद हो जाने वाले रोते हैं व

لَاَصْرُخَنَّ اِلَيْكَ صُرَاخَ الْمُسْتَصْرِخِيْنَ وَ لَاَبْكِيَنَّ عَلَيْكَ

ज़रूर बार बार तुझे पुकारूंगा कि ऐ मोमिनों के मालिक ऐ मारिफ़त रखने वालों की उम्मीदगाह ऐ फ़रयाद करने

بُكَاءَ الْفَاقِدِيْنَ وَ لَاُنَادِيَنَّكَ اَيْنَ كُنْتَ يَا وَلِيَّ الْمُؤْمِنِيْنَ يَا

वालों के फ़रयाद रस ऐ सच्चों के दिलों को लुभाने वाले ऐ तमाम आलम के माबूद तू कहां है? ऐ मेरे माबूद तेरी

غَايَةَ آمَالِ الْعَارِفِيْنَ يَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيْثِيْنَ يَا حَبِيْبَ

ज़ात मुनज़्ज़ह है, व तेरी ही हम्द करता हूँ, क्या यह बात समझ में आती है कि तू उसी आग में से एक

قُلُوْبِ الصَّادِقِيْنَ وَ يَا اِلٰهَ الْعَالَمِيْنَ اَفَتُرَاكَ سُبْحَانَكَ يَا

फ़रमांबरदार बन्दा की आवाज़ सुने जो अपनी मुख़ालिफ़त की पादाश में क़ैद किया गया हो व अपनी नाफ़रमानी

اِلٰهِيْ وَ بِحَمْدِكَ تَسْمَعُ فِيْهَا صَوْتَ عَبْدٍ مُسْلِمٍ سُجِنَ فِيْهَا

की सज़ा में उसके अज़ाब का मज़ा चख रहा हो व अपने जुर्म व खता के बदले में उसकी तहों में महबूस किया

بِمُخَالَفَتِهٖ وَ ذَاقَ طَعْمَ عَذَابِهَا بِمَعْصِيَتِهٖ وَ حُبِسَ بَيْنَ

गया हो व वह तेरी रहमत के उम्मीदवार की सी आवाज़ से तेरे हुज़ूर में चीखता हो व तेरी तौहीद के मानने वालों

اَطْبَاقِهَا بِجُرْمِهٖ وَ جَرِيْرَتِهٖ وَ هُوَ يَضِجُّ اِلَيْكَ ضَجِيْجَ مُؤَمِّلِ

की सी ज़बान से तुझे पुकारता हो व तेरे हुज़ूर में तेरे रब होने का वास्ता देकर तुझ ही को वसीला क़रार देता हो, ऐ

لِرَحْمَتِكَ وَ يُنَادِيْكَ بِلِسَانِ اَهْلِ تَوْحِيْدِكَ وَ يَتَوَسَّلُ

मेरे मालिक फिर वह अज़ाब में कैसे रह सकेगा जबकि उसे तेरे साबिक़ हिल्म व राफ़त व रहमत की उम्मीद लगी

اِلَيْكَ بِرُبُوْبِيَّتِكَ يَا مَوْلَايَ فَكَيْفَ يَبْقٰى فِي الْعَذَابِ وَ هُوَ

हुई हो या उसे आतिशे जहन्नम तकलीफ़ कैसे पहुंचाऐगी जबकि वह तेरे फ़ज़्ल व रहमत की आस लगाऐ हुऐ हो

يَرْجُوْ مَا سَلَفَ مِنْ حِلْمِكَ اَمْ كَيْفَ تُؤْلِمُهُ النَّارُ وَ هُوَ

या उसको जहन्नमका शोला क्योंकर जलाऐगा, जबकि तू ख़ुद उसकी आवाज़ सुन रहा हो व उसकी जगह देख

يَامُلُ فَضْلَكَ وَ رَحْمَتَكَ اَمْ كَيْفَ يُحْرِقُهٗ لَهِيْبُهَا وَ اَنْتَ

रहा हो या उसे जहन्नम की आवाज़ परेशान क्यों कर करेगी? जब कि तू उसकी कम॰जोरी से आगाह हो, या वह

تَسْمَعُ صَوْتَهٗ وَ تَرٰى مَكَانَهٗ اَمْ كَيْفَ يَشْتَمِلُ عَلَيْهِ

उसकी तब॰कों में हरकत क्योंकर कर सकता है जबकि तू उसकी सच्चाई से वाकिफ़ हो, या उसके शोले उसको

زَفِيْرُهَا وَ اَنْتَ تَعْلَمُ ضَعْفَهٗ اَمْ كَيْفَ يَتَقَلْقَلُ بَيْنَ

परेशान क्योंकर कर सकते हैं जब कि वह बराबर तुझको पुकार रहा हो ऐ मेरे परवरदिगार (मेरी ख़बर ले) यह

اَطْبَاقِهَا وَ اَنْتَ تَعْلَمُ صِدْقَهٗ اَمْ كَيْفَ تَزْجُرُهٗ زَبَانِيَتُهَا وَ

क्योंकर हो सकता है कि वह तो रिहाई के बारे में तेरे फ़ज़्ल की उम्मीद रखता हो व तु उसे उसी में पड़ा रहने दे

هُوَ يُنَادِيْكَ يَا رَبَّهٗ اَمْ كَيْفَ يَرْجُوْ فَضْلَكَ فِيْ عِتْقِهٖ مِنْهَا

ऐसा हो ही नहीं सकता न तेरी निसबत यह गुमान है व न तेरे करम ही से ऐसी किसी को यह सूरत पेश आई व न

فَتَتْرُكُهٗ فِيْهَا هَيْهَاتَ مَا ذٰلِكَ الظَّنُّ بِكَ وَ لَا الْمَعْرُوْفُ

अपनी नेकी व एहसान के बाइस तूने एहले तौहीद के साथ कभी इस तरह का मामला किया। पस मैं यक़ीन के

مِنْ فَضْلِكَ وَ لَا مُشْبِهٌ لِّمَا عَامَلْتَ بِهِ الْمُوَحِّدِيْنَ مِنْ

साथ अर्ज़ करता हूँ कि अगर तुने अपने मुंकिरों को अज़ाब देने का हुक्म न लगा दिया होता व अपने मुख़ालिफ़

بِرِّكَ وَ اِحْسَانِكَ فَبِالْيَقِيْنِ اَقْطَعُ لَوْلَا مَا حَكَمْتَ بِهٖ مِنْ

को आतिशे जहन्नम में दवामी सज़ा देने का फ़ैसला न फ़रमा दिया होता तो आतिशे जहन्नम को बिल्कुल सर्द

تَعْذِيْبِ جَاحِدِيْكَ وَ قَضَيْتَ بِهٖ مِنْ اِخْلَادِ مُعَانِدِيْكَ

फ़रमा देता व वह भी इस तरह कि सलामती ही सलामती रहती व किसी एक का भी इसमें मक़ाम व जाऐ क़याम

لَجَعَلْتَ النَّارَ كُلَّهَا بَرْدًا وَّ سَلَامًا وَّ مَا كَانَتْ لِاَحَدٍ فِيْهَا

मुक़र्रर न फ़रमाता लेकिन ख़ुद तूने कि तेरे नाम भी मुक़द्दस हैं यह क़सम खाली है कि जहन्नम को तमाम

مَقَرًّا وَّ لَا مُقَامًا لٰكِنَّكَ تَقَدَّسَتْ اَسْمَآؤُكَ اَقْسَمْتَ اَنْ

नाफ़रमान जिनों व आदमियों से पाट देगा व अपनी ज़ात से इनाद रखने वालों को हमेशा के लिए इसमें डालदेगा

تَمْلَاَهَا مِنَ الْكَافِرِيْنَ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ اَجْمَعِيْنَ وَ اَنْ

व तू कि तेरी तारीफ़ जलील व अज़ीम है तू पहले ही फ़रमा चुका व अज रूऐ तफ़ज़्ज़ुलो इनामो इकराम कि क्या

تُخَلِّدَ فِيهَا الْمُعَانِدِيْنَ وَ اَنْتَ جَلَّ ثَنَآؤُكَ قُلْتَ مُبْتَدِئًا وَّ

वह जो मोमिन हो उसके मानिंद हो सकता जो फ़ासिक (हो) ये कभी बराबर नहीं हो सकते। ऐ मेरे माबूद ऐ मेरे

تَطَوَّلْتَ بِالْاِنْعَامِ مُتَكَرِّمًا اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ

सरदार तो अब तुझे इस क़ुदरत का वास्ता जो तुझको हासिल है व उस फ़ैसला का वास्ता जो तूने हतमी फ़रमाया

فَاسِقًا لَّا يَسْتَوُوْنَ اِلٰهِيْ وَ سَيِّدِيْ فَاَسْاَلُكَ بِالْقُدْرَةِ الَّتِيْ

व जिन पर तुने उनकी जज़ा फ़रमाया उन सबपर उनका निफ़ाज़ हो गया है तुझही से सवाल करता हूँ कि उस

قَدَّرْتَهَا وَ بِالْقَضِيَّةِ الَّتِيْ حَتَمْتَهَا وَ حَكَمْتَهَا وَ غَلَبْتَ مَنْ

सिरात में व ख़ास कर उस वक़्त में मेरा हर एक जुर्म बख़्श दे व हर वो गुनाह जो मुझसे सरज़द हो गया हो माफ़

عَلَيْهِ اَجْرَيْتَهَا اَنْ تَهَبَ لِيْ فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ وَ فِيْ هٰذِهِ السَّاعَةِ

कर व हर बुराई जो मैंने छुपा कर की व हर जिहालत जिसको मैं अमल में लाया हूँ जिसको मैंने छुपाया हो या

كُلَّ جُرْمٍ اَجْرَمْتُهٗ وَ كُلَّ ذَنْۢبٍ اَذْنَبْتُهٗ وَ كُلَّ قَبِيْحٍ

ज़ाहिर किया हो या पोशीदा इसका इरतेकाब किया हो या अलल ऐलान व हर ऐसी बदी जिसके इंद्राज़ का तूने

اَسْرَرْتُهٗ وَ كُلَّ جَهْلٍ عَمِلْتُهٗ كَتَمْتُهٗ اَوْ اَعْلَنْتُهٗ اَخْفَيْتُهٗ اَوْ

किरामन कातिबीन को हुक्म दिया हो, माफ़ फ़रमा, जिनको तूने मेरे ही काम की निगरानी सुपुर्द फ़रमाई है, व मेरे

اَظْهَرْتُهٗ وَ كُلَّ سَيِّئَةٍ اَمَرْتَ بِاِثْبَاتِهَا الْكِرَامَ الْكَاتِبِيْنَ

आज़ा व जवारेहके साथसाथ उनको भी तुने मेरे आमालो अफ़आल का गवाह क़रार दिया है व उनके मा वरा तू

الَّذِيْنَ وَكَّلْتَهُمْ بِحِفْظِ مَا يَكُوْنُ مِنِّيْ وَ جَعَلْتَهُمْ شُهُوْدًا

ख़ुद मेरे आमाल व अफ़आल का निगरां है व उन चीज़ों तक का गवाह है जो उन सब की नज़र से मख़फ़ी रहती

عَلَيَّ مَعَ جَوَارِحِيْ وَ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيَّ مِنْ وَّرَآئِهِمْ وَ

हैं हालांकि अपनी रहमत से तू उन सब चीज़ों को छुपाता रहता है अपने फ़ज़्ल से उनपर पर्दा डालता है और यह

الشَّاهِدَ لِمَا خَفِيَ عَنْهُمْ وَ بِرَحْمَتِكَ اَخْفَيْتَهٗ وَ بِفَضْلِكَ

सवाल करता हूँ कि हर ख़ैरो ख़ूबी में हो तू नाज़ल फ़रमाऐ व हर एहसान में जो तू अपने फ़ज़्ल से फ़रमा दे व हर

سَتَرْتَهٗ وَ اَنْ تُوَفِّرَ حَظِّيْ مِنْ كُلِّ خَيْرٍ اَنْزَلْتَهٗ اَوْ اِحْسَانٍ

नेकी में जिसे तू फैलाऐ व हर रिज़्क़ में जिसमे तू वुस्अत फ़रमाऐ व हर गुनाह की बख़शिश में व हर ख़ता के

فَضَّلْتَهٗ اَوْ بِرٍّ نَشَرْتَهٗ اَوْ رِزْقٍ بَسَطْتَهٗ اَوْ ذَنْبٍ تَغْفِرُهٗ اَوْ

पोशीदा फ़रमाने में मेरा भी बड़ा हिस्सा लगा दे ऐ मेरे परवरदिगार ऐ मेरे परवरदिगार ऐ मेरे परवर दिगार। ऐ मेरे

خَطَأٍ تَسْتُرُهٗ يَا رَبِّ يَا رَبِّ يَا رَبِّ يَا اِلٰهِيْ وَ سَيِّدِيْ وَ مَوْلَايَ

माबूद। ऐ मेरे सरदार ऐ मेरे मौला ऐ मेरी आज़ादी के मालिक ऐ वो जिसके हाथ मेरी तक़दीर है ऐ मेरे नुक़सान व

وَ مَالِكَ رِقِّيْ، يَا مَنْ بِيَدِهٖ نَاصِيَتِيْ يَا عَلِيْمًا بِضُرِّيْ وَ مَسْكَنَتِيْ

मिस्कीनी की हालत जाननेवाले ऐ मेरे फ़क्रो फ़ाक़े में मेरी ख़बरगीरी करनेवाले ऐ मेरे मालिक ऐ मेरे मालिक ऐ

يَا خَبِيْرًا بِفَقْرِيْ وَ فَاقَتِيْ يَا رَبِّ يَا رَبِّ يَا رَبِّ اَسْاَلُكَ

मेरे मालिक मैं तुझसे तेरे हक़ का वास्ता देकर व तेरी क़ुद्दूसियत का वास्ता देकर व तेरी बड़ीसे बड़ी सिफ़त व

بِحَقِّكَ وَ قُدْسِكَ وَ اَعْظَمِ صِفَاتِكَ وَ اَسْمَآئِكَ اَنْ تَجْعَلَ

बड़ेसे बड़े नाम का वास्ता देकर सवाल करता हूँ कि मेरे रातो दिन के औक़ात को अपनी यादसे भरपूर कर द

اَوْقَاتِيْ مِنَ اللَّيْلِ وَ النَّهَارِ بِذِكْرِكَ مَعْمُوْرَةً وَّ بِخِدْمَتِكَ

अपनी ख़िदमत में लगे रहने की धुन लगा दे व मेरे आमाल को अपने हुज़ूर में क़ाबिले क़ुबूल क़रार दे ताकि मेरे

مَوْصُوْلَةً وَّ اَعْمَالِيْ عِنْدَكَ مَقْبُوْلَةً حَتّٰى تَكُوْنَ اَعْمَالِيْ وَ

कुल आमालो औरादो वज़ाएफ़ की एक ही लै हो जावे व मुझे तेरी ही ख़िदमत करते रहने में दवाम हासिल हो

اَوْرَادِيْ كُلُّهَا وِرْدًا وَّاحِدًا وَّ حَالِيْ فِيْ خِدْمَتِكَ سَرْمَدًا يَا

जावे ऐ मेरे सरदार ऐ वो जिसका मुझे आसरा व जिसकी हुज़ूर में अपनी हर हालत की शिकायत पेश करता हूँ मेरे

سَيِّدِيْ يَا مَنْ عَلَيْهِ مُعَوَّلِيْ يَا مَنْ اِلَيْهِ شَكَوْتُ اَحْوَالِيْ يَا

माबूद। ऐ मेरे माबूद ऐ मेरे माबूद मेरे हाथ पाओं को अपनी ख़िदमत के लिए मज़बूत व इसी इरादे के लिए मेरे

رَبِّ يَا رَبِّ يَا رَبِّ قَوِّ عَلٰى خِدْمَتِكَ جَوَارِحِيْ وَ اشْدُدْ عَلَى

क़ल्ब को मुस्तहकम कर व मुझे यह तौफ़ीक़ दे कि मैं तुझसे डरता हूँ व मदाम तेरी ख़िदमत में लगा रहता हूँ ताकि

الْعَزِيْمَةِ جَوَانِحِيْ وَ هَبْ لِيَ الْجِدَّ فِيْ خَشْيَتِكَ وَ الدَّوَامَ فِيْ

सबक़त करने वालों के मैदानों में तेरी हुज़ूरी हासिल करने के लिए आगे बढ़ता रहूँ व तेरी सरकार में पहुंचने के

اَلْاِتِّصَالِ بِخِدْمَتِكَ حَتّٰى اَسْرَحَ اِلَيْكَ فِيْ مَيَادِيْنِ

लिए जल्दी करने वालों में तेज़तेज़ क़दम उठाऊं व तेरा क़ुर्ब हासिल करनेका इश्तियाक़ रखने वालों का सा शौक़

السَّابِقِيْنَ وَ اُسْرِعَ اِلَيْكَ فِي الْبَارِزِيْنَ وَ اَشْتَاقَ اِلٰى

मुझे भी हासिल रहे व तेरी जनाब में इख़लास रखनेवालों की सी नज़दीकी मुझे भी हासिल हो व तेरी ज़ात वाला

قُرْبِكَ فِي الْمُشْتَاقِيْنَ وَ اَدْنُوَ مِنْكَ دُنُوَّ الْمُخْلِصِيْنَ وَ

सिफ़ात पर यक़ीन रखने वालों की तेह मैं भी डरता रहूँ व तेरी बारगाह में ईमान रखने वालों के साथ मुझे भी

اَخَافَكَ مَخَافَةَ الْمُوْقِنِيْنَ وَ اَجْتَمِعَ فِيْ جِوَارِكَ مَعَ

शामिल होने का मौक़ा मयस्सर आऐ या अल्लाह जो मेरे साथ किसी तरह की बदी करने का इरादा करे तू तो वैसा

الْمُؤْمِنِيْنَ اَللّٰهُمَّ وَ مَنْ اَرَادَنِيْ بِسُوْٓءٍ فَاَرِدْهُ وَ مَنْ كَادَنِيْ

ही इरादा उसके हक़ में कर व जो मुझसे चाल चले तो तू वैसा ही बदला उससे ले व अपने उन बन्दों में क़रार दे

فَكِدْهُ وَ اجْعَلْنِيْ مِنْ اَحْسَنِ عَبِيْدِكَ نَصِيْبًا عِنْدَكَ وَ

जो हिस्सा पाने में तेरे नज़दीक अच्छे हों व तेरा क़ुर्ब हासिल करने में बड़ी से बड़ी मंज़लत रखते हों व तेरी हुज़ूरी

اَقْرَبِهِمْ مَنْزِلَةً مِنْكَ وَ اَخَصِّهِمْ زُلْفَةً لَدَيْكَ فَاِنَّهٗ لَا

में उनको ख़ुसूसियत हासिल हो इस लिए कि यह रुतबा बग़ैर तेरे ख़ास फ़ज़्ल के नहीं मिल सकता व अपनी ख़ास

يُنَالُ ذٰلِكَ اِلَّا بِفَضْلِكَ وَجُدْ لِيْ بِجُوْدِكَ وَ اعْطِفْ عَلَيَّ

दीन से मुझे बहरावर फ़रमा व अपनी शान के मुताबिक़ मुझ पर मेहरबानी फ़रमा व अपनी ख़ास रहमत मबज़ूल

بِمَجْدِكَ وَ احْفَظْنِيْ بِرَحْمَتِكَ وَ اجْعَلْ لِّسَانِيْ بِذِكْرِكَ لَهِجًا

फ़रमाकर मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा व मेरी ज़बान को अपनी याद में चलता रख व मेरे दिल को अपनी मोहब्बत में

وَّ قَلْبِیْ بِحُبِّكَ مُتَيَّمًا وَّ مُنَّ عَلَیَّ بِحُسْنِ اِجَابَتِكَ وَ اَقِلْنِیْ

मुस्तग़रक़ फ़रमा व मेरी दुआ ख़ूबी के साथ क़ुबूल फ़रमा मुझ पर एहसान कर व मेरी बुराईयां दूर फ़रमा दे व मेरी

عَثْرَتِیْ وَ اغْفِرْ زَلَّتِیْ فَاِنَّكَ قَضَيْتَ عَلٰی عِبَادِكَ بِعِبَادَتِكَ

लगिज़शें बख़्श दे इस लिए कि तूने अपने बन्दों के बारे में यह फ़रमा दिया है कि वह तेरी इबादत किया करें व

وَ اَمَرْتَهُمْ بِدُعَآئِكَ وَ ضَمِنْتَ لَهُمُ الْاِجَابَةَ فَاِلَيْكَ يَا رَبِّ

उनको तूने यह हुक्म दे दिया है कि तुझ ही से दुआ मांगा करें व उनकी ख़ातिर से क़ुबूलियते दुआ की ख़ुद तुने

نَصَبْتُ وَجْهِیْ وَ اِلَيْكَ يَا رَبِّ مَدَدْتُ يَدِیْ فَبِعِزَّتِكَ

जमानत फ़रमाई है ऐ मेरे परवरदिगार। तेरी हुज़ूर में अपने हाथ फैला दिऐ पस अपनी इज़्ज़त के सदके में मेरी

اسْتَجِبْ لِیْ دُعَآئِیْ وَ بَلِّغْنِیْ مُنَایَ وَ لَا تَقْطَعْ مِنْ فَضْلِكَ

यह दुआ क़ुबूल फ़रमा जा मेरी मुंतहाऐ आर्ज़ू तक मुझे पहुंचा दे व अपने फ़ज़लो करम में मुझे ना उम्मीद न कर व

رَجَآئِیْ وَ اكْفِنِیْ شَرَّ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ مِنْ اَعْدَآئِیْ يَا سَرِيْعَ

जिनों व आदमियों से जितने भी मेरे दुश्मन हों उन सबके शरसे मुझे बचा ले ऐ सबसे जल्दी राज़ी होनेवाले उसे

الرِّضَا اغْفِرْ لِمَنْ لَّا يَمْلِكُ اِلَّا الدُّعَآءَ فَاِنَّكَ فَعَّالٌ لِمَا

बख़्श दे जिसका दुआ करने के सिवा बस नहीं चलता इस लिए कि तू जो चाहे उसे बे धड़क कर गुज़रता है ऐ

تَشَآءُ يَا مَنِ اسْمُهٗ دَوَآءٌ وَ ذِكْرُهٗ شِفَآءٌ وَ طَاعَتُهٗ غِنًی اِرْحَمْ

वह कि जिसका नाम (हर जिसमानी मर्ज़ की) दवा व जिस की याद (हर रूहानी मर्ज़ की) शिफ़ा व जिसकी

مَنْ رَأْسُ مَالِهِ الرَّجَآءُ وَ سِلَاحُهُ الْبُكَآءُ يَا سَابِغَ النِّعَمِ يَا

इताअत बेनियाज़ी की शाद पैदा कर देनेवाली है उस पर शख़्स रहम कर जिसकी पुंजी उम्मीद है व जिसके

دَافِعَ النِّقَمِ يَا نُوْرَ الْمُسْتَوْحِشِيْنَ فِي الظُّلَمِ يَا عَالِمًا لَّا

हथियार रोना (पीटना) है ऐ नेमतों को गवारा बनानेवाले ऐ बलाओं को दफ़ा करनेवाले ऐ अंधेरों में घबरानेवालों

يُعَلَّمُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَّ افْعَلْ بِيْ مَا اَنْتَ اَهْلُهٗ وَ

को रौशनी पहुंचाने वाले ऐ उसका सा इल्म रखने वाले जिसे कोई तालीम नहीं दी जाती, तू मोहम्मदो आले

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ الْاَئِمَّةِ الْمَيَامِيْنَ مِنْ آلِهٖ وَ سَلَّمَ

मोहम्मद पर रेहमत भेज व मेरे हक़ में वो कर जो तेरी शानमें ज़ेबा है व ऐ अल्लाह अपने रसूल पर व उनकी

تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا.

औलाद में जो साहिबे बरकत इमाम हैं उन पर रहमत व ऐसा सलाम भेज जैसा भेजने का हक़ है बहुत बहुत

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सलाम।

दुआए अशरात

यह भी इन्तेहाई मोअतबर दुआओं में है जिसके नुसखों में काफ़ी इ॰ख्तेलाफ़ है लेकिन हम यहाँ इसे मिस्बाहे शेख से ॰नक्ल कर रहे हैं और मुस्तहब है के इसे सुबहो शाम पढ़ा जाए। और इसका बेहतरीन समय अस्र के बाद है।

سُبْحَانَ اللهِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ لاَ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَ اللهُ اَكْبَرُ وَ لاَ حَوْلَ وَ لاَ قُوَّةَ

ख़ुदाए मेहेरबान और रहीम के नाम से। ख़ुदाया पाकीज़ा है सारी हम्द उसके लिए है। उसके अलावा

اِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ سُبْحَانَ اللهِ اٰنَآءَ اللَّيْلِ وَ اَطْرَافَ النَّهَارِ

कोई ख़ुदा नही है और वो हर शै से बड़ा है। उस ख़ुदाए अज़ीम व अलीम के अलावा कोई क़ुव्वत व

سُبْحَانَ اللهِ بِالْغُدُوِّ وَ الْاٰصَالِ سُبْحَانَ اللهِ الْعَشِيِّ وَ الْاِبْكَارِ سُبْحَانَ

ताक़त नही। उसकी तसबीह रात के समय मे और दिन के अतराफ़ मे है। उसकी तसबीह सुबह व शाम

اللهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَ حِيْنَ تُصْبِحُوْنَ وَ لَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ

है। उसकी तसबीह सुबह के शुरू मे और शाम के शुरू मे है। उसकी तसबीह हर शाम और सुबह है। वो

الْاَرْضِ وَ عَشِيًّا وَّ حِيْنَ تُظْهِرُوْنَ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ يُخْرِجُ

तारीफ़ के क़ाबिल है। जब भी शाम या सुबह होती है उसके लिए हम्द है आस-मानों मे और ज़मीनों मे

الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَ يُحْيِي الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ

शाम के समय और दोपहर के समय के वो ज़िन्दा को मुर्दा से और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है। और

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَ سَلاَمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَ

मुर्दा ज़मीनोंको ज़िन्दा बना देता है। और यूही तुमहे भी ज़मीन से निकाला जाएगा। पाकिज़ा है तुमहारा

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ سُبْحَانَ ذِي الْمُلْكِ وَ الْمَلَكُوْتِ سُبْحَانَ ذِي

परवरदिगार जो साहिबे इज़्ज़त और हर वरणन से उच्च है। सलाम है मुरसलीन पर और हम्द है ख़ुदाए

الْعِزَّةِ وَ الْجَبَرُوْتِ سُبْحَانَ ذِى الْكِبْرِيَآءِ وَ الْعَظَمَةِ الْمَلِكِ الْحَقِّ

रब्बुल आलमीन के लिए। पाकीज़ा है वो जो साहेबे मुल्क व मलकूत है। पाकीज़ा है वो जो साहेबे

الْمُهَيْمِنِ الْقُدُّوْسِ سُبْحَانَ اللهِ الْمَلِكِ الْحَيِّ الَّذِىْ لاَ يَمُوْتُ سُبْحَانَ

इज़्ज़त व जबरूत है। पाकीज़ा है वो जो साहेबे किबरिआई व अज़मत है। वो बादशाह बरहक़ है। हर शै

اللهِ الْمَلِكِ الْحَيِّ الْقُدُّوْسِ سُبْحَانَ الْقَآئِمِ الدَّائِمِ سُبْحَانَ الدَّائِمِ

का निगरान है। पाकीज़ा सिफ़ात है। वो जो बादशाह हई है जिकसे लिए मौत नही है। पाकीज़ा है वो

الْقَآئِمِ سُبْحَانَ رَبِّىَ الْعَظِيْمِ سُبْحَانَ رَبِّىَ الْاَعْلٰى سُبْحَانَ الْحَيِّ الْقَيُّوْمِ

बादशाह हई जो क़ुद्दूस है। पाकिज़ा है वो जो क़ायम व दायम है। पाकीज़ा है वो जो दायम व क़ायम है।

سُبْحَانَ الْعَلِيِّ الْاَعْلٰى سُبْحَانَهٗ وَ تَعَالٰى سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّنَا وَ رَبُّ

पाकीज़ा है ख़ुदाए अज़ीम। पाकिज़ा है ख़ुदाए आला। पा किज़ा है ख़ु दाए हय्यो क़य्यूम। पाकीज़ा है

الْمَلآئِكَةِ وَ الرُّوْحِ سُبْحَانَ الدَّائِمِ غَيْرِ الْغَافِلِ سُبْحَانَ الْعَالِمِ

ख़ुदाए अली व आला। पाकीज़गी है उस ख़ुदाए के लिये जो बुलंद और इनताहाई पाकीज़ा और पाकिज़ा

بِغَيْرِ تَعْلِيْمٍ سُبْحَانَ خَالِقِ مَا يُرٰى وَ مَا لاَ يُرٰى سُبْحَانَ الَّذِىْ يُدْرِكُ

सिफ़ात है हमारा रब। जो मलाएका और रूह का भी परवरदिगार है। पाकिज़गी है उसके लिए जो दाएम

الْاَبْصَارَ وَ لاَ تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَ هُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ

है और गिफ़ल नही है। आलिम है और तालीम का मोहताज नही। पाकीज़गी उसके लिए है जो हर

اَصْبَحْتُ مِنْكَ فِيْ نِعْمَةٍ وَ خَيْرٍ وَّ بَرَ كَةٍ وَّ عَافِيَةٍ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ

दिखने वाली और न दिखने वाली चीज़ का बनानेवाला है। पाकिज़गी उसके लिए है जो निज़ामों को

اٰلِهٖ وَاَتِمَّ عَلَيَّ نِعْمَتَكَ وَ خَيْرَكَ وَ بَرَكَاتِكَ وَ عَافِيَتَكَ بِنَجَاةٍ مِنَ

देखता है और निगाहें उसे नही देख सकती हैं के वो लतीफ़ भी है और ख़बीर भी है। ख़ुदाया मैने तेरी

النَّارِ وَارْزُقْنِيْ شُكْرَكَ وَعَافِيَتَكَ وَ فَضْلَكَ وَ كَرَامَتَكَ اَبَدًا مَا

तरफ़ से नेमत व ख़ैर व बरकत व आफ़यत मे सुबह की है। लेहाज़ा मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत

اَبْقَيْتَنِيْ اَللّٰهُمَّ بِنُوْرِكَ اهْتَدَيْتُ وَ بِفَضْلِكَ اسْتَغْنَيْتُ وَ

नाज़िल फ़रमा और मुझपर अपनी नेमत अपने ख़ैर अपनी बरकात और अपनी आफ़यत को यूँ मुकम्मल

بِنِعْمَتِكَ اَصْبَحْتُ وَ اَمْسَيْتُ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اُشْهِدُكَ وَ كَفٰى بِكَ

कर दे के मुझे जहन्नम से नजात देदे। और मुझे शुक्र की ताफ़ीक़ और फ़ज़्ल व करामत इनायत फ़रमादे।

شَهِيْدًا وَّ اُشْهِدُ مَلٰئِكَتَكَ وَ اَنْبِيَآئَكَ وَ رُسُلَكَ وَ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَ

जब तक इस दुनिया मे जिंदा रखे ख़ुदाया मैने तेरे नूर से हिदायत पाई और तेरे फ़ज़्ल के ज़रिए बेनियाज़

سُكَّانَ سَمٰوَاتِكَ وَ اَرْضِكَ وَ جَمِيْعَ خَلْقِكَ بِاَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا

हो गया। और तेरी नेमत मे सुबह व शाम की है। ख़ुदाया मै तुझही को गवाह बनाता हूँ और तेरी गवाही

اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَ اَنَّ مُحَمَّدًا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ عَبْدُكَ

काफ़ी है। तेरे मलाएका अंबिया व मुरसलीन हामिलाने अर्श सुक्काने समावात व अर्ज़ और तमाम

وَرَسُوْلُكَ وَ اَنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ تُحْیِیْ وَ تُمِیْتُ وَ تُمِیْتُ وَ تُحْیِیْ وَ

मख़लूक़ात को जमा करके कहता हूँ के तू अल्लाह है। तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है। अकेला है। तेरा

اَشْهَدُ اَنَّ الْجَنَّتَ حَقٌّ وَّ اَنَّ النَّارَ حَقٌّ وَ النُّشُوْرَ حَقٌّ وَّ السَّاعَةَ اٰتِیَةٌ

कोई शरीक नही है। हज़रत मुहम्मद (स) तेरे बंदे और रसूल हैं। तू हर शै पर क़ादिर है। हयात व मौत,

لَّا رَیْبَ فِیْهَا وَ اَنَّ اللّٰهَ یَبْعَثُ مَنْ فِی الْقُبُوْرِ وَ اَشْهَدُ اَنَّ عَلِیَّ بْنَ اَبِیْ

मौत व जिंदगी सब तेरे हाथ मे है। मै गवाही देता हूँ के जन्नत और जहन्नम हक़ हैं। हशर और नशर हक़

طَالِبٍ اَمِیْرُ الْمُؤْمِنِیْنَ حَقًّا حَقًّا وَ اَنَّ الْاَئِمَّةَ مِنْ وُلْدِهٖ هُمُ الْاَئِمَّةُ

है। क़यामत आनेवाली है। उसमे कोई शक नही है। और अल्लाह सबको कब्रोंसे उठानेवाला है। और मै

الْهُدَاةُ الْمَهْدِیُّوْنَ غَیْرُ الضَّآلِّیْنَ وَ لَا الْمُضِلِّیْنَ وَ اَنَّهُمْ اَوْلِیَآؤُكَ

गवाही देता हूँ के हज़रत अली इब्ने अबी तालिब यक़ीनन मोमिनीन के अमीर हैं। और उनकी औलाद

الْمُصْطَفَوْنَ وَ حِزْبُكَ الْغَالِبُوْنَ وَ صِفْوَتُكَ وَ خِیَرَتُكَ مِنْ خَلْقِكَ وَ

के आइम्मा हादी और महदी न गुमराह हैं और न गुमराह करनेवाले वो तेरे चुनिंदा औलिया हैं। और तेरी

نُجَبَآؤُكَ الَّذِیْنَ انْتَجَبْتَهُمْ لِدِیْنِكَ وَ اخْتَصَصْتَهُمْ مِنْ خَلْقِكَ وَ

ग़ालिब आनेवाली जमात मे हैं। तेरे ख़ास मख़लूक़ात मे चुने हुए और तेरे ख़ालिस बंदे हैं। जिनको तूने

اصْطَفَیْتَهُمْ عَلٰى عِبَادِكَ وَ جَعَلْتَهُمْ حُجَّةً عَلَى الْعَالَمِیْنَ صَلَوَاتُكَ

दीन के लिए चूना है। मख़लूक़ात मे मख़सूस क़रार दिया है। बंदों मे से मुनतिख़ब बनाया है। और

عَلَيْهِمْ وَالسَّلَامُ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَللّٰهُمَّ اكْتُبْ لِيْ هٰذِهِ

आलामीन पर अपनी हुज्जत करार दिया है। सलवात हो उन सब पर और सलाम और रहमत और

الشَّهَادَةَ عِنْدَكَ حَتّٰى تُلَقِّنَنِيْهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَ اَنْتَ عَنِّيْ رَاضٍ

बरकात हो। ख़ुदा या मेरे लिए इस शहादत के अपने यहाँ दर्ज करले ताके क़यामत के दिन मुझे उसकी

اِنَّكَ عَلٰى مَا تَشَآءُ قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا يَصْعَدُ اَوَّلُهٗ وَ لَا

तलक़ीन कर दे और तू मुझसे राज़ी रहे इस लिए के तू हर शै पर क़ादिर है। ख़ुदाया तेरे लिए वो हम्द है

يَنْفَدُ اٰخِرُهٗ اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا تَضَعُ لَكَ السَّمَآءُ كَنَفَيْهَا وَ

जिसकी इबतिदा बुलंद और जिसकी इंतिहा न होनेवाली है। ख़ुदाया तेरे लिए हम्द है। वो हम्द जिसके

تُسَبِّحُ لَكَ الْاَرْضُ وَ مَنْ عَلَيْهَا اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا سَرْمَدًا

सामने आसमान झुक गए हैं। और जिसकी बिना पर ज़मीन और अहले ज़मीन तेरी तसबीह कर रहे हैं।

اَبَدًا لَا انْقِطَاعَ لَهٗ وَ لَا نَفَادَ وَ لَكَ يَنْبَغِيْ وَ اِلَيْكَ يَنْتَهِيْ فِيَّ وَ عَلَيَّ وَ

ख़ुदाया तेरे लिए सरमदी अबदी हम्द है। जो न ख़त्म होनेवाली और न फ़ना होनेवाली है। तेरे शायाने

لَدَيَّ وَ مَعِيْ وَ قَبْلِيْ وَ بَعْدِيْ وَ اَمَامِيْ وَ فَوْقِيْ وَ تَحْتِيْ وَ اِذَا مِتُّ وَ

शान है। और तेरी ही तरफ़ पलट कर आनेवाली है। जो ज़ाहिर होती है मेरे अंदर मेरे ऊपर मेरे पास। मेरे

بَقِيْتُ فَرْدًا وَّحِيْدًا ثُمَّ فَنِيْتُ وَ لَكَ الْحَمْدُ اِذَا نُشِرْتُ وَ بُعِثْتُ يَا

साथ। मुझसे पहले मेरे बाद। मेरे सामने मेरे ऊपर मेरे नीचे मेरे मरने के बाद। और फिर जब मै तन ओ

مَوْلَایَ اَللّٰهُمَّ وَ لَكَ الْحَمْدُ وَ لَكَ الشُّكْرُ بِجَمِيْعِ مَحَامِدِكَ كُلِّهَا عَلٰى

तनहा रह जाऊँ और फ़नाह हो जाऊँ। तेरे लिए हम्द है जब मै क़बर से उठाया जाऊँ मेरे परवरदिगार तेरे

جَمِيْعِ نَعْمَآئِكَ كُلِّهَا حَتّٰى يَنْتَهِيَ الْحَمْدُ اِلٰى مَا تُحِبُّ رَبَّنَا وَ تَرْضٰى

लिए हम्द है और तेरे लिए शुक्र है। तमाम नेमतों पर तमाम तारीफ़ें तेरे ही लिए हैं। यहाँ तक के ये हम्द

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى كُلِّ اَكْلَةٍ وَ شَرْبَةٍ وَّبَطْشَةٍ وَّ قَبْضَةٍ وَّ بَسْطَةٍ وَّ

उस मंजिल तक पहुँच जाए जिसको तू पसंद करता है। ख़ुदाया तेरे लिए हम्द है हर खाने पर पीने पर

فِيْ كُلِّ مَوْضِعِ شَعْرَةٍ اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا خَالِدًا مَعَ خُلُوْدِكَ وَ

ताक़त पर बंद और खुलने पर और शरीर के हर रोंए की मंजिल पर। ख़ुदाया तेरे लिए हम्द है जो हमेशाँ

لَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا لَا مُنْتَهٰى لَهٗ دُوْنَ عِلْمِكَ وَ لَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا لَا اَمَدَ

रहने वाली है। और तेरे लिए हम्द है जिसकी कोई इन्तेहा नही है। तेरे इल्म से पहले तेरे लिए वो हम्द है

لَهٗ دُوْنَ مَشِيَّتِكَ وَ لَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا لَا اَجْرَ لِقَآئِلِهٖ اِلَّا رِضَاكَ وَ لَكَ

जिसकी तेरी मशीयत के अलावा कोई इन्तेहा नही है। और तेरे लिए वो हम्द है जिसके हम्द गुज़ारों की

الْحَمْدُ عَلٰى حِلْمِكَ بَعْدَ عِلْمِكَ وَ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى عَفْوِكَ بَعْدَ قُدْرَتِكَ

कोई उजरत तेरी रज़ा के अलावा कुछ नही है। तेरे लिए हम्द है के तू इल्म के बाद भी हिल्म रखता है।

وَ لَكَ الْحَمْدُ بَاعِثَ الْحَمْدِ وَ لَكَ الْحَمْدُ وَارِثَ الْحَمْدِ وَ لَكَ الْحَمْدُ بَدِيْعَ

और क़ुदरत के बाद भी माफ़ कर देता है। तेरे लिए हम्द है के तू हम्द का मौजिद है। तेरे लिए हम्द है के

الْحَمْدِ وَ لَكَ الْحَمْدُ مُنْتَهَى الْحَمْدِ وَ لَكَ الْحَمْدُ مُبْتَدِعَ الْحَمْدِ وَ لَكَ

तू हम्द का वारिस है। तेरे लिए हम्द है के तू हम्द का मौजिद है। तेरे लिए हम्द है और आख़री दरजे की

الْحَمْدُ مُشْتَرِیَ الْحَمْدِ وَ لَكَ الْحَمْدُ وَ لِیَّ الْحَمْدِ وَ لَكَ الْحَمْدُ قَدِیْمَ

हम्द है। तेरे लिए हम्द है ऐ हम्द के मौजिद। तेरे लिए हम्द है ऐ हम्द के ख़रीदार व क़दरदान। तेरे लिए

الْحَمْدِ وَ لَكَ الْحَمْدُ صَادِقَ الْوَعْدِ وَفِیَّ الْعَهْدِ عَزِیْزَ الْجُنْدِ قَائِمَ

हम्द है ऐ हम्द के वली। तेरे लिए हम्द है जो हमेशा से है। तेरे लिए हम्द है के तू सादिक़ुल वाद है। अहद

الْمَجْدِ وَ لَكَ الْحَمْدُ رَفِیْعَ الدَّرَجَاتِ مُجِیْبَ الدَّعْوَاتِ مُنْزِلَ

का पूरा करनेवाला है। तेरा लशकर ग़ालिब और तेरी बुज़ुर्गा दाएमी है। तेरे वास्ते हम्द है के तू दर्जात को

الْآیَاتِ مِنْ فَوْقِ سَبْعِ سَمٰوَاتٍ عَظِیْمَ الْبَرَكَاتِ مُخْرِجَ النُّوْرِ مِنَ

बुलंद करनेवाला है। दुआओं को क़बूल करनेवाला है। सातों आसमानों की बुलंदी से आयात का नाज़ल

الظُّلُمَاتِ وَ مُخْرِجَ مَنْ فِی الظُّلُمَاتِ اِلَی النُّوْرِ مُبَدِّلَ السَّیِّئٰاتِ

करने वाला अज़ीम बरकतों वाला नूर को ज़ुलमतों से निकालने वाला। और ज़ुलमतों मे मुबद्दिला को

حَسَنَاتٍ وَ جَاعِلَ الْحَسَنَاتِ دَرَجَاتٍ اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ غَافِرَ

नूर तक पहुचाने वाला है। बुराईयों को नेकियों से बदलने वाला और नेकियों को दर्जात मे बदलने

الذَّنْبِ وَ قَابِلَ التَّوْبِ شَدِیْدَ الْعِقَابِ ذَالطَّوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

वाला। ख़ुदाया तेरे लिए हम्द है के तू गुनाहोंका बख़्शने वाला तौबा का क़बूल करने वाला। सख़्त

اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ فِي اللَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى وَ لَكَ الْحَمْدُ فِي

अज़ाब करने वाला। और बेहतरीन मेहेरबान है। तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है। तेरी तरफ़ सबकी

النَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى وَ لَكَ الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ وَ الْاُوْلٰى وَ لَكَ الْحَمْدُ عَدَدَ

बाजंगश्त है। ख़ुदाया तेरे ही लिए हम्द है। जब रात छा जाए। और तेरे ही लिए हम्द है जब दिन रौशन हो

كُلِّ نَجْمٍ وَّ مَلَكٍ فِي السَّمَآءِ وَ لَكَ الْحَمْدُ عَدَدَ الثَّرٰى وَ الْحَصٰى وَ

जाए। तेरे ही लिए हम्द है शुरू मे और अंत मे। तेर ही लिए हम्द है हर आसमान के सितारों और

النَّوٰى وَ لَكَ الْحَمْدُ عَدَدَ مَا فِي جَوِّ السَّمَآءِ وَ لَكَ الْحَمْدُ عَدَدَ مَا فِي

फ़रिश्तों के अंक के बराबर। तेरे ही लिए हम्द है जमीन की रेत के ज़र्रात के बराबर। तेरे ही लिए हम्द है

جَوْفِ الْاَرْضِ وَ لَكَ الْحَمْدُ عَدَدَ اَوْزَانِ مِيَاهِ الْبِحَارِ وَ لَكَ الْحَمْدُ

आसमान की ःफिज़ा के मख़लूक़ात के बराबर। तेरे ही लिए हम्द है ज़मीन के अंदर रहनेवाली

عَدَدَ اَوْرَاقِ الْاَشْجَارِ وَ لَكَ الْحَمْدُ عَدَدَ مَا عَلٰى وَجْهِ الْاَرْضِ وَ لَكَ

मख़लूक़ात के बराबर। तेरे लिए हम्द है समंदर के वजन के बराबर। तेरे लिए हम्द है दरख़तों के पत्तों के

الْحَمْدُ عَدَدَ مَا اَحْصٰى كِتَابُكَ وَ لَكَ الْحَمْدُ عَدَدَ مَا اَحَاطَ بِهٖ عِلْمُكَ

बराबर। तेरे लिए हम्द है तमाम ज़मीन की मख़लूक़ात के बराबर। तेरे लिए हम्द है उन तमाम चीजों के

وَ لَكَ الْحَمْدُ عَدَدَ الْاِنْسِ وَ الْجِنِّ وَ الْهَوَآمِّ وَ الطَّيْرِ وَ الْبَهَآئِمِ وَ

बराबर जिनको लौहे महफ़ूज मे गिना किया गया है। तेरे लिए हम्द है उतनी जिस पर तेरा इल्म मोहीत है।

اِلسَّبَاعِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيْهِ كَمَا تُحِبُّ رَبَّنَا وَ تَرْضٰى وَ

तेरे लिए हम्द है तमाम इंसान जिन्नात जानवर परिंदे सबके अंकों के बराबर। बेशुमार हम्द तय्यब व

كَمَا يَنْبَغِى لِكَرَمِ وَجْهِكَ وَ عِزِّ جَلَالِكَ

पाकीज़ा व मुबारक हम्द जैसी हम्द तू चाहता है और पसंद करता है। और जैसी हम्द तेरी शाने करम

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ حْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ

और इज़्ज़त व जलाल के शायाने शान है।

इसके बाद हर एक को दस बार कहे:

اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ

उस ख़ुदाके अलावा कोई ख़ुदा नही है। और उसका कोई शरीक नही है। उसीके लिए मुल्क है और

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ يُحْيِىْ وَ يُمِيْتُ

उसीके लिए हम्द है। वो लतीफ़ भी है और ख़बीर भी है।

وَ يُمِيْتُ وَ يُحْيِىْ وَ هُوَ حَىٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ

ख़ुदाके अलावा कोई ख़ुदा नही है। वो अकेला है और उसका कोई शरीक नही है। उसीके लिए मुल्क है

قَدِيْرٌ

और उसी के लिए हम्द है। वो जिंदगी और मौत और मौत और जिंदगी देने वाला है। वो जिंदा है जिसे लिए

اَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَ اَتُوْبُ اِلَیْهِ

मौत नही। उसके क़ब्ज़े मे ख़ैर है। और वो हर शै पर क़ादिर है।

یَا اَللّٰهُ یَا اَللّٰهُ

मै इसतिग़फ़ार करता हूँ उस अल्लाह की बारगाह मे जिसके अलावा कोई ख़ुदा नही है। और वो हय्यो

یَا رَحْمٰنُ یَا رَحْمٰنُ

क़य्यूम है। और उसी से तौबा करता हूँ। ऐ अल्लाह ऐ अल्लाह।

یَا رَحِیْمُ یَا رَحِیْمُ

ऐ रहमान ऐ रहमान।

یَا بَدِیْعَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ

ऐ रहीम ऐ रहीम।

یَا ذَا الْجَلَالِ وَ الْاِکْرَامِ

ऐ आसमान और ज़मीन के ख़ालिक।

یَا حَنَّانُ یَا مَنَّانُ

ऐ साहेबे जलाल व इक्राम।

یَا حَیُّ یَا قَیُّوْمُ

ऐ मेहेरबान ऐ मोहसिन।

يَا حَيُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

ऐ हय्यो ऐ क़य्यूम।

يَا اَللّٰهُ يَا لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

ऐ जिंदा जिसके अलावा कोई ख़ुदा नही है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ऐ अल्लाह ऐ तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है।

اَللّٰهُمَّ افْعَلْ بِيْ مَا اَنْتَ اَهْلُهٗ

बारे इलाहा मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत भेज।

اٰمِيْنَ اٰمِيْنَ

ख़ुदाया मेरे साथ वो बरताओ कर जिसका तू अहल है।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ

आमीन आमीन।

इसके बाद कहे

اَللّٰهُمَّ اسْنَعْ بِيْ مَا اَنْتَ اَهْلُهٗ وَ لَا تَصْنَعْ بِيْ مَا اَنَا اَهْلُهٗ فَاِنَّكَ اَهْلُ

ऐ रसूल ख़ुदा कह दीजिए के वो अल्लाह अहद है।

التَّقْوٰى وَ اَهْلُ الْمَغْفِرَةِ وَ اَنَا اَهْلُ الذُّنُوْبِ وَ الْخَطَايَا فَارْحَمْنِىْ يَا

परवरदिगार मेरे साथ वो सुलूक करना जिसका तू अहल है और वो सुलूक न करना जिसका मै अहल हूँ।

مَوْلَاىَ وَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ.

इस लिए के तू अहले तक़वा और अहले मग़्फ़िरत है। और मै अहले ज़ुनूब व मासी हूँ। ख़ुदा मुझपर रहम

لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَمُوْتُ وَالْحَمْدُ

फ़रमा के तू बेहतरीन रहेम करने वाला है।

لِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَ لَمْ يَكُنْ

ख़ुदा के अलावा कोई क़ुव्वत और ताक़त नही है। मेरा एतेमाद उस ख़ुदा ए जिंदा पर है। जिसको मौत नही

لَّهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَ كَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا.

है। सारी हम्द उस अल्लाह के लिए है जिसने किसी को बेटा नही बनाया। उसकी हुकूमत मे कोई शरीक

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नही है। उसकी कम॰जोरी मे कोई मददगार नही है। और उसकी मुसलसल तकबीर होनी चाहिए।

दुआए सिमात

जो दुआ शबूर के नाम से मशहूर है और जिसका जुमा के दिन आखरी समय में पढना मुस्तहब है। ओलमा सलफ यह दुआ को बराबर पढा करते थे। मिस्बाहे शेख तूसी और जमालुल उसबू सय्यद इब्ने ताऊस और अल्लामा कफ्अमी की किताबों में मोअतबर सनदों के साथ जनाब मोहम्मद

बिन उसमान अमरी से नक्ल की गई है। जो इमामे अस्र (अ.त.फ.श.) के नाएबीने खास में से थे। और इसकी रवायत इमाम मोहम्मद बाकर और इमाम जाफर सादिक (अ) से की गई है। अल्लामा मजलिसी ने बेहार में इसकी शरह भी की है। मिस्बाहे शेख के अनुसार दुआ इस प्रकार है:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُكَ بِاسۡمِكَ الۡعَظِيۡمِ الۡاَعۡظَمِ الۡاَعَزِّ الۡاَجَلِّ

ऐ ख़ुदा। तेरा वह नाम जो बहुत बड़ा है बेहद अज़ीम बहुत बा इज़्ज़त व कमाल दरजे के नमा हैं इसके वास्ते से

الۡاَكۡرَمِ الَّذِیۡ اِذَا دُعِيۡتَ بِهٖ عَلٰی مَغَالِقِ اَبۡوَابِ السَّمَآءِ

अर्ज़ गुज़ार हूं कि तेरा वह नाम नामी जिसके ज़रिये अगर आसमान के बन्द दरवाज़ों के खुलने की दुआ मांगी

لِلۡفَتۡحِ بِالرَّحۡمَةِ انۡفَتَحَتۡ وَاِذَا دُعِيۡتَ بِهٖ عَلٰی مَضَآئِقِ اَبۡوَابِ

जाये तो रहमत व बरकत के साथ वह खुल जायें और जो यह नाम ले कर तेरे हुज़ूर गुज़ारिश हो कि ज़मीन का

الۡاَرۡضِ لِلۡفَرَجِ انۡفَرَجَتۡ وَاِذَا دُعِيۡتَ بِهٖ عَلَی الۡعُسۡرِ لِلۡيُسۡرِ

सुकड़ा हुआ दामन फैल जाये तो न मुश्किल की कोइ तह रहे और ना सऊबत की कोई शिकन दिखाई दे नीज़

تَيَسَّرَتۡ وَاِذَا دُعِيۡتَ بِهٖ عَلَی الۡاَمۡوَاتِ لِلنُّشُوۡرِ انۡتَشَرَتۡ وَ

अगर यह दुश्वारियों का आसान बनाने के लिए लिया जाये तो हर वक्त सहूलत इख़्तियार करले इसी तरह

اِذَا دُعِيۡتَ بِهٖ عَلٰی كَشۡفِ الۡبَاۡسَآءِ وَ الضَّرَّآءِ انۡكَشَفَتۡ وَ

अगर मुर्दों को दोबारा ज़िन्दगी दिलाने के लिए इस नाम का साहरा लिया जाये तो मरनेवाले जी उठें और जो

بِجَلَالِ وَجْهِكَ الْكَرِيْمِ اَكْرَمِ الْوُجُوْهِ وَ اَعَزِّ الْوُجُوْهِ الَّذِیْ

ग़मो अंदोह, रंजो मुसीबत से बचने के लिए उसे वास्ता बनायें तो न दुख की घटा उठे और न दर्द के बादल छायें

عَنَتْ لَهُ الْوُجُوْهُ وَ خَضَعَتْ لَهُ الرِّقَابُ وَ خَشَعَتْ لَهُ

नीज़ तेरी बा करामत ज़ात के जलालो अज़मत की क़सम। हां तेरी वह ज़ाते अक़दस जो सेहने इम्कान में सबसे

الْاَصْوَاتُ وَ وَجِلَتْ لَهُ الْقُلُوْبُ مِنْ مَخَافَتِكَ وَ بِقُوَّتِكَ الَّتِیْ

बुज़ुर्ग और आलमे हस्तोबूद में हर एक से अफ़ज़ल है जिसके आस्ताने पर माथा झुका हुआ और सब की गर्दनें

بِهَا تُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِكَ وَ تُمْسِكُ

ख़मीदा नज़र आती हैं नीज़ जिसके हरीमे किब्राई में आवाज़ की मौ॰जें दम साथे हुए और दिल पर ख़ौफ तारी

السَّمٰوَاتِ وَ الْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا وَ بِمَشِیَّتِكَ الَّتِیْ دَانَ لَهَا

रहता है। व माबूद तेरी इस क़ुदरत की सोगंध जो आसमान को ज़मीन पर गिरने से बचाये हुए व वह भी जब तक

الْعَالَمُوْنَ وَ بِكَلِمَتِكَ الَّتِیْ خَلَقْتَ بِهَا السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ

तू चाहता है हां तेरी उसी ॰ताक़त की क़सम जिससे निज़ामे फ़लकी किएम है और तेरी इस मशीअत का वास्ता

بِحِكْمَتِكَ الَّتِیْ صَنَعْتَ بِهَا الْعَجَآئِبَ وَ خَلَقْتَ بِهَا الظُّلْمَةَ وَ

जो तमाम जहांनों को गिरफ़्त में रखती है नीज़ तेरे इस लत्फ के ज़रिये जिससे तूने आलम की तख़लीक़ की

جَعَلْتَهَا لَيْلًا وَّجَعَلْتَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَّ خَلَقْتَ بِهَا النُّوْرَ وَ

मालिक तेरी इस हिकमत पर जिससे तूने दुनिया को वजूद अता किया अंधेरे को नुमूद दी फिर तारीकी को रात में

جَعَلْتَهٗ نَهَارًا وَّ جَعَلْتَ النَّهَارَ نُشُوْرًا مُبْصِرًا وَّ خَلَقْتَ بِهَا

ढ़ाल दिया और रात को लोगों को आराम के लिए बनाया नीज़ अपनी इसी तदबीर से तूने रौशनी पैदा की और

الشَّمْسَ وَ جَعَلْتَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّ خَلَقْتَ بِهَا الْقَمَرَ وَ

रौशनी को दिन बनाया दिन को देख भाल कर ज़रूरयाते ज़िन्दगी फ़राहम करने का वक़्त क़रार दिया और

جَعَلْتَ الْقَمَرَ نُوْرًا وَّ خَلَقْتَ بِهَا الْكَوَاكِبَ وَ جَعَلْتَهَا نُجُوْمًا

अपनी हिकमते कामिला से तूने सूरज को ख़िलअते हस्ती बख़्शा और फिर उसे ज़ियाबार किया चांद की

وَّ بُرُوْجًا وَّ مَصَابِيْحَ وَ زِيْنَةً وَّ رُجُوْمًا وَّ جَعَلْتَ لَهَا مَشَارِقَ وَ

आफ़रीनश भी तेरी ही मंशे से हुई तूही ने उसे ताबानी दी सय्यारे तेरी संनअतगिरी की चमकती हुई निशानियां हैं

مَغَارِبَ وَ جَعَلْتَ لَهَا مَطَالِعَ وَ مَجَارِيَ وَ جَعَلْتَ لَهَا فَلَكًا وَّ

उनही के दामन में सितारे टांके उनको बुर्जों का पेराया दिया। यही तेरे हुकम से चिरागां का काम करते हैं उनहीसे

مَسَابِحَ وَ قَدَّرْتَهَا فِي السَّمَآءِ مَنَازِلَ فَاَحْسَنْتَ تَقْدِيْرَهَا وَ

बज्मे इमकां का सजाया और उनही को शिहाबे साक़ब बनाया, जितने कवाकिब है उन्हें तेरे ही कमाले सन्नाई से

صَوَّرْتَهَا فَاَحْسَنْتَ تَصْوِيْرَهَا وَ اَحْصَيْتَهَا بِاَسْمَآئِكَ اِحْصَآءً

तुलू व ग़ुरूब की जेहत नसीब हुई ज़ुहर व नुमूद के मक़ामात मिले गुजरगाहें मयस्सर आयीं इसके अलावा तूने

وَّ دَبَّرْتَهَا بِحِكْمَتِكَ تَدْبِيْرًا فَاَحْسَنْتَ تَدْبِيْرَهَا وَ سَخَّرْتَهَا

उनकी हरकत के लिए फलक व गर्दिश के वास्ते मदार बनाये; आसमान पर सबकी मंज़लें मुक़र्रर कीं फिर किस

بِسُلْطَانِ اللَّيْلِ وَ سُلْطَانِ النَّهَارِ وَ السَّاعَاتِ وَ عَدَدِ

ख़ूबी व नपे तुले अंदाज़ में यह काम हुआ। तूने ही इन सबकी सूरतगरी की कितने प्यारे नक़्श उभारे इसके

السِّنِيْنَ وَ الْحِسَابِ وَ جَعَلْتَ رُؤْيَتَهَا لِجَمِيْعِ النَّاسِ مَرْئًى

अलावा अपने असमा की बरकत से उन्हें शुमार व क़तार में रखा रात के राज़, दिन की रियासत वक़्त के

وَّاحِدًا وَّ اَسْأَلُكَ اللّٰهُمَّ بِمَجْدِكَ الَّذِىْ كَلَّمْتَ بِهٖ عَبْدَكَ وَ

इंजबात और माह व साल के हिसाब से कारगाहे से पहर को एक बंधा-टिका निज़ाम दिया; तूने अपने इस

رَسُوْلَكَ مُوْسَى ابْنَ عِمْرَانَ عَلَيْهِ السَّلَامُ فِى الْمُقَدَّسِيْنَ

शाहकार की नुमाइश और देखने के मामले में सबके लिए एक जैसा बरताव रखा जो चाहे और जब तक चाहे

فَوْقَ اِحْسَاسِ الْكَرُوْبِيْنَ فَوْقَ غَمَآئِمِ النُّوْرِ فَوْقَ تَابُوْتِ

आंखे सेंकता रहे। परवरदिगार तेरी इस बुज़ुर्गा और बरतरी के सहारे अर्ज़ है जिससे तू सरापा तक़द्दुस फ़रिश्तों के

الشَّهَادَةِ فِىْ عَمُوْدِ النَّارِ وَ فِىْ طُوْرِ سَيْنَآءَ وَ فِىْ جَبَلِ حُوْرِيْثَ

सामने अपने ख़ास बन्दे और नबी मूसा बिन इम्रान (अ) से हमकलाम हुआ तेरी वह बातें मुकर्बे मलाएका की

فِى الْوَادِ الْمُقَدَّسِ فِى الْبُقْعَةِ الْمُبَارَكَةِ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ

समझ से बालातर और नूर के बुक़ओं पर जलवा रेज़ थीं ना॰रज मूसा और आले हारून के इल्म व इरफ़ान से भरे

الْاَيْمَنِ مِنَ الشَّجَرَةِ وَ فِىْ اَرْضِ مِصْرَ بِتِسْعِ اٰيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَ

हुए इस मुतबर्रिक संदूक से भी ऊपर जिसके आगे आगे तूरे सेना, कोहे हवेरिस मुक़द्दस वादी और मुबारक

يَوْمَ فَرَقْتَ لِبَنِيْ اِسْرَآئِيْلَ الْبَحْرَ وَ فِيْ الْمُنْبَجِسَاتِ الَّتِيْ

ं॰खित्ते में फ़रो॰जां मश्आलें, उजाला करती थीं और इस फ़िज़ा में भी जहां तूर की दाहनी जानिब से तूने

صَنَعْتَ بِهَا الْعَجَائِبَ فِيْ بَحْرِ سُوْفٍ وَ عَقَدْتَ مَآءَ الْبَحْرِ فِيْ

दरख़्त के ज़रिये मूसासे ख़िताब फ़रमाया और फिर मिस्र की ज़मीन पर झिलमिलाती हुई नो निशानियों से जलवा

قَلْبِ الْغَمْرِ كَالْحِجَارَةِ وَ جَاوَزْتَ بِبَنِيْ اِسْرَآئِيْلَ الْبَحْرَ وَ

नुमाई की और जिस दिन तूने बनी इस्रईल के लिए चादर आबे रवां को चीर कर रूदे नील में रास्ता बनाया व यह

تَمَّتْ كَلِمَتُكَ الْحُسْنٰى عَلَيْهِمْ بِمَا صَبَرُوْا وَ اَوْرَثْتَهُمْ مَشَارِقَ

तेरा ही करिश्मा था कि पत्थर से 12 चश्में निकले जिनसे तूने दरियाए सूफ़ में हैरत अंगेज़ करिश्मे दिखाये कि

الْاَرْضِ وَ مَغَارِبَهَا الَّتِيْ بَارَكْتَ فِيْهَا لِلْعَالَمِيْنَ وَ اَغْرَقْتَ

बहते पानी को भरपूर नदी के गहराइयों में संग व ख़श्त बनाकर रख दिया नीज़ बनी इस्रईल को दरया पर से

فِرْعَوْنَ وَ جُنُوْدَهٗ وَ مَرَاكِبَهٗ فِي الْيَمِّ وَ بِاسْمِكَ الْعَظِيْمِ

गुज़ार दिया और उनके हक़ में तेरा वादा पूरा हुआ क्योंकि उन्होंने सब्र से काम लिया था फिर उन्हों मशरिक़ व

الْاَعْظَمِ الْاَعَزِّ الْاَجَلِّ الْاَكْرَمِ وَ بِمَجْدِكَ الَّذِيْ تَجَلَّيْتَ بِهٖ

मग़रिब का वारिस बनाया जिन्हें तूने तमाम जहानों की बरकतें दीं व तूने फ़िरौन के लश्कर व सवारियों को

لِمُوْسٰى كَلِيْمِكَ عَلَيْهِ السَّلَامُ فِيْ طُوْرِ سَيْنَآءَ وَ لِاِبْرَاهِيْمَ

॰डुबो दिया, व इस बुज़ुर्ग बहुत अज़ीज़ व पुर जलाल इस्म की क़सम व इस नूरे मज्दो अज़मत का वास्ता

عَلَيْهِ السَّلَامُ خَلِيْلِكَ مِنْ قَبْلُ فِيْ مَسْجِدِ الْخَيْفِ وَ لِاِسْحَاقَ

जिसके पर्दे में तूने अपने कलीम हज़रत मूसा के लिए तूरे सीना पर तजल्ली फ़रमाई व इससे पहले तू अपने दोस्त

صَفِيِّكَ عَلَيْهِ السَّلَامُ فِيْ بِئْرِ شِيَعٍ وَ لِيَعْقُوْبَ نَبِيِّكَ عَلَيْهِ

इब्राहीम को मस्जिदे °खीफ़ में अपना जलवा दिखा चुका था, इसी तरह अपने ख़ास बन्दे इसहाक़ के लिए

السَّلَامُ فِيْ بَيْتِ اِيْلٍ وَ اَوْفَيْتَ لِاِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ

उनकी इबादतगाह चाहे शी पर व अपने नबी याक़ूब के लिए हरमे ईल में ज़ियाबारी की नीज़ तेरी इसी बुज़र्गा व

بِمِيْثَاقِكَ وَ لِاِسْحَاقَ بِحَلَفِكَ وَ لِيَعْقُوْبَ بِشَهَادَتِكَ وَ

बरतरी का वास्ता जिससे तूने इब्राहीम के साथ किये हुए वादे की तकमील फ़रमाई इस्हाक़ के लिए अपनी क़सम

لِلْمُؤْمِنِيْنَ بِوَعْدِكَ وَ لِلدَّاعِيْنَ بِاَسْمَآئِكَ فَاَجَبْتَ وَ بِمَجْدِكَ

पूरी की याक़ूब के हक़ में गवाही दी व तमाम मोमिनीन से ईफ़ाए अहद किया नीज़ जिन लोगों ने भी व जब

الَّذِيْ ظَهَرَ لِمُوْسَى ابْنِ عِمْرَانَ عَلَيْهِ السَّلَامُ عَلٰى قُبَّةِ

कभी तेरे अज़ीम नामों से तुझे पुकारा उनकी दुआओं को तूने क़ुबूल किया मालिक। तेरी इस शानो शौक़त के

الرُّمَّانِ وَ بِاٰيٰتِكَ الَّتِيْ وَقَعَتْ عَلٰى اَرْضِ مِصْرَ بِمَجْدِ الْعِزَّةِ وَ

सद°के जिसकी एक झलक तूने क़ुब्ब-ए-स्म्मान में मूसा को दिखाई नीज़ तेरी इन निशानियों के वसीले से अर्ज़

الْغَلَبَةِ بِاٰيٰتٍ عَزِيْزَةٍ وَّ بِسُلْطَانِ الْقُوَّةِ وَ بِعِزَّةِ الْقُدْرَةِ وَ بِشَاْنِ

है जो मिस्र मे हुईं जिन्हें इज़्ज़तो जलाल की मिसाल व क़ुदरत की दलील कहना चाहिए व इस कामिल लफ़्ज़

الْكَلِمَةِ التَّآمَّةِ وَ بِكَلِمَاتِكَ الَّتِیْ تَفَضَّلْتَ بِهَا عَلٰی اَهْلِ

(कुन) के फ़ैज से नीज उन कलिमात से जिससे तूने आसमान के बासियों ज़मीन के बाशिनदों और दुनिया हो कि

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَ اَهْلِ الدُّنْيَا وَ اَهْلِ الْاٰخِرَةِ وَ بِرَحْمَتِكَ

आख़रत दोनों जहां से तअल्लुक़ रखने वालों को अपने लुत॰फो करम से नवाज़ा व तेरी उस रहमत का सदक़ा

الَّتِیْ مَنَنْتَ بِهَا عَلٰی جَمِيْعِ خَلْقِكَ وَ بِاسْتِطَاعَتِكَ الَّتِیْ اَقَمْتَ

जिसकी वुसअतों से तूने अपनी पूरी मख़लूक़ को नवाज़ा। व तेरी उस रहमत का वास्ता जिससे तूने जग जग की

بِهَا عَلَى الْعَالَمِيْنَ وَ بِنُوْرِكَ الَّذِیْ قَدْ خَرَّ مِنْ فَزَعِهٖ طُوْرُ

रखवाली की और तेरे उस नूर की सौगंध जिसकी तजल्ली से तूरे सीना ज़मीन पर आरहा बारे इलाहा। तूझे

سَيْنَآءَ وَ بِعِلْمِكَ وَ جَلَالِكَ وَ كِبْرِيَآئِكَ وَ عِزَّتِكَ وَ جَبَرُوْتِكَ

अपने उस इल्म व जलाल व इज़्ज़तो जबरूत का वास्ता जिसके आगे अर्साए गीती बेसबात काखे फ़लक ज़मीन

الَّتِیْ لَمْ تَسْتَقِلَّهَا الْاَرْضُ وَ انْخَفَضَتْ لَهَا السَّمٰوٰتُ وَ انْزَجَرَ

गीर व जिसके रूअब से समुन्द्र की अथाह गहराई तलामुत दर किनार। हां डर के मारे नदी सागर बख़ुद ऊँचे

لَهَا الْعُمْقُ الْاَكْبَرُ وَ رَكَدَتْ لَهَا الْبِحَارُ وَ الْاَنْهَارُ وَ خَضَعَتْ

ऊँचे पहाड सरनिगूं ख़ौफ की शिद्दत से धरती चुप साथे हुए हर पस्त व बुलंद पर सन्नाटा छाया हुआ व सारी

لَهَا الْجِبَالُ وَ سَكَنَتْ لَهَا الْاَرْضُ بِمَنَاكِبِهَا وَ اسْتَسْلَمَتْ

ख़िलक़त गर्दनें डाले हुए है, नीज़ जिसके सामने हवा के झोंको में चलने की सकत नहीं रहती व भड़कते हुए

لَهَا الْخَلَآئِقُ كُلُّهَا وَ خَفَقَتْ لَهَا الرِّيَاحُ فِيْ جَرَيَانِهَا وَ خَمَدَتْ

आतिश कदों पर पाला पड़ जाता है मेरे मालिक तेरे इस इक़तिदारे के तुफ़ैल जिसके ग़लबे व गिरफ्त इस ख़ूबी

لَهَا النِّيْرَانُ فِيْ اَوْطَانِهَا وَبِسُلْطَانِكَ الَّذِيْ عُرِفَتْ لَكَ بِهٖ

से आसमानो ज़मीन तेरे सताइश गर व सिपास गुज़ार हैं नीज़ तेरे उस हर्फ़े रहमत के वसीले से जो कमाले

الْغَلَبَةُ دَهْرَ الدُّهُوْرِ وَ حُمِدْتَ بِهٖ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرَضِيْنَ وَ

सदाक़त का मज़हर व जिसकी बरकत से हमारे मूरिसे आला हज़रत आदम अलैहिस्सलाम व उनकी ज़ुर्रियत

بِكَلِمَتِكَ كَلِمَةِ الصِّدْقِ الَّتِيْ سَبَقَتْ لِاَبِيْنَا آدَمَ عَلَيْهِ

मुजिबे लुतफ़ करार पाई फिर तेरे उस कलमें के सहरे सवाली हूँ जो दुनिया की हर चीज़ पर ग़ालिब है नीज़ तेरी

السَّلَامُ وَ ذُرِّيَّتِهٖ بِالرَّحْمَةِ وَ اَسْئَلُكَ بِكَلِمَتِكَ الَّتِيْ غَلَبَتْ

ज़ाते अक़दस के उस नूर का वास्ता जिसकी तजल्ली से तूर चकनाचूर हुआ व मूसा ग़श खाकर ज़मीन पर आ

كُلَّ شَيْءٍ وَّ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الَّذِيْ تَجَلَّيْتَ بِهٖ لِلْجَبَلِ فَجَعَلْتَهٗ دَكًّا

रहे नीज़ तुझे उस बुज़ुर्गा व बतरी की क़सम जिसका ज़ुहूर कोहे सीना पर हुआ व फिर जिसके तवस्सुत से तूने

وَّ خَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا وَ بِمَجْدِكَ الَّذِيْ ظَهَرَ عَلٰى طُوْرِ سَيْنَآءَ

अपने बन्दे मुसा से गुफ़्तगू की नीज़ तेरे इस जलवे का वास्ता जिससे ईसा का इबादत ख़ाना साईर जगमगाने लगा

فَكَلَّمْتَ بِهٖ عَبْدَكَ وَ رَسُوْلَكَ مُوْسَى ابْنَ عِمْرَانَ وَ بِطَلْعَتِكَ

व जिसकी ताबिश से फ़राना दमक उठा तेरे उस जमाल के तुफ़ैल जिसने सरापा तक़द्दुस फ़रिश्तों के परों, क़तार

فِيْ سَاعِيْرَ وَ ظُهُوْرِكَ فِيْ جَبَلِ فَارَانَ بِرَبَوَاتِ الْمُقَدَّسِيْنَ وَ

दर क़तार साफ़ बस्ता तसबीह खां मलाएका के झुरमुट में जोत जगाई नीज़ तेरी उन बरकतों के सद॰के जो तूने

جُنُوْدِ الْمَلَآئِكَةِ الصَّافِّيْنَ وَ خُشُوْعِ الْمَلَآئِكَةِ الْمُسَبِّحِيْنَ

अपने दोस्त इब्राहीम के ज़रिये उम्मते मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम को अर॰जां कीं और

بِبَرَكَاتِكَ الَّتِيْ بَارَكْتَ فِيْهَا عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلِكَ عَلَيْهِ

अपने बरगुज़ीदा बन्दे इसहाक़ के बाइस जनाबे ईसा की ॰कौम को अता फ़रमाई फिर अपने ख़ास बन्दे याक़ूब के

السَّلَامُ فِيْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ بَارَكْتَ لِاِسْحَاقَ

वसीले तेरी क़ुदरत से यह बरकतें हज़रत मूसा की मिल्लत को मरहमत हुई और बिल आख़िर उन तमाम बरकात

صَفِيِّكَ فِيْ اُمَّةِ عِيْسٰى عَلَيْهِمَا السَّلَامُ وَ بَارَكْتَ لِيَعْقُوْبَ

को तूने अपने हबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा (स) के सबब उनकी इतरत ज़ुर्रियत और उम्मत का मक़सूम बना दिया,

اِسْرَئِيْلِكَ فِيْ اُمَّةِ مُوْسٰى عَلَيْهِمَا السَّلَامُ وَ بَارَكْتَ لِحَبِيْبِكَ

बारे इलाहा तेरी उन नवाज़शों व इनायतों के हंगाम हम तो थे नहीं चुनाँचे वह बहार लुत्फ़ व करम हम अपनी

مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ فِيْ عِتْرَتِهٖ وَ ذُرِّيَّتِهٖ وَ اُمَّتِهٖ اَللّٰهُمَّ وَ

आँखों से ने देख सके मगर उन तमाम अनदेखी हक़ीक़तों पर ईमान व दीदार से महरूम रहने के बा वजूद इस

كَمَا غِبْنَا عَنْ ذٰلِكَ وَ لَمْ نَشْهَدْهُ وَ اٰمَنَّا بِهٖ وَ لَمْ نَرَهٗ صِدْقًا وَّ

सच्चाई और इंसाफ के साथ उन पर यक़ीन रखते हैं अब तू अपने वतीरे के मुताबिक़ मुहम्मद व आले मुहम्मद

عَدْلًا اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اَنْ تُبَارِكَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ

पर दरूद भेज उनपर अपनी रहतमें नाज़ल कर व रहमत का साया बर क़ार रख मुहम्मद पर और उनकी औलाद

اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ تَرَحَّمَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ كَاَفْضَلِ مَا صَلَّيْتَ وَ

पर जिस तरह तूने इब्राहीम व आले इब्राहीम को बेहतरीन अंदाज़ में दरूदो बरकतो रहमत से निहाल किया।

بَارَكْتَ وَ تَرَحَّمْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَ اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ

बेशक तू लाय॰के सताइश बड़ी शानो शौकत का मालिक अपने इरादे को पूरा करनेवाला व हर चीज़ पर तुझे

مُّجِيْدٌ فَعَّالٌ لِّمَا تُرِيْدُ وَ اَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

क़ादिर है।

اَللّٰهُمَّ بِحَقِّ هٰذَا الدُّعَآءِ وَ بِحَقِّ هٰذِهِ الْاَسْمَآءِ الَّتِيْ لَا يَعْلَمُ

परवरदिगार उस दुआ और उन असमाए गिरामी का वास्ता जिन की हक़ीक़ी त॰फ्सीर और बाक़ई मफ़हूम को

تَفْسِيْرَهَا وَ لَا يَعْلَمُ بَاطِنَهَا غَيْرُكَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ

तेरे सिवा और कोई नहीं जानता मुहम्मद व आले मुहम्मद पर तेरा दुरूद और माबूद मुझ से वह सलूक फ़रमा जो

افْعَلْ بِيْ مَا اَنْتَ اَهْلُهٗ وَ لَا تَفْعَلْ بِيْ مَا اَنَا اَهْلُهٗ وَ اغْفِرْ لِيْ مِنْ

तेरे शायाने शान है, वह तरी॰के कार रवा न रखता जिसका मैं सज़ावार हूँ या अल्लाह मेरे पिछले गुनाहों को

ذُنُوْبِيْ مَا تَقَدَّمَ مِنْهَا وَ مَا تَاَخَّرَ وَ وَسِّعْ عَلَيَّ مِنْ حَلَالِ رِزْقِكَ وَ

माफ़ कर दे और आइंदा की ल॰गिज़शों से भी दर गुज़र फ़रमाना, नीज़ मेरे दामन को रिज़॰के हलाल से भर दे,

اَكْفِنِیْ مَؤُنَةَ اِنْسَانِ سَوْءٍ وَّ جَارِ سَوْءٍ وَّ قَرِیْنِ سَوْءٍ وَّ سُلْطَانِ

इसके अलावा तू मुझे बुरे आदमियों ना हंजार पड़ोसियों बद रफ्तार हम नीशनों व ग़लतकार हाकिमों का

سَوْءٍ اِنَّكَ عَلٰی مَا تَشَآءُ قَدِیْرٌ وَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ اٰمِیْنَ رَبَّ

नियाज़मन्द होने से महफूज़ रख बेशक तू सब कुछ कर सकता है व हर बात से आगाह है ऐ रब्बुल आलमीन

الْعَالَمِیْنَ.

मेरी दुआ को क़ुबूल कर और हर चीज़ पर तुझे क़ुदरत हासिल है।

लेखक: बाज़ नुस्खों में आखरी वाक्यों के बाद है के अपनी हाजतें िजक्र करे और फिर कहे:

یَا اَللّٰهُ یَا حَنَّانُ یَا مَنَّانُ یَا بَدِیْعَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ یَا ذَا الْجَلَالِ وَ

ऐ अल्लाह ऐ चाहने वाले ऐ करम गुस्तर ऐ आसमान और ज़मीन के खालिक ऐ जलाल व अज़मत के

الْاِكْرَامِ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ

मालिक ऐ सबसे बड़े मेहरबान। ऐ अल्लाह इस दुआ की हुरमत का वास्ता।

उसके बाद फिर आखिर तक पढ़े "अल्लाहुम्म बेहक्के हाज़द दोआ"।
अल्लामा मजलिसी ने मिस्बाह सय्यद इब्ने बाकी से नक़्ल किया है के दुआ सेमात के बाद पढ़े:

اَللّٰهُمَّ بِحَقِّ هٰذَا الدُّعَآءِ وَ بِحَقِّ هٰذِهِ الْاَسْمَآءِ الَّتِیْ لَا یَعْلَمُ

ऐ अल्लाह! इस दुआ की हुरमत का वास्ता और उन नामों की करामत का सदक़ा जिनके मतलबो मक़सद

تَفْسِیْرَهَا وَ لَا تَاْوِیْلَهَا وَلَا بَاطِنَهَا وَ لَا ظَاهِرَهَا غَیْرُكَ اَنْ تُصَلِّیَ

और जिन के ज़ाहिरो बातिन के बारे में जुज़ तेरे और किसीको मालूम नाही ख़ुन्दवन्दा! मुहम्मद व आले

عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَنْ تَرْزُقَنِیْ خَیْرَ الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ.

मुहम्मद (अ) पर दरूद भेज, नीज़ ख़ैरे दुनिया व ख़ैरे आख़रत दे।

उसके बाद हाजतें तलब करे और फिर यह कहे:

وَ افْعَلْ بِیْ مَا اَنْتَ اَهْلُهٗ وَ لَا تَفْعَلْ بِیْ مَا اَنَا اَهْلُهٗ وَ انْتَقِمْ لِیْ مِنْ

ऐसे पेश आ जो तेरी शाने करम न के जिसका ये बंदा मुस्तहक़ है और °फुलां बिन °फुलां से मेरा बदला

فُلَانِ بْنِ فُلَانٍ

चुका दे...

इस जगह पर अपने दुश्मन का नाम ले और फिर कहे:

وَ اغْفِرْ لِیْ مِنْ ذُنُوْبِیْ مَا تَقَدَّمَ مِنْهَا وَ مَا تَاَخَّرَ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِجَمِیْعِ

मेरे गुज़श्ता ज़माने के गुनाहों को माफ़ कर दे और मुस्तक़-बिल की लज़िज़शों से भी दर गुज़र फ़रमा

الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ وَ وَسِّعْ عَلَيَّ مِنْ حَلَالِ رِزْقِكَ وَ اكْفِنِيْ

नीज़ मेरे वालेदैन और तमाम मोमिनीनो मोमिनात को भी बख़्श दे और मेरे दामने तलब को अपने

مَؤُنَةَ اِنْسَانِ سَوْءٍ وَّ جَارِ سَوْءٍ وَّ سُلْطَانِ سَوْءٍ وَّ قَرِيْنِ سَوْءٍ وَّ يَوْمِ

हलाल रिज़्क़ से भर दे और ख़ुदाया तू मुझे बिगड़े हुए इंसान शरीर पड़ोसी शरीर हुकमरान बुरे साथी

سَوْءٍ وَّ سَاعَةِ سَوْءٍ وَ انْتَقِمْ لِيْ مِمَّنْ يَكِيْدُنِيْ وَ مِمَّنْ يَبْغِيْ عَلَيَّ وَ يُرِيْدُ

ख़राब दिन व कठिन घड़ी से बचाये रखना और जो मुझ से मक्कारी करे मेरे साथ ज़्यादती करे नीज़

بِيْ وَ بِاَهْلِيْ وَ اَوْلَادِيْ وَ اِخْوَانِيْ وَ جِيْرَانِيْ وَ قَرَابَاتِيْ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ

मेरे घरवालों मेरी औलाद मेरे भाइयों मेरे हमसायों और मोमिनीन व मोमिनात में मेरे क़राबत दारों को

الْمُؤْمِنَاتِ ظُلْمًا اِنَّكَ عَلٰى مَا تَشَآءُ قَدِيْرٌ وَّ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ اٰمِيْنَ

जो सितम करना चाहे तू उससे इंतेकाम ले मालिक तू हर शैय पर क़ादिर है व हर बातसे वाक़फ़ है।

फिर यह कहे: رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ.

आमीन रब्बुल आलमीन।

اَللّٰهُمَّ بِحَقِّ هٰذَا الدُّعَآءِ تَفَضَّلْ عَلٰى فُقَرَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ

बारे इलाहा। इस दुआ का वास्ता तू सारे ईमान वालों को, जो मोहताज हों उन्हें तवंगरी अता कर

الْمُؤْمِنَاتِ بِالْغِنٰى وَ الثَّرْوَةِ وَ عَلٰى مَرْضَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ

सरवतमन्द बना दे वह मोमिनीन व मोमिनात जो बीमार हों उन्हें शिफ़ा दे सेहत दे नीज़ वह ईमानदार

بِالشِّفَآءِ وَ الصِّحَّةِ وَ عَلٰى اَحْيَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ بِاللُّطْفِ وَ

मर्द और औरतें जो ज़िन्दा सलामत हैं उनको अपनी निगाहे लुतफ़ व करम से सरफ़राज़ कर जो

الْكَرَامَةِ وَ عَلٰى اَمْوَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ بِالْمَغْفِرَةِ وَ

अरबाबे ईमान इस दुनिया से जा चुके, ख़ुदा तू उन सबको अपने साया अ॰फ्वो रहमत में जगह दे व

الرَّحْمَةِ وَ عَلٰى مُسَافِرِى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ بِالرَّدِّ اِلٰى

उन तमाम मोमिनों को जो सफ़र में हों कमाले आिफ़यत और मुंतहाये सूद व बहबूद के साथ अपने

اَوْطَانِهِمْ سَالِمِيْنَ غَانِمِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَ صَلَّى اللّٰهُ

घरों को पहुंचा दे, तुझे अपनी रहमत का वास्ता ऐ सबसे बड़े महरबान और ख़ुदावन्दा हमारे आक़ा

عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ وَ عِتْرَتِهِ الطَّاهِرِيْنَ وَ سَلَّمَ

ख़ातिमुल अंबिया मुहम्मदे मुस्तफ़ा (स) व उनके पाकीज़ा इतरत पर तेरा दरूद और बहतु बहुत

تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا.

सलाम।

शेख बिन फहद: दुआ के बाद यह दुआ भी पढ़े व कज़ा के बजाए अपनी हाजतें बयान करे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ بِحُرْمَةِ هٰذَا الدُّعَآءِ وَ بِمَا فَاتَ مِنْهُ مِنَ الْاَسْمَآءِ

या ख़ुदा इस दुआ की हुरमत के वसीले व तेरे जो नाम इसमें ज़िक्र हैं उनके तुफ़ैल व तफ़सीर व तदबीर

وَ بِمَا يَشْتَمِلُ عَلَيْهِ مِنَ التَّفْسِيْرِ وَ التَّدْبِيْرِ الَّذِیْ لَا يُحِيْطُ بِهٖ اِلَّا

के जो हक़ाएक़ इसमें शामिल हैं और तेरे सिवा जिनपर कोई दस्तरस नहीं रखता उन सबके तसद्दुक़ में

फिर अपनी निजी दुआ मंगे

اَنْتَ اَنْ تَفْعَلَ بِیْ...

मेरी यह मुरादें पूरी कर।

दुआए मशलूल

यानी अपाहिज आदमी की दुआ। इस दुआ को उस जवान की दुआ जो अपने गुनाहों में गिरफ्तार हो गया था। यह दुआ कुतबे कफमी और मोहिज्जुद दावात से नक़्ल की गई है जिसको अमीरूल मोमिनीन (अ) ने उस जवान को सिखाई थी जो अपने गुनाह और पिता के हक़ में ज़ुल्म करने की बिना पर फ़ालिज का शिकार हो गया था। जब उसने इस दुआ को पढ़ा तो ख़्वाब में रसूले अकरम (स) को देखा के आपने इसके शरीर पर हाथ फेर दिया और फ़रमाया के इस दुआ को याद रखना के इसमे इस्मे आज़म है। तेरा अंजाम बख़ैर होगा। जब वह बेदार हुआ तो अपने को सही और तंदुरस्त पाया। दुआ यह है:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ

ख़ुदा नाम से जो बहुत मेहेरबान और निहायत रहेमवाला है। ऐ ख़ुदा मै तेरे नाम से मांगता हूँ। अल्लाह के नाम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَ الْاِكْرَامِ يَا حَیُّ يَا

से जो बहुत मेहेरबान व निहायत रहेमवाला है। ऐ जलाल व बुज़ूर्गा वाले ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले ऐ क़ायम

قَيُّوْمُ يَا حَيُّ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ يَا هُوَ يَا مَنْ لَّا يَعْلَمُ مَا هُوَ وَ لَا

और निज़ामे काइनात को क़ायम रखने वाले, तेरे सिवा कोई दूसरा ख़ुदा नहीं ऐ वह अल्लाह ऐ वह ख़ुदा ऐ वह

كَيْفَ هُوَ وَ لَا اَيْنَ هُوَ وَ لَا حَيْثُ هُوَ اِلَّا هُوَ يَا ذَا الْمُلْكِ وَ

ज़ात कि कोई और नहीं जानता कि वह क्या है, और क्योंकर है, और कहां है, और किस तरह है, बस वह

الْمَلَكُوْتِ يَا ذَا الْعِزَّةِ وَ الْجَبَرُوْتِ يَا مَلِكُ يَا قُدُّوْسُ يَا

ख़ुद ही आलिम है, ऐ मुल्क व सलतनत वाले ऐ हाकिम ऐ इज़्ज़त वाले और इक़तेदार वाले, ऐ मालिक, ऐ

سَلَامُ يَا مُؤْمِنُ يَا مُهَيْمِنُ يَا عَزِيْزُ يَا جَبَّارُ يَا مُتَكَبِّرُ يَا

पाकीज़ा, ऐ (हमा) सलामती, ऐ अम्न देनेवाले, ऐ पासबान, ऐ इज़्ज़त व मर्तबा वाले, ऐ ज़बरदस्त ऐ बुज़ूर्गा

خَالِقُ يَا بَارِءُ يَا مُصَوِّرُ يَا مُفِيْدُ يَا مُدَبِّرُ يَا شَدِيْدُ يَا مُبْدِءُ يَا

वाले ऐ पैदा करने वाले ऐ मौजूद करने वाले, ऐ सूरतगरी करनेवाले ऐ फ़ायदा पहुंचाने वाले ऐ तदबीर करने

مُعِيْدُ يَا مُبِيْدُ يَا وَدُوْدُ يَا مَحْمُوْدُ يَا مَعْبُوْدُ يَا بَعِيْدُ يَا قَرِيْبُ

वाले, ऐ सख़्तगीर इब्तेदा करनेवाले, ऐ पलटाने वाले ऐ हलाक करने वाले, ऐ मोहब्बत करने वाले ऐ हम्द के

يَا مُجِيْبُ يَا رَقِيْبُ يَا حَسِيْبُ يَا بَدِيْعُ يَا رَفِيْعُ يَا مَنِيْعُ يَا

मरकज़, ऐ माबूद ऐ ज़ाहिरन दूर करने वाले (बन्दा से) ऐ क़रीब रहने वाले, ऐ दुआओं के क़ुबूल करने वाले ऐ

سَمِيْعُ يَا عَلِيْمُ يَا حَلِيْمُ يَا كَرِيْمُ يَا حَكِيْمُ يَا قَدِيْمُ يَا عَلِيُّ

निगहबानी करने वाले ऐ हिसाब रखने वाले ऐ ईजाद करने वाले ऐ बुलन्द व बरतर, ऐ हमलों से महफ़ूज़ रखने

يَا عَظِيْمُ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ يَا دَيَّانُ يَا مُسْتَعَانُ يَا جَلِيْلُ يَا

वाले ऐ सुन्नेवाले ऐ जानने वाले ऐ हिल्मवाले, ऐ करम करने वाले ऐ हिकमत वाले, ऐ हमेशा रहने वाले, ऐ

جَمِيْلُ يَا وَكِيْلُ يَا كَبِيْلُ يا مُقِيْلُ يَا مُنِيْلُ يَا نَبِيْلُ يَا

बरतर व बाले, ऐ अज़मत वाले, ऐ एहसान करनेवाले, ऐ तरस खाने वाले, ऐ जज़ा देने वाले ऐ मदद के लिए

دَلِيْلُ يَا هَادِيُ يَا بَادِيُ يَا اَوَّلُ يَا آخِرُ يَا ظَاهِرُ يَا بَاطِنُ يَا

पुकारे जाने वाले, ऐ संभालने वाले ऐ अता करने वाले, ऐ फ़ज़ल करने वाले, ऐ राहनुमा ऐ राहबर, ऐ ख़ालिख़,

قَآئِمُ يَادَآئِمُ يَاعَالِمُ يَاحَاكِمُ يَاقَاضِيُ يَاعَادِلُ يَافَاصِلُ

ऐ सबसे पहले ऐ सब के बाद रहनेवाले ऐ ज़ाहिर ऐ मख़फी ऐ क़ायम, ऐ हमेशा रहने वाले ऐ जानने वाले ऐ

يَا وَاصِلُ يَا ظَاهِرُ يَا مُطَهِّرُ يَا قَادِرُ يَا مُقْتَدِرُ يَا كَبِيْرُ يَا

हुक्म करने वाले ऐ फ़ैसला करने वाले, ऐ इंसाफ करने वाले, ऐ जुदा करने वाले, ऐ साहिबे क़ुदरत, ऐ साहिबे

مُتَكَبِّرُ يَا وَاحِدُ يَا اَحَدُ يَا صَمَدُ يَا مَنْ لَّمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَ

इख़तेयार ऐ बुज़ूर्ग, ऐ बुज़ूर्गा वाले, ऐ तंहा ऐ यकता ऐ सरदार नाफ़ज़ुल इरादा, ऐ वह जो किसी का बाप नहीं व

لَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ وَلَا كَانَ مَعَهٗ

न वो किसी से पैदा हुआ, और न कोई उसका हमसर है और न कोई उसकी °जौजा है न कोई उसका वज़ीर है

وَزِيْرٌ وَلَا اتَّخَذَ مَعَهٗ مُشِيْرًا وَلَا احْتَاجَ اِلٰى ظَهِيْرٍ وَّلَا كَانَ

और न उसने अपना किसी को मुशीर बनाया व न वह किसीकी पुश्त पनाही का मोहताज है व न उसके सिवा

مَعَهٗ مِنۡ اِلٰهٍ غَيۡرُهٗ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنۡتَ فَتَعَالَيۡتَ عَمَّا يَقُوۡلُ

कोई दूसरा ख़ुदा है, बस तेरे सिवा कोई दूसरा ख़ुदा नही है, बस तेरे सिवा कोई दुसरा ख़ुदा नहीं, तेरी ज़ात (उन

الظَّالِمُوۡنَ عُلُوًّا كَبِيۡرًا يَا عَلِيُّ يَا شَامِخُ يَا بَاذِخُ يَا فَتَّاحُ يَا

अक़वाल से) बुलन्दो बाला है जो तेरे बारे में ज़ालिमीन कह रहे हैं, ऐ बुलन्द ऐ बरतर ऐ बहुत देने वाले, ऐ

نَفَّاحُ يَا مُرۡتَاحُ يَا مُفَرِّجُ يَا نَاصِرُ يَا مُنۡتَصِرُ يَا مُدۡرِكُ يَا

खोलने वाले, ऐ हवाओं के चलाने वाले, ऐ राहतों के देने वाले, ऐ गमों के दूर करने वाले, ऐ मदद करने वाले,

مُهۡلِكُ يَا مُنۡتَقِمُ يَا بَاعِثُ يَا وَارِثُ يَا طَالِبُ يَا غَالِبُ يَا مَنۡ

ऐ मदद देने वाले ऐ पाने वाले ऐ हलाक करने वाले, ऐ इंतेकाम लेने वाले, ऐ मुर्दो को उठाने वाले, ऐ वारिस, ऐ

لَّا يَفُوۡتُهٗ هَارِبٌ يَا تَوَّابُ يَا اَوَّابُ يَا وَهَّابُ يَا مُسَبِّبَ

तलब करने वाले, ऐ सब पर ग़ालिब, ऐ वह ज़ात जिसकी गिरफ़्त से भागने वाले भाग नही सकता, ऐ बार बार

الۡاَسۡبَابِ يَا مُفَتِّحَ الۡاَبۡوَابِ يَا مَنۡ حَيۡثُ مَا دُعِيَ اَجَابَ يَا

पलटने वाले, ऐ तौबा क़ुबूल करनेवाले ऐ बहुत अता करने वाले, ऐ ज़रियों के मुहय्या करने वाले, ऐ बन्द

طَهُوۡرُ يَا شَكُوۡرُ يَا عَفُوُّ يَا غَفُوۡرُ يَا نُوۡرَ النُّوۡرِ يَا مُدَبِّرَ الۡاَمُوۡرِ

दरवा॰जों के खोलने वाले, ऐ वह कि जिस तरह भी पुकारा जाऐ दुआ क़ुबूल करता है, ऐ पाकों के पाक ऐ

يَا لَطِيۡفُ يَا خَبِيۡرُ يَا مُجِيۡرُ يَا مُنِيۡرُ يَا بَصِيۡرُ يَا ظَهِيۡرُ يَا كَبِيۡرُ يَا

शुक्रगुज़ारों के बदला देने वाले, ऐ माफ़ करने वाले, ऐ बख़्शने वाले, ऐ नूरों के नूर, ऐ कामों के दुरूस्त करने

وِتْرُ يَا فَرْدُ يَا اَبَدُ يَا سَنَدُ يَا صَمَدُ يَا كَافِيُ يَا شَافِيُ يَا وَافِيُ يَا

वाले, ऐ लुत्फ़ो करम वाले, ऐ ख़बर रखने वाले, ऐ पनाह देने वाले, ऐ रौशनी देने वाले, ऐ बीना, ऐ मुईन व

مُعَافِيُ يَا مُحْسِنُ يَا مُجْمِلُ يَا مُنْعِمُ يَا مُفْضِلُ يَا مُتَكَرِّمُ يَا

मुहाफ़ज़, ऐ बुज़ुर्ग ऐ यगाना ऐ बेमिस्ल, ऐ हमेशा रहने वाले, ऐ जाऐ पनाह, ऐ बे नियाज़, ऐ किफ़ायत करने

مُتَفَرِّدُ يَا مَنْ عَلَا فَقَهَرَ يَا مَنْ مَلَكَ فَقَدَرَ يَا مَنْ بَطَنَ فَخَبَرَ

वाले, ऐ शिफ़ा देने वाले, ऐ वफ़ा करने वाले, ऐ दर गुज़र करने वाले, ऐ अच्छाई करने वाले, ऐ नेकी करने

يَا مَنْ عُبِدَ فَشَكَرَ يَا مَنْ عُصِيَ فَغَفَرَ يَا مَنْ لَّا تَحْوِيْهِ الْفِكَرُ

वाले, ऐ नेमत देनेवाले, ऐ फ़ज़ीलत देने वाले, ऐ साहिबे बुज़ुर्गा व करामत ऐ यगाना ऐ वह किजो बुलन्द हो कर

وَلَا يُدْرِكُهٗ بَصَرٌ وَلَا يَخْفٰى عَلَيْهِ اَثَرٌ يَا رَازِقَ الْبَشَرِ يَا مُقَدِّرَ

ग़ालिब रहा ऐ वह जो मालिक हो कि साहिबे क़ुदरत रहा, ऐ वह जो पोशीदा होकर भी बा ख़बर रहा ऐ वह

كُلِّ قَدَرٍ يَا عَالِيَ الْمَكَانِ يَا شَدِيْدَ الْاَرْكَانِ يَا مُبَدِّلَ

जिसकी परसतिश की गई और उसने जज़ा दी ऐ वह कि जिसने अपनी नाफ़रमानी पर भी ब॰ख्शा, ऐ वह कि

الزَّمَانِ يَا قَابِلَ الْقُرْبَانِ يَا ذَا الْمَنِّ وَالْاِحْسَانِ يَا ذَا الْعِزَّةِ

जिसको इंसानी फिक्रें घेर नहीं सकतीं और आँख देख नहीं सकती और न कोई चीज़ उससे पोशीदा है, ऐ

وَالسُّلْطَانِ يَا رَحِيْمُ يَا رَحْمٰنُ يَا مَنْ هُوَ كُلَّ يَوْمٍ فِيْ شَاْنٍ يَا

इंसानों को रि॰ज्क देने वाले, ऐ क़िस्मतों का तअय्युन करने वाले ऐ बुलन्द जगह वाले, ऐ मज़बूत स्कनों

مَنْ لَّا يَشْغَلُهٗ شَاْنٌ عَنْ شَاْنٍ يَا عَظِيْمَ الشَّاْنِ يَا مَنْ هُوَ

वाले, ऐ ज़माने के बदलने वाले, ऐ क़ुरबानियों के क़ुबूल करने वाले, ऐ नेकी और एहसान करने वाले, ऐ

بِكُلِّ مَكَانٍ يَا سَامِعَ الْاَصْوَاتِ يَا مُجِيْبَ الدَّعْوَاتِ يَا

इज़्ज़त व ग़लबा और हुकूमत वाले, ऐ रहम करने वाले, ऐ सबसे ज़्यादा तरस खाने वाले, ऐ वह कि हर रोज़

مُنْجِحَ الطَّلِبَاتِ يَا قَاضِيَ الْحَاجَاتِ يَا مُنْزِلَ الْبَرَكَاتِ يَا

जिसकी नई शान है, ऐ वह कि जिसे एक अम्र और दुसरे अम्र से नहीं रोकता ऐ बुज़र्ग मर्तबा वाले, ऐ वह कि

رَاحِمَ الْعَبَرَاتِ يَا مُقِيْلَ الْعَثَرَاتِ يَا كَاشِفَ الْكُرُبَاتِ يَا

जो हर जगह है, ऐ आवा॰जों के सुनने वाले ऐ दुआओं के क़ुबूल करने वाले, ऐ मुरादों के पूरा करने वाले, ऐ

وَلِيَّ الْحَسَنَاتِ يَا رَافِعَ الدَّرَجَاتِ يَا مُؤْتِيَ السُّؤْلَاتِ يَا مُحْيِيَ

हाजतों के बर लाने वाले, ऐ बरकतों के नाज़ल करने वाले, ऐ आंसुओं पर रहम करने वाले, ऐ लगिज़शों में

الْاَمْوَاتِ يَا جَامِعَ الشَّتَاتِ يَا مُطَّلِعًا عَلَى النِّيَّاتِ يَا رَآدَّ

दस्तगीरी करने वाले, ऐ गमों के दूर करने वाले, ऐ नेकियों के वाली, ऐ स्तबों के बढाने वाले, ऐ सवालों के

مَا قَدْ فَاتَ يَا مَنْ لَّا تَشْتَبِهُ عَلَيْهِ الْاَصْوَاتُ يَا مَنْ لَّا

अता करने वाले, ऐ मुर्दों के ज़िन्दा करने वाले, ऐ पिछड़े हुओं के मिलाने वाले, ऐ नियतों से वाक़फ़ ऐ खोई

تُضْجِرُهُ الْمَسْئَلَاتُ وَلَا تَغْشَاهُ الظُّلُمَاتُ يَا نُوْرَ الْاَرْضِ

हुई चीं॰जों के पलटाने वाले ऐ वह कि जिस पर आवाज़े (मिली हुई फ़रयादें) मुश्तबा नहीं होतीं ऐ वह कि जो

وَ السَّمٰوٰتِ یَا سَابِغَ النِّعَمِ یَا دَافِعَ النِّقَمِ یَا بَارِءَ النَّسَمِ یَا

सवालों की कसरत से दिल तंग नहीं होता, और जिसे तारीकियां नहीं छुपातीं ऐ रौशनी ज़मीन और आसमानें

جَامِعَ الْاُمَمِ یَا شَافِیَ السَّقَمِ یَا خَالِقَ النُّوْرِ وَ الظُّلَمِ یَا ذَا

की ऐ नेमतों के कामिल करनेवाले ऐ बलाओं के टालने वाले ऐ जानदारों के पैदा करने वाले, ऐ उम्मतों के

الْجُوْدِ وَالْکَرَمِ یَا مَنْ لَا یَطَاُ عَرْشَهٗ قَدَمٌ یَا اَجْوَدَ

इकट्ठा करने वाले, ऐ बीमारों को शिफ़ा देने वाले, ऐ उजाले और अंधेरे के पैदा करने वाले, ऐ जूद व करम

الْاَجْوَدِیْنَ یَا اَکْرَمَ الْاَکْرَمِیْنَ یَا اَسْمَعَ السَّامِعِیْنَ یَا اَبْصَرَ

वाले, ऐ वह जिसके अर्श को किसी के पाओं ने नहीं कुचला, ऐ जवादों मे सबसें ज़्यादा जवाद, ऐ करम करने

النَّاظِرِیْنَ یَا جَارَ الْمُسْتَجِیْرِیْنَ یَا اَمَانَ الْخَآئِفِیْنَ یَا ظَهْرَ

वालों में सबसे ज़्यादा करम करने वाले, ऐ सुनने वाले ऐ देखने वालों ऐं सबसे ज़्यादा देखने वाले ऐ पनाह ढुंढने

اللَّاجِیْنَ یَا وَلِیَّ الْمُؤْمِنِیْنَ یَا غِیَاثَ الْمُسْتَغِیْثِیْنَ یَا غَایَةَ

वालों की जाऐ पनाह ऐ डरने वालों के लिए अमान, ऐ पनाह चाहने वालों की पुश्त पनाह, ऐ ईमान वालों के

الطَّالِبِیْنَ یَا صَاحِبَ کُلِّ غَرِیْبٍ یَا مُؤْنِسَ کُلِّ وَحِیْدٍ یَا

दोस्त और मददगार, ऐ फ़रयाद करने वालों के फ़रयाद रस, ऐ हाजतमंदों की इंतेहा मुराद, ऐ हर मुसाफ़र के

مَلْجَاءَ کُلِّ طَرِیْدٍ یَا مَاْوٰی کُلِّ شَرِیْدٍ یَا حَافِظَ کُلِّ ضَآلَّةٍ یَا

साथी, तन्हा के हमदम और मोनिस ऐ हर दर बदर फिरने वाले के जाऐ पनाह, ऐ हर खदेरे हुऐ शख़्स के

رَاحِمَ الشَّيْخِ الْكَبِيْرِ يَا رَازِقَ الطِّفْلِ الصَّغِيْرِ يَا جَابِرَ

मुहाफ़ज़ ऐ खोई हुई चीज़ के हिफ़ाज़त करने वाले ऐ बूढ़ों पर तरस खाने वाले, ऐ छोटे बच्चों को रि॰ज्क देने

الْعَظْمِ الْكَسِيْرِ يَا فَاكَّ كُلِّ اَسِيْرٍ يَا مُغْنِيَ الْبَآئِسِ الْفَقِيْرِ

वाले, ऐ टूटी हुई हड्डी को जोड़ने वाले, ऐ हर क़ैदी को रिहाई दिलाने वाले, ऐ परेशान हाल मोहताज को

يَا عِصْمَةَ الْخَآئِفِ الْمُسْتَجِيْرِ يَا مَنْ لَهُ التَّدْبِيْرُ وَ التَّقْدِيْرُ

मालदार बनाने वाले, ऐ पनाह चाहने वाले, ख़ौफ़ज़दा का बचाव करने वाले, ऐ वह ज़ात कि उसके लिए

يَا مَنِ الْعَسِيْرُ عَلَيْهِ سَهْلٌ يَسِيْرٌ يَا مَنْ لَا يَحْتَاجُ اِلٰى

तदबीर और तक़दीर है, ऐ वह कि जिस पर दुशवारियों सहल और आसान हैं, ऐ वह कि जिसे अपने लिए

تَفْسِيْرٍ يَا مَنْ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ يَا مَنْ هُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ

तौज़ीह और त॰फ्सीर की ज़रूरत नहीं ऐ वह कि जो हर चीज़ की ख़बर रखता है, ऐ वह कि जो हर चीज़ को

خَبِيْرٌ يَا مَنْ هُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيْرٌ يَا مُرْسِلَ الرِّيَاحِ يَا فَالِقَ

जानता है और देखता है, ऐ हवाओं के चलाने वाले, ऐ सुबह की पौ फाड़ने वाले, ऐ रूहों के भेजने वाले ऐ जूद

الْاَصْبَاحِ يَا بَاعِثَ الْاَرْوَاحِ يَا ذَا الْجُوْدِ وَ السَّمَاحِ يَا مَنْ

व सख़ावत वाले, ऐ वह कि जिसके हाथ में हर चीज़ की कुँजी है ऐ हर सदा के सुनने वाले ऐ हर गुज़रे हुऐ से

بِيَدِهٖ كُلُّ مِفْتَاحٍ يَا سَامِعَ كُلِّ صَوْتٍ يَا سَابِقَ كُلِّ فَوْتٍ يَا

पहले ऐ मौत के बाद हर जानदार को ज़िन्दा करने वाले, ऐ मेरी सख़्तियों में मेरी पनाह, ऐ आलमे मुसाफ़रत में

مُحْيِيَ كُلِّ نَفْسٍ بَعْدَ الْمَوْتِ يَا عُدَّتِيْ فِيْ شِدَّتِيْ يَا حَافِظِيْ فِيْ

मेरी हिफ़ाज़त करने वाले, ऐ मेरे रफ़ीक़ हालते तंहाई में ऐ मेरे वलीए नेमत, ऐ मेरे मलजा (उस व॰क्त) जब मेरी

غُرْبَتِيْ يَا مُوْنِسِيْ فِيْ وَحْدَتِيْ يَا وَلِيَّ فِيْ نِعْمَتِيْ يَا كَهْفِيْ حِيْنَ

सब राहें बन्द हो जाऐं और रास्ते मुझे थका डालें, ऐ मेरे मावा जब कि रिशतेदार मेरा साथ छोड़ दें और मेरे

تُعْيِيْنِيْ الْمَذَاهِبُ وَ تُسَلِّمُنِي الْاَقَارِبُ وَ يَخْذُلُنِيْ كُلُّ

साथी मुझे बे मदद छोड दें उसकी तकिया गाह जिसकी कोई तकियागाह न हो, ऐ उसके भरोसे जिसका कोई

صَاحِبٍ يَا عِمَادَ مَنْ لَا عِمَادَ لَهٗ يَا سَنَدَ مَنْ لَا سَنَدَ لَهٗ يَا

भरोसा न रहे। ऐ उसके सरमाऐ जिसका कोई सरमाया नहीं, ऐ उसकी अमान जिसकी कोई अमान नहीं, ऐ

ذُخْرَ مَنْ لَا ذُخْرَ لَهٗ يَا حِرْزَ مَنْ لَا حِرْزَ لَهٗ يَا كَهْفَ مَنْ لَا

उसकी जाऐ पनाह जिसकी कोई जाऐ पनाहग नहीं ऐ उस शख़्स के ख़ज़ाने जिसका कोई ख़ज़ाना नहीं, ऐ

كَهْفَ لَهٗ يَا كَنْزَ مَنْ لَا كَنْزَ لَهٗ يَا رُكْنَ مَنْ لَا رُكْنَ لَهٗ يَا

उसकी पुश्तपनाह जिसकी कोई पुश्तपनाह नहीं ऐ उस शख़्स के फ़रयाद रस जिसका कोई फ़रयाद रस नहीं, ऐ

غِيَاثَا مَنْ لَاغِيَاثَ لَهٗ يَا جَارَ مَنْ لَا جَارَ لَهٗ يَا جَارِيَ

उसके हमसाया जिसका कोई हमसाया नहीं जो हर व॰क्त मुझसे मुत्तसिल है, ऐ मेरे मज़बूत रुक्न ऐ मेरे ख़ुदाऐ

اللَّصِيْقَ يَا رُكْنِيَ الْوَثِيْقَ يَا اِلٰهِيْ بِالتَّحْقِيْقِ يَا رَبَّ الْبَيْتِ

हक़ा॰rकी व तहक़ा॰rकी ऐ काबा के मालिक ऐ मेहरबानी करने वाले ऐ साथ रहनेवाले मुझे ज़माने के फनदों

الْعَتِيْقِ يَا شَفِيْقُ يَا رَفِيْقُ فُكَّنِىْ مِنْ حَلَقِى الْمَضِيْقِ وَ

से रिहा फ़रमा व मुझसे रंजो ग़मो तंगी व परेशानी को फैर दे ऐ अल्लाह जिन बलाओं का मैं मुतहम्मिल नहीं हो

اصْرِفْ عَنِّىْ كُلَّ هَمٍّ وَّ غَمٍّ وَّ ضِيْقٍ وَّ اكْفِنِىْ شَرَّ مَا لَا

सकता उनके शरसे मुझको महफ़ूज़ रख व जिनके बरदाश्त करनेकी ताक़त रखता हूँ उसमें मेरी मदद कर, ऐ

اُطِيْقُ وَ اَعِنِّىْ عَلٰى مَا اُطِيْقُ يَا رَآدَّ يُوْسُفَ عَلٰى يَعْقُوْبَ يَا

युसुफ़ को याकूब की तरफ पलटानेवाले अय्यूब की बीमारियों और सख़्तियों को दूर करनेवाले, ऐ दाऊद की

كَاشِفَ ضُرِّ اَيُّوْبَ يَا غَافِرَ ذَنْبِ دَاوٗدَ يَا رَافِعَ عِيْسَى بْنِ

लगिज़शों को बख़शने वाले, ऐ ईसा बिन मरयम को आसमान पर चढाने वाले और यहूदियों के हाथ से उन्हें

مَرْيَمَ وَ مُنْجِيَهٗ مِنْ اَيْدِى الْيَهُوْدِ يَا مُجِيْبَ نِدَآءِ يُوْنُسَ فِى

नजात देन वाले, ऐ यूनुस की फ़रयाद तारीकी में सुनने वाले, ऐ मूसा को अपने कलाम से मुख़ातिब करके

الظُّلُمَاتِ يَا مُصْطَفِىَ مُوْسٰى بِالْكَلِمَاتِ يَا مَنْ غَفَرَ لِاٰدَمَ

मुंतख़ब करने वाले ऐ वह कि जिसने आदम के तर्क ऊला दो बख़शा व इदरीस को मक़ामे बुलन्द पर अपनी

خَطِيْئَتَهٗ وَ رَفَعَ اِدْرِيْسَ مَكَانًا عَلِيًّا بِرَحْمَتِهٖ يَا مَنْ نَجّٰى

रहमत से उठा लिया ऐ वह कि जिसने नूह को डूबने से बचा लिया ऐ वह कि जिसने आदे ऊला और समूद को

نُوْحًا مِنَ الْغَرَقِ يَا مَنْ اَهْلَكَ عَادًا الْاُوْلٰى وَ ثَمُوْدَ فَمَا اَبْقٰى وَ

बिल्कुल हलाक कर दिया और उनके क़ब्ल नूह की °कौम को जो बड़ी ज़ालिम और सर्कश थी और उजड़ी

قَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَ اَطْغٰى وَ

हुई मुंकलिब बस्तियों को मीसमार कर दिया, ऐ वह कि जिसने °कौमे लूत को हलाक कर दिया, और °कौमे

الْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى يَا مَنْ دَمَّرَ عَلٰى قَوْمِ لُوْطٍ وَّ دَمْدَمَ عَلٰى

शुऐब पर अपना ग़ज़ब नाज़ल किया, ऐ वह ज़ात जिसने इब्राहीम को अपना खलील बनाया ऐ वह कि जिसने

قُوْمِ شُعَيْبٍ يَا مَنِ اتَّخَذَ اِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلًا يَا مَنِ اتَّخَذَ

मूसा को अपना कलीम बनाया ऐ वह कि जिसने (हज़रत) मोहम्मद मुस्तफ़ा उन पर और उनकी आल पर ख़ुदा

مُوْسٰى كَلِيْمًا وَ اتَّخَذَ مُحَمَّدًا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ عَلَيْهِمْ

की सलात और रहमत हो को अपना हबीब बनाया ऐ लुक़मान को हिकमत अता करनेवाले, ऐ सुलेमान को वह

اَجْمَعِيْنَ حَبِيْبًا يَا مُؤْتِيَ لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ وَ الْوَاهِبَ لِسُلَيْمَانَ

मुल्क देनेवाले जो उनके बाद किसी को न पहुंचे, ऐ जाबिर बादशाहों के ख़िलाफ़ ज़ुलक़र-नैन की मदद

مُلْكًا لَا يَنْبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ يَا مَنْ نَصَرَ ذَا الْقَرْنَيْنِ عَلٰى

करनेवाले, ऐ वह कि जिसने °ख़िज़र को हयाते जावेद अता की व युशा बिन नून के लिए आफ़ताब को

الْمُلُوْكِ الْجَبَابِرَةِ يَا مَنْ اَعْطَى الْخِضْرَ الْحَيٰوةَ وَ رَدَّ لِيُوْشَعَ

डूबने के बाद पलटाया, ऐ वह कि जिसने अपने इलहाम से मादरे मूसा के दिल को मज़बूत कर दिया और

بْنِ نُوْنٍ الشَّمْسَ بَعْدَ غُرُوْبِهَا يَا مَنْ رَبَطَ عَلٰى قَلْبِ اُمِّ

मरयम को किलए इ°प°ाफत में महफ़ूज़ रखा, ऐ वह कि जिसने याहया बिन ज़करिया को ख़िलाफ़े इसमत

مُوْسٰى وَ اَحْصَنَ فَرْجَ مَرْيَمَ ابْنَتِ عِمْرَانَ يَا مَنْ حَصَّنَ

बातों से बचाया मुसा के ग़ुस्से के भड़कते हुए शोलों को साकिन किया ऐ वह कि जिसने ज़करिय्या को याहया

يَحْيٰى بْنَ زَكَرِيَّا مِنَ الذَّنْبِ وَ سَكَّنَ عَنْ مُوْسَى الْغَضَبَ يَا

की विलादत की ख़बर दी ऐ वह कि जिसने इस्माईल का फ़िदया ज़िब्हे अ जीम एक बड़ी क़ुरबानी से बदल

مَنْ بَشَّرَ زَكَرِيَّا بِيَحْيٰى يَا مَنْ فَدَا اِسْمٰعِيْلَ مِنَ الذَّبْحِ بِذِبْحٍ

दिया, ऐ वह कि जिसने हाबील की क़ुरबानी क़ुबूल और क़ाबील पर लानत मुक़र्रर की, ऐ फ़ौजे कुफ़्फ़ार के

عَظِيْمٍ يَا مَنْ قَبِلَ قُرْبَانَ هَابِيْلَ وَ جَعَلَ اللَّعْنَةَ عَلٰى

भगानेवाले, हज़रत मोहम्मद मुस्तफा (स) के लिऐ ऐ ख़ुदा उनपर और उनकी आल पर दरूद भेज ऐ ख़ुदा तु

قَابِيْلَ يَا هَازِمَ الْاَحْزَابِ لِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ

रहमत नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर व तमाम नबियों पर व तमाम रसूलों पर व अपने मुक़र्रबे

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى جَمِيْعِ الْمُرْسَلِيْنَ وَ

फ़रिशतों पर व तमाम इताअत गुज़ार बन्दों पर (ऐ ख़ुदा) मैं तुझसे मांगता हूँ हर उस सवाल के वास्ते से जो

مَلَآئِكَتِكَ الْمُقَرَّبِيْنَ وَ اَهْلِ طَاعَتِكَ اَجْمَعِيْنَ وَ اَسْئَلُكَ

किसी ऐसे शख़्स ने तुझसे किया हो जिससे तू राज़ी हो और तूने उसके क़ुबूल करने पर हतमो जज़्म कर लिया

بِكُلِّ مَسْئَلَةٍ سَئَلَكَ بِهَا اَحَدٌ مِّمَّنْ رَضِيْتَ عَنْهُ فَحَتَّمْتَ لَهٗ

हो ऐ अल्लाह ऐ अल्लाह ऐ अल्लाह ऐ रहम करने वाले ऐ रहम करने वाले ऐ रहम करने वाले ऐ मेहरबान ऐ

عَلَى الْاِجَابَةِ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحْمٰنُ يَا

मेहरबान ऐ मेहरबान, ऐ जलालत व बुज़ुर्गा वाले, ऐ जलालत व बुज़ुर्गा वाले, ऐ जलालत व बुज़ुर्गा वाले, उसी

رَحِيْمُ يَا رَحِيْمُ يَا رَحِيْمُ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ يَا ذَا

का वास्ता, उसी का वास्ता, उसी का वास्ता, उसी का वास्ता, उसी का वास्ता उसी का वास्ता उसी का वास्ता,

الْجَلَالِ وَ الْاِكْرَامِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَ الْاِكْرَامِ بِهٖ بِهٖ بِهٖ بِهٖ بِهٖ بِهٖ

ऐ ख़ुदा मैं सवाल करता हूँ तुझसे हर उस ज़ाती नाम के वसीलेसे जो तूने अपने लिए तजवीज़ किया है, या

بِهٖ بِهٖ اَسْئَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ سَمَّيْتَ بِهٖ نَفْسَكَ اَوْ اَنْزَلْتَهٗ فِيْ

अपने सहीफ़ों में से किसी भी एक में इख़्तियार किया है, या उसे तूने अपने इल्मे ग़ैब में मख़सूसो पोशीदा रखा

شَيْءٍ مِنْ كُتُبِكَ اَوِ اسْتَاْثَرْتَ بِهٖ فِيْ عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ وَ

है, और उन मक़ामाते इज़्ज़त का वास्ता दे के मांगता हूँ जो तेरे अर्श में व उस मुंतहाऐ (मंज़ल) रहमत के वास्ते

بِمَعَاقِدِ الْعِزِّ مِنْ عَرْشِكَ وَ بِمُنْتَهَى الرَّحْمَةِ مِنْ كِتَابِكَ وَ

से जो तेरी किताब में है और उसका वास्ता ख़ास से मैं दुआ करता हूँ कि अगर तमाम दरख़्त जो ज़मीन पर हैं

بِمَا لَوْ اَنَّ مَا فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّ الْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْ

वह क़लम हो जाएं और सातों समुंद्र सियाही हो जाऐ जब भी ख़ुदा के कलेमात तमाम न हों यक़ीनन अल्लाह

بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمَاتُ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ

बड़ा इज़्ज़त व हिकमत वाला है और ऐ ख़ुदा मैं तुझसे तेरे असमाऐ हुसना के वसीला से सवाल करता हूँ

حَكِيْمٌ وَّ اَسْئَلُكَ بِاَسْمَآئِكَ الْحُسْنٰى الَّتِىْ نَعَتَّهَا فِىْ كِتَابِكَ

जिसकी तौसीफ़ तूने अपनी किताब में की है और तूने कहा है की तमाम असमाए हुसना ख़ुदा के लिए हैं (ऐ

فَقُلْتَ وَ لِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا وَ قُلْتَ اُدْعُوْنِىْ

बन्दों) उनके वास्ते से ख़ुदाको पुकारे और तूने यह भी क़हा कि मुझसे दुआ करो मैं क़ुबूल करूंगा और तूने यह

اَسْتَجِبْ لَكُمْ وَ قُلْتَ وَ اِذَا سَئَلَكَ عِبَادِىْ عَنِّىْ فَاِنِّىْ

भी कहा कि जब मेरे बन्दे मुझसे मांगते हैं तो मैं उसके नज़दीक होता हूँ और पुकारनेवाले की दुआ सुनता हूँ जब

قَرِيْبٌ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ وَقُلْتَ يَا عِبَادِىَ

वह मुझे पुकारता है लेहाज़ा (बन्दों को) चाहिए कि वह मुझसे दुआ करें ताकि मैं उसको क़ुबूल करूं और तूने

الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ اِنَّ

यह भी क़हा कि ऐ मेरे बन्दों। जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया ख़ुदा की रहमत से मायुस न हों यक़ीनन

اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ وَ اَنَا

ख़ुदा तमाम गुनाहों को बख़शने वाला है, क्योंकि वह रहम व करमवाला है (अब) मैं ऐ मेरे ख़ुदा। तुझसे सवाल

اَسْئَلُكَ يَا اِلٰهِىْ وَ اَدْعُوْكَ يَا رَبِّ وَ اَرْجُوْكَ يَا سَيِّدِىْ وَ

करता हूँ ऐ पालने वाले तुझे पुकारता हूँ और मेरे सरदार तुझ से उम्मीद रखता हूँ व दुआ के क़ुबूल होने की तमा

اَطْمَعُ فِىْ اِجَابَتِىْ يَا مَوْلَاىَ كَمَا وَعَدْتَنِىْ وَ قَدْ دَعَوْتُكَ كَمَا

रखता हूँ जैसा कि तूने वादा किया और मैंने तो तुझे उसी तरह पुकारा जैसा तूने हुक्म दिया अब ऐ करीम

اَمَرْتَنِیْ فَافْعَلْ بِیْ مَا اَنْتَ اَهْلُهٗ یَا کَرِیْمُ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ

कारसाज़ जिसका तू अहल है वह ही मुझे दे और तमाम हम्द उसी ख़ुदा के लिए "जो कुल जहानों का पालंहार

الْعَالَمِیْنَ وَ صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ اَجْمَعِیْنَ.

है और ऐ अल्लाह सलात भेज मोहम्मद और उनकी तमाम आल पर।

उसके बाद अपनी हाजतों का ज़िक्र करे के इन्शाअल्लाह पूरी होंगी। मोहिज्जुद दावात की रिवायत है के जब भी इंसान इस दुआ को पढ़े तो उसे बातहारत होना चाहिए ताकी पाकीज़गी के ज़ेरे असर उसकी दुआ क़ुबूल हो जाए।

दुआए यस्तशीर

यानी मशविरा करने की दुआ। सैय्यद बिन ताउस ने मोहिज्जुद दावात में अमीरूल मोमिनीन (अ) से नक़्ल किया है के रसूले अक्रम (स) ने मुझे यह दुआ सिखाई है। और फ़रमाया है के हर रंजो राहत में इस दुआ की तिलावत करूँ। और अपने बाद अपने जानशीन को इसकी दावत दूँ और आख़िर दम तक इसका सिलसिला जारी रखूँ और फ़रमाया है के या अली हर सुबहो शाम इस दुआ को पढ़ो के यह अर्षे इलाही के खज़ानों में से एक खज़ाना है। उसके बाद उबय बिन काब ने ख़्वाहिश की के या रसूलल्लाह इस दुआ की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाएं तो आं हज़रत (स) ने इसके बेशुमार सवाब में से बाज़ चीज़ों का तज़केरा फ़रमाया जिन्हें किताब मोहिज्जुद दावात में देखा जा सकता है। दुआ इस प्रकार है:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِیْنُ الْمُدَبِّرُ

ख़ुदा के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहमवाला है। हम्दो सिपास उस खुदाए यकता के लिए जिसके सिवा और

بِلَا وَزِيْرٍ وَّ لَا خَلْقٍ مِّنْ عِبَادِهٖ يَسْتَشِيْرُ الْاَوَّلُ غَيْرُ

कोई माबूद नहीं काएनात का असली मालिक जो बज़ाते ख़ुद हक़ है व हक़ को उजागर फ़रमाने वाला है ऐसा

مَوْصُوْفٍ وَّالْبَاقِيْ بَعْدَ فَنَآءِ الْخَلْقِ الْعَظِيْمُ الرُّبُوْبِيَّةِ نُوْرُ

मुदब्बिर जिसका न कोई मुआविन है न मददगार व इस तरह का मुंजिज़म कि उसके बन्दों में से न कोई उसका

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرَضِيْنَ وَ فَاطِرُهُمَا وَ مُبْتَدِعُهُمَا بِغَيْرِ عَمَدٍ

मुशीर है न सलाहकार। वह अव्वल है मगर उसकी सिफ़त की तारीफ़ मुमकिन नहीं वह हर शैय की फ़ना के बाद

خَلَقَهُمَا وَ فَتَقَهُمَا فَتْقًا فَقَامَتِ السَّمٰوٰتُ طَائِعَاتٍ بِاَمْرِهٖ

भी बाक़ी रहेगा। उसकी शाने रबूबिय निहायत बुलन्द, वह आसमान की रौशनी है, ज़मीन का उजाला है, उसी ने

وَاسْتَقَرَّتِ الْاَرْضُوْنَ بِاَوْتَادِهَا فَوْقَ الْمَآءِ ثُمَّ عَلاَ رَبُّنَا فِيْ

उन्हें हसती का ख़िलअत बख़्शा। हां वही उनका मुजिद है ख़ल्लाके आलम ने कोई आसरा सहारा दिए बग़ैर इतनी

السَّمٰوٰتِ الْعُلٰى اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى لَهٗ مَا فِي

अज़ीम इमारत खड़ी करदी व फिर अ॰र्जो समा को एक दूसरे से अलग भी कर दिया आसमान उसके हुकम के

السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى فَاَنَا

पाबन्द अपनी जगह जमे हुए व ज़मीन बड़े बड़े पहाड़ों को अपनी गोद में लिए पानी पर ठहरी हुई है फिर मालूम हो

اَشْهَدُ بِاَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ رَافِعَ لِمَا وَضَعَتْ وَ لاَ وَاضِعَ لِمَا

कि हमारे पालने वाले का मक़ामे अज़मत सिपरे बरीं, और अर्शे आला उसी रहमानो रहीम के ज़ेरे रंगीन है आकाश

رَفَعْتَ وَ لاَ مُعِزَّ لِمَنْ اَذْلَلْتَ وَ لاَ مُذِلَّ لِمَنْ اَعْزَزْتَ وَ لاَ

से से ज़मीन तक नीज़ इन दोनों के बीच में जो कुछ है वह सब और फिर कोह व दस्त की गहराईयां जो कुछ

مَانِعَ لِمَنْ اَعْطَيْتَ وَ لاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَ اَنْتَ اللهُ لاَ اِلٰهَ

ज़ःखीरा किये हुए हैं वह तमाम का तमाम उसी मालिके हक़ीक़ी की मिलकियत हैं पस मैं गवाही देता हूँ कि बस तू

اِلَّا اَنْتَ كُنْتَ اِذْ لَمْ تَكُنْ سَمَآءٌ مَبْنِيَّةٌ وَّلاَ اَرْضٌ مَدْحِيَّةٌ

ही वह ख़ुदा है जिसे तू झुका दे उसे कोई उठा नहीं सकता व जिसे तू बुलन्दी पर पहुंचा दे उसे कोई नीचा नहीं दिखा

وَّلاَ شَمْسٌ مُضِيْئَةٌ وَّلاَ لَيْلٌ مُظْلِمٌ وَّلاَ نَهَارٌ مُضِيْئٌ وَّلاَ بَحْرٌ

सकता। मालिक तू जिसे ख़ार कर दे उसे कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं और अगर तू किसी को शरफ़ अता करे तो

لُجِّيٌّ وَّلاَ جَبَلٌ رَاسٍ وَّلاَ نَجْمٌ سَارٍ وَّلاَ قَمَرٌ مُنِيْرٌ وَّلاَ رِيْحٌ

फिर किसकी मजाल कि उसे आँख उठा कर देख सके, तेरी अता किसी के रोके रूकनेवाली नहीं व जिसे तू न दे

تَهُبُّ وَلاَ سَحَابٌ يَسْكُبُ وَلاَ بَرْقٌ يَلْمَعُ وَلاَ رَعْدٌ يُسَبِّحُ وَلاَ

उसे कोई कुछ नहीं दे सकता। नीज़ तू ही वह माबूदे यगाना है जिसका कोई शरीक नहीं तू उस वःक्त भी था जब न

رُوْحٌ تَنَفَّسُ وَ لاَ طَآئِرٌ يَطِيْرُ وَلاَ نَارٌ تَتَوَقَّدُ وَلاَ مَآءٌ يَطَّرِدُ

आसमान था न ज़मीन, न सूरज न अंधेरी रात। न रौशन दिन था, और न तूफ़ाने ःखेज़ समुन्द्र न के पहाड़ थे न घूमते

كُنْتَ قَبْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّ كَوَّنْتَ كُلَّ شَيْءٍ وَّ قَدَرْتَ عَلٰى كُلِّ

फिरते सितारे न नूर में झुला हुआ चांद था व ना लहरें लेती हुई हवायें न बरसते बादल थे न लपकती बिजली, न

شَيءٍ وَّ ابْتَدَعْتَ كُلَّ شَيْءٍ وَّ اَغْنَيْتَ وَ اَفْقَرْتَ وَ اَمَتَّ وَ

ग़रज चमक थी व न जान में जान। फिर न उड़ते हुए परिन्दे न देहकती आग व न बहता हुआ पानी। पैदा करनेवाले

اَحْيَيْتَ وَ اَضْحَكْتَ وَ اَبْكَيْتَ وَ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَيْتَ

तू हर मौजूद से पहले था तूही ने हर चीज़ की सूरत गरी की तूही हर श पर क़ुदरत रखता है और तूही मुमकिन का

فَتَبَارَكْتَ يَا اَللّٰهُ وَ تَعَالَيْتَ اَنْتَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

आफ़रीदागर है तू जब चाहता है ख़ुशहाली देता है और तेरी ही मशीयत आदमी को मोहताज बना देती है मौत तेरे

الْخَلَّاقُ الْمُبِيْنُ اَمْرُكَ غَالِبٌ وَ عِلْمُكَ نَافِذٌ وَ كَيْدُكَ

क़ब्ज़े में है ज़िन्दगी पर भी तेरा ही इख़तियार है तूही हंसाता है तूही रूलाता है और अर्शे अज़ीम तो तेरे लिए फ़र्शे

غَرِيْبٌ وَّ وَعْدُكَ صَادِقٌ وَّ قَوْلُكَ حَقٌّ وَّ حُكْمُكَ عَدْلٌ

जेरे पा है, मेरे मालक ऐ अल्लाह तू बहुत बड़ा फ़ैज़ रसां है बे हद बुज़ुर्ग है, तूही वह यकता और बेहमता माबूद है

وَكَلٰمُكَ هُدًى وَ وَحْيُكَ نُوْرٌ وَّ رَحْمَتُكَ وَاسِعَةٌ وَّ عَفْوُكَ

कि तेरे सिवा और कोई लाए॰के परस्तिश नहीं तूही सबका ख़ालिक हर एक का मददगार दुनया वमा फ़ीहा तेरे

عَظِيْمٌ وَّ فَضْلُكَ كَثِيْرٌ وَّ عَطَآؤُكَ جَزِيْلٌ وَّ حَبْلُكَ مَتِيْنٌ وَّ

हुक्म के ताबे सारी ख़िलक़त पर तेरे इल्म की गिरफ़्त व तेरी हर तदबीर बेमिसाल तेरा वादा सच्चा तेरा क़ौल बरहक़

اِمْكَانُكَ عَتِيْدٌ وَّ جَارُكَ عَزِيْزٌ وَّ بَاْسُكَ شَدِيْدٌ وَّ مَكْرُكَ

तेरे फ़ैसले सरासर इंसाफ़ और बातें हिदायत आसार। बारे इलाहा। तेरी वही, रौशनी तेरी रहमत, आम, तेरी बाख़्शिस

مَكِيْدٌ اَنْتَ يَا رَبِّ مَوْضِعُ كُلِّ شَكْوٰى حَاضِرُ كُلِّ مَلَآءٍ وَّ

बे पायां तेरे करम का कोई हिसब नहीं तेरी अता बेशुमार तेरी रस्सी, तेरा वसीला बड़ा मज़बूत और तेरी कुमक

شَاهِدُ كُلِّ نَجْوٰى مُنْتَهٰى كُلِّ حَاجَةٍ مُفَرِّجُ كُلِّ حُزْنٍ غِنٰى

हमेशा दसतियाब तेरी पनाह में आने वाला कामरान तेरा क़हर व ग़ज़ब शदीद और तेरी हिकमते अमली का कोई

كُلِّ مِسْكِيْنٍ حِصْنُ كُلِّ هَارِبٍ اَمَانُ كُلِّ خَآئِفٍ حِرْزُ

तोड़ नहीं पालने वाले बस तूही सबकी सुनता है दिल में छुपी हुई तमाम बातों से बाख़बर हर जगह मौजूद और

الضُّعَفَآءِ كَنْزُ الْفُقَرَآءِ مُفَرِّجُ الْغَمَّآءِ مُعِيْنُ الصَّالِحِيْنَ

सबका देखनेवाला है तेरी ही सरकार हमारी तरह तरह की हाजतों और सारी ज़रूरतों की आमाजगाह है तू हर दर्द व

ذٰلِكَ اللّٰهُ رَبُّنَا لاَ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ تَكْفِيْ مِنْ عِبَادِكَ مَنْ تَوَكَّلَ

अलम का चारागर और हर बे नवा की तवंगरी है गमें दौरां से उकता कर फ़रार का रास्ता देखनेवालों की जाये

عَلَيْكَ وَاَنْتَ جَارُ مَنْ لاَذَبِكَ وَ تَضَرَّعَ اِلَيْكَ عِصْمَةُ مَنِ

पनाह खौफ़ज़दा लोगों का मरकज़े अम्न व आफ़यत कमज़ोरों का निगहबान और जिनके पास कुछ नहीं उनके

اعْتَصَمَ بِكَ نَاصِحُ مَنِ انْتَصَرَ بِكَ تَغْفِرُ الذُّنُوْبَ لِمَنِ

लिए तो ख़ज़ानाए आमिरा है। कर्ब व अंदोह को दूर करने वाला अपने नेक बन्दों का यावर व नासिर हां वही

اسْتَغْفَرَكَ جَبَّارُ الْجَبَابِرَةِ عَظِيْمُ الْعُظَمَآءِ كَبِيْرُ الْكُبَرَآءِ

अल्लाह हम सब का पालने वाला है और उसके अलावा कोई ख़ुदाई के क़ाबिल नहीं परवरदिगार तेरे वो बन्दे जो

سَيِّدُ السَّادَاتِ مَوْلَى الْمَوَالِيْ صَرِيْخُ الْمُسْتَصْرِخِيْنَ

तुझ पर भरोसा करते हैं उनकी मुश्किल कुशाई के लिए तू काफ़ी है, नीज़ जो तह॰प॰ोफ़ुज़ का ॰खांहां हो और इज्ज़

مُنَفِّسُ عَنِ الْمَكْرُوْبِيْنَ مُجِيْبُ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّيْنَ اَسْمَعُ

व इंकेसार के तेरी दरगाह का रूख करे उसे भी तू अपनी पनाह में ले लेता है और जो तुझे मदद के लिए पुकार ले

السَّامِعِيْنَ اَبْصَرُ النَّاظِرِيْنَ اَحْكَمُ الْحَاكِمِيْنَ اَسْرَعُ

उसकी दस्तगीरी फ़रमाता है। माबूद जो कोई तेरे दामने रहमत को थाम ले वह बच जाता है तौबा करनेवालों की

الْحَاسِبِيْنَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ خَيْرُ الْغَافِرِيْنَ قَاضِيْ حَوَآئِجِ

ख़ताओं को माफ़ करता है हर तवाना से ज़्यादा क़ुदरतमंद व हर बड़े से बहुत बड़ा जितने भी बुज़ुर्ग हैं उन सबका

الْمُؤْمِنِيْنَ مُغِيْثُ الصَّالِحِيْنَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ رَبُّ

बुज़ुर्ग तमाम सरदारों का सरदार सारे आक़ाओं का आक़ा व हर फ़रयादी का फ़रयादरस नाशाद ख़लकत को शाद

الْعَالَمِيْنَ اَنْتَ الْخَالِقُ وَ اَنَا الْمَخْلُوْقُ وَ اَنْتَ الْمَالِكُ وَ اَنَا

करता है बेकल दिलों की दुआ क़ुबूल करता है, नीज़ तू हर सुन्ने वाले से ज़्यादा शुनंवाई करता है तू सबसे बढ़कर

الْمَمْلُوْكُ وَ اَنْتَ الرَّبُّ وَ اَنَا الْعَبْدُ وَ اَنْتَ الرَّازِقُ وَ اَنَا

देखने वाला, तमाम मुंसिफ़ों से बड़ा मुंसिफ़ एहतेसाब करने वालों में सबसे तेज़तर मुहतसिब व ऐसा मेहरबान जो

الْمَرْزُوْقُ وَ اَنْتَ الْمُعْطِيْ وَ اَنَا السَّآئِلُ وَ اَنْتَ الْجَوَادُ وَ اَنَا

सारे करम फ़रमाओं में आप अपनी मिसाल है तू सबसे अच्छा बख़्शने वाला अरबाबे ईमान का हाजत रवां, व अपने

الْبَخِيْلُ وَ اَنْتَ الْقَوِیُّ وَ اَنَا الضَّعِيْفُ وَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ وَ اَنَا

नेक बन्दों का हामी व मददगार है, बस तू ही वह अल्लाह है जिसके अलावा कोई माबूद नहीं तूही तमाम जहानों

الذَّلِيْلُ وَ اَنْتَ الْغَنِیُّ وَ اَنَا الْفَقِيْرُ وَ اَنْتَ السَّيِّدُ وَ اَنَا الْعَبْدُ

का परवरदिगार है नीज़ तू ख़ालिक और मैं मख़लूक़ तू मालिक मैं तेरी मिलकियत तू पालनेवाला मैं तेरा बन्दा हूँ तू

وَ اَنْتَ الْغَافِرُ وَ اَنَا الْمُسِيْٓئُ وَ اَنْتَ الْعَالِمُ وَ اَنَا الْجَاهِلُ وَ

रिज़्क़ रसां मैं रोज़ी का तलबगार तू अता करनेवाला मैं तेरे दर का सवाली, तू सरचश्मा जूद व करम, मैं तंग दिल

اَنْتَ الْحَلِيْمُ وَ اَنَا الْعَجُوْلُ وَ اَنْتَ الرَّحْمٰنُ وَ اَنَا الْمَرْحُوْمُ وَ

बुख़्ले मुजस्सम तू हर तरह से तवाना मैं हर लिहाज़ से नातवां तू नियाज़ मैं सरापा इहतियाज तू ख़्वाजाए ख़ाजगां मैं

اَنْتَ الْمُعَافِیْ وَ اَنَا الْمُبْتَلٰی وَ اَنْتَ الْمُجِيْبُ وَ اَنَا الْمُضْطَرُّ وَ

बन्दा ए बन्दगां, तू मगिफ़रत व किनार मैं गुनहगारो मासयत कार, तू आलिम मैं जाहिल तू बा विक़ार मैं उजलत

اَنَا اَشْهَدُ بِاَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَلْمُعْطِیْ عِبَادَكَ بِلَا

शआर तू रहमत बदामां व मै बेरहम मैं तेरी नवाज़शों की गवाही देता हूँ कि बस तूही अल्लाह है व जुज़ तेरे कोई

سُؤَالٍ وَ اَشْهَدُ بِاَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْاَحَدُ الْمُتَفَرِّدُ

मबाद नहीं, तू बेमांग अपने बन्दों को देता है खुदाए यकता यगाना व बे हमता तू बरहॉक है बेनियाज़ है व तेरा कोई

الصَّمَدُ الْفَرْدُ وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اَهْلِ

शरीक नहीं तेरी ही पास सबकी बाज़गश्त होगी। ख़ुदा का दस्द उसकी रहमत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा और उनके

بَيْتِهِ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ وَ اغْفِرْلِيْ ذُنُوْبِيْ وَاسْتُرْ عَلَيَّ

पाक व पाकीज़ा अहलेबैत पर, बारे इलाहा। मेरी ख़ताओं को माफ़ कर दे मेरी बुराइयों की पर्दा पोशी फ़रमा, और

عُيُوْبِيْ وَ افْتَحْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّ رِزْقًا وَّاسِعًا يَا اَرْحَمَ

अज़ राहे लुत्फ़ व इनायत तू मुझपर अपनी रहमत और रिज़्के कसीर दे, ऐ सबसे बड़े रहम करनेवाले, सिपास व

الرَّاحِمِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَحَسْبُنَا اللّٰهُ وَ نِعْمَ

सताइश मख़सूस है अल्लाह के लिए जो जग-जगका पालनहार है ख़ुदा हमारे लिए काफ़ी है वही बेहतरीन मददगार

الْوَكِيْلُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ۔

है, नीज़ पुर क़ुव्वत व हर तवानाई वाहिद ज़रिया ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर की जातवाला सिफ़ात है।

दुआए मुजीर

यानी उदार सहायक की दुआ। यह एक अज़ीमुश शान दुआ है जो हज़रत रसूले अक्रम (स) से मनक़ूल है के जिब्रईल आपके लिए इस दुआ को उस समय लाए थे जब आप मक़ामे इब्राहीम पर नमाज़ पढ़ रहे थे। कफअमी ने बलदुल अमीन और मिस्बाह में इस दुआ का ज़िक्र किया है। और इसके हाशिए पर इसके फ़ज़ाएल बयान किए हैं। जिनमें से एक यह भी है के जो शख़्स माहे रहमज़ान की तेरह, चौदह और पंद्रह तारीख़ को यह दुआ पढ़ेगा परवरदिगार उसके गुनाहों को माफ़ कर देगा चाहे वह बारिश के क़तरों, दरख़्त के पत्तों और सेहरा की रेत के बराबर क्यों न हों। मरी॰जो की शिफ़ा, कर्ज़ की आदाएगी, मालदारी और तवंगरी और रंजो ग़म दूर करने के लिए यह दुआ बहुत ही मुफ़ीद है।

سُبْحَانَكَ يَا اَللّٰهُ تَعَالَيْتَ يَارَحْمٰنُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا

ख़ुदा के नामसे जो रहमानो रहीम है। पाक व मुनज्जा है तू ऐ अल्लाह। बुलंद है तू ऐ रहमान। पनाह देने

رَحِيْمُ تَعَالَيْتَ يَا كَرِيْمُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا مَلِكُ

वाले हमे जहन्नम से पनाह देदे। पाकीज़ा है तू ऐ रहीम। बुलंद मरतबा है ऐ करीम। हमे जहन्नम से पनाह दे

تَعَالَيْتَ يَا مَالِكُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا قُدُّوْسُ

दे। पाकीज़ा है तू ऐ रहीम। बुलंद मरतबा है ऐ करीम। हमे जहन्नम से पनाह दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ

تَعَالَيْتَ يَا سَلاَمُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا مُؤْمِنُ

बादशाह। बुलंद मरतबा है ऐ मालिक। हमे जहन्नम से पनाह दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ पाकीज़ा सिफ़ात। बुलंद

تَعَالَيْتَ يَا مُهَيْمِنُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا عَزِيْزُ

मरतबा है ऐ सलामती बख़्श। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ अमान देनेवाले। बुलंद मरतबा

تَعَالَيْتَ يَا جَبَّارُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا مُتَكَبِّرُ

है तू ऐ निगरानी करनेवाले। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकिज़ा है तू ऐ साहेबे इज्जत। बुलंद मरतबा है तू

تَعَالَيْتَ يَا مُتَجَبِّرُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا خَالِقُ

ऐ साहेबे जबरूत। हमे जहन्नम से नजात देदे। पाकीज़ा है तू ऐ साहेबे किब्राई। बुलंद मरतबा है ऐ साहेबे

تَعَالَيْتَ يَا بَارِئُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا مُصَوِّرُ تَعَالَيْتَ

बुजुर्गा। हमे जहन्नम से पनाह अता कर दे। पाकीज़ा है तू ऐ ख़ालिक़। बुलंद मरतबा है ऐ मौजिद। हमे

يَا مُقَدِّرُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا هَادِیُ تَعَالَيْتَ يَا بَاقِیُ

जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ सूरतगर। बुलंद मरतबा है ऐ तक़दीर साज। हमे जहन्नम से नजात

اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا وَهَّابُ تَعَالَيْتَ يَا تَوَّابُ اَجِرْنَا

अता कर दे। पाकिज़ा है तू ऐ हादी। बुलंद मरतबा है ऐ तू बाक़ी अबदी। हमे जहन्नम से नजात अता कर

مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا فَتَّاحُ تَعَالَيْتَ يَا مُرْتَاحُ اَجِرْنَا مِنَ

दे। पाकिज़ा है तू ऐ अता करने वाले। बुलंद मरतबा है तू ऐ तौबा क़ुबूल करने वाले। हमे जहन्नम से नजात

النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا سَيِّدِیُ تَعَالَيْتَ يَا يَامَوْلَایَ اَجِرْنَا مِنَ

अता कर दे। पाकीज़ा है तू ऐ कुशादगी देने वाले। बुलंद मरतबा है ऐ आराम देने वाले। हमे जहन्नम से

النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا قَرِيْبُ تَعَالَيْتَ يَا رَقِيْبُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ

नजात अता कर दे। पाकिज़ा है तू ऐ मेरे सरदार। बुलंद मरतबा है तू ऐ मेरे मौला। हमे जहन्नम से नजात

يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا مُبْدِءُ تَعَالَيْتَ يَا مُعِيْدُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ

अता कर दे। पाकीज़ा है तू ऐ क़रीब। बुलंद मरतबा है ऐ निगरान। हमे जहन्नम से पनाह दे दे। पाकिज़ा है

سُبْحَانَكَ يَا حَمِيْدُ تَعَالَيْتَ يَا مَجِيْدُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ

तू ऐ इजाद करने वाले। बुलंद मरतबा है ऐ पलटाने वाले। हमे जहन्नम से नजात अता कर दे। पाकिज़ा है तू

يَا قَدِيْمُ تَعَالَيْتَ يَا عَظِيْمُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا

ऐ क़ाबिले हम्द। बुलंद मरतबा है ऐ साहेबे मज्द व करामत। हमे जहन्नम से नजात अता कर दे। पाकीज़ा

غَفُوْرُ تَعَالَيْتَ يَا شَكُوْرُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا شَاهِدُ

है तू ऐ क़दीम। बुलंद मरतबा है तू ऐ अज़ीम। हमे जहन्नम से नजात अता कर दे। पाकीज़ा है तू ऐ बख़्शने

تَعَالَيْتَ يَا شَهِيْدُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا حَنَّانُ

वाले। बुलंद मरतबा है ऐ कदरदानी करने वाले। हमे जहन्नम से नजात अता कर दे। पाकिज़ा है तू ऐ

تَعَالَيْتَ يَا مَنَّانُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا بَاعِثُ

शाहिद। बुलंद मरतबा है ऐ शहीद। हमे जहन्नम से पनाह दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ मेहेरबान। बुलंद मरतबा है

تَعَالَيْتَ يَا وَارِثُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا مُحْيِيُ تَعَالَيْتَ

ऐ मोहसिन। हमे जहन्नम से पनाह दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ उठाने वाले। बुलंद मरतबा है ऐ रह जाने वाले।

يَا مُمِيْتُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا شَفِيْقُ تَعَالَيْتَ يَا

हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकिज़ा है तू ऐ हयात देनेवाले। बुलंद मरतबा है ऐ मौत देने वाले। हमे

رَفِيْقُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا اَنِيْسُ تَعَالَيْتَ يَا

जहन्नम से नजात दे दे। पाकिज़ा है तू ऐ शफ़ीक़। बुलंद मरतबा है ऐ रफ़ीक़। हमे जहन्नम से पनाह दे दे।

مُوْنِسُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا جَلِيْلُ تَعَالَيْتَ يَا جَمِيْلُ

पाकीज़ा है तू ऐ अनीस। बुलंद मरतबा है ऐ मोनिस। हमे जहन्नम से पनाह दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ जलिल।

اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا خَبِيْرُ تَعَالَيْتَ يَا بَصِيْرُ اَجِرْنَا

बुलंद मरतबा है तू ऐ जमील। हमे जहन्नम से पनाह दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ बाख़बर। बुलंद मरतबा है ऐ

مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا حَفِيُّ تَعَالَيْتَ يَا مَلِيُّ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا

साहेबे बसीरत। हमे जहन्नम से पनाह दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ लाए॰के मदाह व सना। बुलंद मरतबा है ऐ

مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا مَعْبُوْدُ تَعَالَيْتَ يَا مَوْجُوْدُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا

साहेबे दौलत व ग़नी। हमे जहन्नम से नजात अता कर दे। पाकिज़ा है तू ऐ माबूद। बुलंद मरतबा है ऐ

مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا غَفَّارُ تَعَالَيْتَ يَا قَهَّارُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ

मौजूद। हमे जहन्नम से पनाह देदे। पाकीज़ा है तू ऐ ग़॰प॰ोफार। बुलंद मरतबा है ऐ क़Ôहार। हमे जहन्नम

سُبْحَانَكَ يَا مَذْكُوْرُ تَعَالَيْتَ يَا مَشْكُوْرُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ

से नजात देदे। पाकीज़ा है तू ऐ क़ाबिले ज़िक्र। बुलंद मरतबा है ऐ क़ाबिले शुक्र। हमे जहन्नम से नजात दे

سُبْحَانَكَ يَا جَوَادُ تَعَالَيْتَ يَا مَعَاذُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ

दे। पाकीज़ा है तू ऐ जवाद। बुलंद मरतबा है ऐ पनाहगाह। हमे जहन्नम से नजात अता कर दे। पाकिज़ा है

يَا جَمَالُ تَعَالَيْتَ يَا جَلَالُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا

तू ऐ ऐने जमाल। बुलंद मरतबा है ऐ ऐने जलाल। हमे जहन्नम से नजात अता कर दे। पाकीज़ा है तू ऐ

سَابِقُ تَعَالَيْتَ يَا رَازِقُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا صَادِقُ

सबसे आगे रहनेवाले। बुलंद मरतबा है ऐ रोज़ी देने वाले। हमे जहन्नम से नजात इनायत कर दे। पाकीज़ा है

تَعَالَيْتَ يَا فَالِقُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا سَمِيْعُ تَعَالَيْتَ

तू ऐ सादिक़ुल वाद। बुलंद मरतबा है ऐ शिगाफ़ता करनेवाले। हमे जहन्नम से नजात अता कर दे। पाकिज़ा

يَا سَرِيْعُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا رَفِيْعُ تَعَالَيْتَ يَا بَدِيْعُ

है तू ऐ सुन्नेवाले। बुलंद मरतबा है तू ऐ बहुत जल्द क़ुबूल करनेवाले। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा

اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا فَعَّالُ تَعَالَيْتَ يَا مُتَعَالُ اَجِرْنَا

है तू ऐ बुलंद मरतबा। बुलंद मरतबा है ऐ मौजिद। हमे जहन्नम से नजात अता कर दे। पाकीज़ा है तू ऐ

مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا قَاضِيْ تَعَالَيْتَ يَا رَاضِيْ اَجِرْنَا مِنَ

निजामे आलम चलानेवाले। बुलंद मरतबा है तू ऐ बुज़ुर्गवार। हमे जहन्नम से नजात अता कर दे। पाकीज़ा

النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا قَاهِرُ تَعَالَيْتَ يَا طَاهِرُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا

है तू ऐ फ़ैसला करने वाले। बुलंद मरतबा है ऐ राज़ी हो जाने वाले। हमे जहन्नम से नजात अता कर दे।

مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا عَالِمُ تَعَالَيْتَ يَا حَاكِمُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ

पाकीज़ा है तू ऐ ग़ालिब करनेवाले। बुलंद व बरतर है ऐ तय्यब व ताहिर। हमे जहन्नम से नजात अता कर

سُبْحَانَكَ يَا دَآئِمُ تَعَالَيْتَ يَا قَآئِمُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ

दे। पाकीज़ा है तू ऐ आलिम। बुलंद मरतबा है ऐ हाकिम। हमे जहन्नम से नजात अता कर दे। पाकीज़ा है तू

يَا عَاصِمُ تَعَالَيْتَ يَا قَاسِمُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا غَنِيُّ

ऐ हमेशा रहनेवाले। बुलंद मरतबा है ऐ क़ायम बिल ज़ात। हमे जहन्नम से नजात अता कर दे। पाकीज़ा है

تَعَالَيْتَ يَا مُغْنِيْ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا وَفِيُّ تَعَالَيْتَ يَا

तू ऐ बचाने वाले। बुलंद मरतबा है ऐ तकसीम करनेवाले। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ

قَوِیُّ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ یَا مُجِیْرُ سُبْحَانَكَ یَا كَافِیُ تَعَالَیْتَ یَا شَافِیُ

ग़नी। बुलंद मरतबा है तू ऐ ग़नीसाज़। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ वफ़ा करने वाले। बुलंद

اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ یَا مُجِیْرُ سُبْحَانَكَ یَا مُقَدِّمُ تَعَالَیْتَ یَا مُؤَخِّرُ اَجِرْنَا

मरतबा है ऐ साहिबे क़ुदरत। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ काफ़ी। बुलंद मरतबा है ऐ

مِنَ النَّارِ یَا مُجِیْرُ سُبْحَانَكَ یَا اَوَّلُ تَعَالَیْتَ یَا اٰخِرُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ یَا

शाफ़ी। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ आगे बढ़ाने वाले। बुलंद मरतबा है ऐ पीछे ड़ालदेने

مُجِیْرُ سُبْحَانَكَ یَا ظَاهِرُ تَعَالَیْتَ یَا بَاطِنُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ یَا مُجِیْرُ

वाले। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ अव्वल। बुलंद मरतबा है ऐ आा॰खिर। हमे जहन्नम से

سُبْحَانَكَ یَا رَجَآءُ تَعَالَیْتَ یَا مُرْتَجٰی اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ یَا مُجِیْرُ

नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ ज़ाहिर। बुलंद मरतबा है ऐ बातिन। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू

سُبْحَانَكَ یَا ذَاالْمَنِّ تَعَالَیْتَ یَا ذَاالطَّوْلِ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ یَا مُجِیْرُ

ऐ उम्मीदे बेकसाँ। बुलंद मरतबा है तु ऐ मरजाए आरज़ू। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ

سُبْحَانَكَ یَا حَیُّ تَعَالَیْتَ یَا قَیُّوْمُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ یَا مُجِیْرُ سُبْحَانَكَ یَا

साहेबे एहसान। बुलंद मरतबा है ऐ साहेबे करम। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ जिंदा। बुलंद

وَاحِدُ تَعَالَیْتَ یَا اَحَدُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ یَا مُجِیْرُ سُبْحَانَكَ یَا سَیِّدُ

मरतबा है ऐ निगेबान। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ अकेले। बुलंद मरतबा है ऐ ख़ुदाए

تَعَالَيْتَ يَا صَمَدُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا قَدِيْرُ تَعَالَيْتَ

एकता। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकिज़ा है तू ऐ मेरे सरदार। बुलंद मरतबा है ऐ बेनियाज़। हमे जहन्नम

يَا كَبِيْرُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا وَالِيْ تَعَالَيْتَ يَا مُتَعَالِيْ

से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ साहेबे क़ुदरत। बुलंद मरतबा है ऐ साहेबे बुज़ुर्गा। हमे जहन्नम से नजात दे

اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا عَلِيُّ تَعَالَيْتَ يَا اَعْلٰى اَجِرْنَا مِنَ

दे। पाकीज़ा है तू ऐ वाली। बुलंद मरतबा है ऐ आली। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकिज़ा है तू ऐ बुलंद।

النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا وَلِيُّ تَعَالَيْتَ يَا مَوْلٰى اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا

बुलंद मरतबा है ऐ आला। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ वली। बुलंद मरतबा है ऐ मौला।

مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا ذَارِءُ تَعَالَيْتَ يَا بَارِءُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ

हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ इजाद करने वाले। बुलंद मरतबा है ऐ ख़ल्क़ करने वाले। हमे

سُبْحَانَكَ يَا خَافِضُ تَعَالَيْتَ يَا رَافِعُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ

जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ गिराने वाले। बुलंद मरतबा है ऐ उठाने वाले। हमे जहन्नम से

سُبْحَانَكَ يَا مُقْسِطُ تَعَالَيْتَ يَا جَامِعُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ

नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ इन्शा करने वाले। बुलंद मरतबा है ऐ जमा करने वाले। हमे जहन्नम से नजात

سُبْحَانَكَ يَا مُعِزُّ تَعَالَيْتَ يَا مُذِلُّ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا

दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ इज़्ज़त देने वाले। बुलंद मरतबा है तू ऐ ज़लील करने वाले। हमे जहन्नम से पनाह दे

حَافِظُ تَعَالَيْتَ يَا حَفِيْظُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا قَادِرُ

दे। पाकीज़ा है तू ऐ हिफ़ाज़त करने वाले। बुलंद मरतबा है ऐ मेहेरबानी करने वाले। हमे जहन्नम से नजात

تَعَالَيْتَ يَا مُقْتَدِرُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا عَلِيْمُ

दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ क़ुदरत रखने वाले। बुलंद मरतबा है ऐ इख़्तियार रखने वाले। हमे जहन्नम से नजात

تَعَالَيْتَ يَا حَلِيْمُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا حَكَمُ

दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ इल्म रखने वाले। बुलंद मरतबा है ऐ हिल्म रखने वाले। हमे जहन्नम से पनाह दे दे।

تَعَالَيْتَ يَا حَكِيْمُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا مُعْطِىْ

पाकीज़ा है तू ऐ फ़ैसला करने वाले। बुलंद मरतबा है ऐ हिकमत वाले। हमे जहन्नम से पनाह दे दे।

تَعَالَيْتَ يَا مَانِعُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا ضَآرُّ تَعَالَيْتَ

पाकिज़ा है तू ऐ अता करने वाले। बुलंद मरतबा है ऐ रोकने वाले। हमे जहन्नम से पनाह दे दे। पाकीज़ा है

يَا نَافِعُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا مُجِيْبُ تَعَالَيْتَ يَا

तू ऐ इख़्तियार रखने वाले। बुलंद मरतबा है ऐ फ़ायदा देने वाले। हमे जहन्नम से पनाह दे दे। पाकिज़ा है तू

حَسِيْبُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا عَادِلُ تَعَالَيْتَ يَا

ऐ क़ुबूल करने वाले। बुलंद मरतबा है तू ऐ हिसाब करने वाले। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू

فَاصِلُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا لَطِيْفُ تَعَالَيْتَ يَا

ऐ आदिल। बुलंद मरतबा है ऐ जुदा करने वाले। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकिज़ा है तू ऐ लतीफ़।

شَرِيْفُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا رَبُّ تَعَالَيْتَ يَا حَقُّ

बुलंद मरतबा है ऐ शरीफ़। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ रब। बुलंद मरतबा है तू ऐ हक़।

اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا مَاجِدُ تَعَالَيْتَ يَا وَاحِدُ اَجِرْنَا

हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ मज्द व बुज़ुरगी वाले। बुलंद मरतबा है ऐ एकता ज़ात वाले।

مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا عَفُوُّ تَعَالَيْتَ يَا مُنْتَقِمُ اَجِرْنَا مِنَ

हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ माफ़ करनेवाले। बुलंद मरतबा है ऐ इनतिक़ाम लेने वाले। हमे

النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا وَاسِعُ تَعَالَيْتَ يَا مُوَسِّعُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا

जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ वुसअत रखने वाले। बुलंद मरतबा है ऐ वुसअत देनेवाले। हमे

مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا رَئُوْفُ تَعَالَيْتَ يَا عَطُوْفُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا

जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ मेहेरबान। बुलंद मरतबा है ऐ मेहेरबानी करने वाले। हमे जहन्नम

مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا فَرْدُ تَعَالَيْتَ يَا وِتْرُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ

से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ एकता ज़ात वाले। बुलंद मरतबा है ऐ बेमिसाल ज़ात वाले। हमे जहन्नम से

سُبْحَانَكَ يَا مُقِيْتُ تَعَالَيْتَ يَا مُحِيْطُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ

नजात दे दे। पाकिज़ा है तू ऐ मोअय्यन करने वाले। बुलंद मरतबा है तू ऐ एहाता रखने वाले। हमे जहन्नम

سُبْحَانَكَ يَا وَكِيْلُ تَعَالَيْتَ يَا عَدْلُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ

से पनह दे दे। पाकिज़ा है तू ऐ ज़िम्मेदार। बुलंद मरतबा है ऐ ऐने अदल। हमे जहन्नम से पनह दे दे।

سُبْحَانَكَ يَا مُبِيْنُ تَعَالَيْتَ يَا مَتِيْنُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ

पाकीज़ा है तू ऐ स्पष्ट करने वाले। बुलंद मरतबा है ऐ इसतेक़ाम देने वाले। हमे जहन्नम से पनह दे दे।

سُبْحَانَكَ يَا بَرُّ تَعَالَيْتَ يَا وَدُوْدُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا

पाकिज़ा है तू ऐ नेक ज़ात। बुलंद मरतबा है ऐ मोहब्बत करने वाले। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा

رَشِيْدُ تَعَالَيْتَ يَا مُرْشِدُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا نُوْرُ

है तू ऐ रश्द व हिदायत वाले। बुलंद मरतबा है ऐ मार्गदर्शन करने वाले। हमे जहन्नम से नजात दे दे।

تَعَالَيْتَ يَا مُنَوِّرُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا نَصِيْرُ

पाकीज़ा है तू ऐ नूर। बुलंद मरतबा है ऐ नूर बख़्श आलम। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकिज़ा है तू ऐ

تَعَالَيْتَ يَا نَاصِرُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا صَبُوْرُ

मददगार। बुलंद मरतबा है ऐ नुसरत करने वाले। हमे जहन्नम से पनाह दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ बरदाश्त

تَعَالَيْتَ يَا صَابِرُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا مُحْصِيْ

करने वाले। बुलंद मरतबा है ऐ साबिर। हमे जहन्नम से पनाह दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ शुमार करने वाले।

تَعَالَيْتَ يَا مُنْشِئُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا سُبْحَانُ

बुलंद मरतबा है ऐ इजाद करने वाले। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ ज़ाते पाक । बुलंद

تَعَالَيْتَ يَا دَيَّانُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا مُغِيْثُ

मरतबा है ऐ बदला देने वाले। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ फ़रयाद रस। बुलंद मरतबा है ऐ

تَعَالَيْتَ يَا غِيَاثُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا فَاطِرُ

दाद रसी करने वाले। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकीज़ा है तू ऐ ख़ालिक। बुलंद मरतबा है ऐ हाजिर व

تَعَالَيْتَ يَا حَاضِرُ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ سُبْحَانَكَ يَا ذَاالْعِزِّ وَ

नाज़र। हमे जहन्नम से नजात दे दे। पाकिज़ा है तू ऐ इज़्ज़त व जमाल वाले। बा बरकत है ऐ जलाल व

الْجَمَالِ تَبَارَكْتَ يَا ذَاالْجَبَرُوْتِ وَ الْجَلَالِ سُبْحَانَكَ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ

जमाल वाले। पाकीज़ा है तू तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है। तू पाकिज़ा है और मै तेरे ज़ालिम बंदों मे से हूँ।

سُبْحَانَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ وَ نَجَّيْنَاهُ مِنَ الْغَمِّ

हमने बंदे की दुआ क़ुबूल कर ली और उसे ग़म से नजात दे दी और हम इसी तरह ईमान वालों को नजात

وَ كَذٰلِكَ نُنْجِي الْمُؤْمِنِيْنَ وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ

देते हैं। रहमते ख़ुदा हमारे सरदार हजरत मुहम्मद व उनकी आले ताहीरीन पर और सारी तारीफ़ अल्लाह

اَجْمَعِيْنَ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَ حَسْبُنَا اللّٰهُ وَ نِعْمَ الْوَكِيْلُ وَ

के लिए जो रब्बुल आलामीन है। वही हमारे लिए काफ़ी है व वही बेहतरीन ज़िम्मेदार है। ख़ुदा ए अली व

لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ-

अज़ीम के अलावा कोई ताक़त व क़ुव्वत नही है।

दुआए अदीला

दुआ अदीला यानी गुमराही से बचाने की दुआ। इस प्रकार है:

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है। अल्लाह ख़ुद इस बात का गवाह है के उसके अलावा कोई

شَهِدَ اللهُ اَنَّهٗ لاَ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَ الْمَلاَئِكَةُ وَ اُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا

ख़ुदा नही है। मलाएका और इल्मवाले भी गवाह हैं। वो अद्ल के साथ क़याम करने वाला है। ख़ुदा ए

بِالْقِسْطِ لاَ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللهِ

अजीज व हकीम के अलावा कोई ख़ुदा नही है। दीन अल्लाह के पास सिर्फ़ इसलाम है। मै उसका

الْاِسْلاَمُ وَ اَنَ الْعَبْدُ الضَّعِيْفُ الْمُذْنِبُ الْعَاصِىُ الْمُحْتَاجُ

कमजोर बंदा व गुनेहगार व खताकार व मोताज व हकीर हूँ। मै अपने मुनइम अपने खालिक अपने

الْحَقِيْرُ اَشْهَدُ لِمُنْعِمِىْ وَ خَالِقِىْ وَ رَازِقِىْ وَ مُكْرِمِىْ كَمَا شَهِدَ لِذَاتِهٖ وَ

राजिक और अपने करामत देने वाले के हक मे गवाही देता हूँ जैसे खुद उसने अपनी अजमत की

شَهِدَتْ لَهُ الْمَلاَئِكَةُ وَ اُولُوا الْعِلْمِ مِنْ عِبَادِهٖ بِاَنَّهٗ لاَ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ

गवाही दी है। और उसके मलाएका और इल्म रखने वाले बंदों ने गवाही दी है। उसके अलावा कोई

ذُوالنِّعَمِ وَ الْاِحْسَانِ وَ الْكَرَمِ وَ الْاِمْتِنَانِ قَادِرٌ اَزَلِيٌّ عَالِمٌ

°खुदा नही है। वो इज्जत व अहसान वाला है। और करम व इनआम वाला व कादिरे अजली है। वो

اَبَدِيٌّ حَيٌّ اَحَدِيٌّ مَوْجُوْدٌ سَرْمَدِيٌّ سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ مُّرِيْدٌ كَارِهٌ مُدْرِكٌ

आलिमे अबदी है। वो हय्य व अहद है। और मौजूद सरमदी है। वो सुन्ने वाला देखने वाला इरादा करने

صَمَدِيٌّ يَسْتَحِقُّ هٰذِهِ الصِّفَاتِ وَ هُوَ عَلٰى مَا هُوَ عَلَيْهِ فِيْ عِزِّ صِفَاتِهٖ

वाला नफरत करने वाला। हर एक को गिरफ्त मे रखने वाला और बेनिया°ज है। वो अपने सारे सिफात

كَانَ قَوِيًّا قَبْلَ وُجُوْدِ الْقُدْرَةِ وَ الْقُوَّةِ وَ كَانَ عَلِيْمًا قَبْلَ اِيْجَادِ الْعِلْمِ

का हकदार है। और वो अपने सब सिफाते कमाल की मंजिल पर खुद ही फाएज है। कुदरत व कुववत

وَ الْعِلَّةِ لَمْ يَزَلْ سُلْطَانًا اِذْ لَا مَمْلَكَةَ وَ لَا مَالَ وَ لَمْ يَزَلْ سُبْحَانًا عَلٰى

के वजूद के पहले से कवी है। और इलम व इललत के इजाद के पहले से इलम रखने वाला है। उस

جَمِيْعِ الْاَحْوَالِ وُجُوْدُهٗ قَبْلَ الْقَبْلِ فِيْ اَزَلِ الْاٰزَالِ وَ بَقَائُهٗ بَعْدَ

समय भी सुलतान था जब किसी ममलिकत या माल का वजूद नही था। और हमेशा हर हाल मे बे

الْبَعْدِ مِنْ غَيْرِ انْتِقَالٍ وَ لَا زَوَالٍ غَنِيٌّ فِي الْاَوَّلِ وَ الْاٰخِرِ مُسْتَغْنٍ

नियाज रहे गा। उसका वजूद अजल मे पहले से पहले था। और आइंदा बाद के बाद रहेगा। न उसमे

فِي الْبَاطِنِ وَ الظَّاهِرُ لَا جَوْرَ فِيْ قَضِيَّتِهٖ وَ لَا مَيْلَ فِيْ مَشِيَّتِهٖ وَ لَا

कोई तगययुर है और न कोई जवाल। वो इबतिदा और इनतिहा हर मंजिल पर बे नियाज है। जाहिर व

ظُلْمَ فِيْ تَقْدِيْرِهٖ وَ لَا مَهْرَبَ مِنْ حُكُوْمَتِهٖ وَ لَا مَلْجَاَ مِنْ سَطَوَاتِهٖ وَ

बातिन हर जगह गनिए मुतलक है। न उसके फैसले मे कोई जुलम है और न उसकी मशियत मे कोई

لَا مَنْجَا مِنْ نَّقِمَاتِهٖ سَبَقَتْ رَحْمَتُهٗ غَضَبَهٗ وَ لَا يَفُوْتُهٗ اَحَدٌ اِذَا

कजी है। न उसकी तकदीर साजी मे कोई जादती है। और न उसकी हुकूमत से भागने का कोई इमकान

طَلَبَهٗ اَزَاحَ الْعِلَلَ فِي التَّكْلِيْفِ وَ سَوَّى التَّوْفِيْقَ بَيْنَ الضَّعِيْفِ وَ

है। न उसकी सतवत से कोई पनाहगाह है। और न उसके इनतिकाम से कोई मंजिले नजात उसकी

الشَّرِيْفِ مَكَّنَ اَدَآءَ الْمَامُوْرِ وَ سَهَّلَ سَبِيْلَ اجْتِنَابِ الْمَحْظُوْرِ

रहमत उसके गजब से आगे आगे है। और अगर वो किसी को पकडना चाहे तो कोई बच कर जा नही

لَمْ يُكَلِّفِ الطَّاعَةَ اِلَّا دُوْنَ الْوُسْعِ وَ الطَّاقَةِ سُبْحَانَهٗ مَا اَبْيَنَ كَرَمَهٗ

सकता। उसने अपने अहकाम मे तमाम मवाने को जाएल कर दिया है। और जईफ व शरीफ सबको

وَ اَعْلٰى شَانَهٗ سُبْحَانَهٗ مَا اَجَلَّ نَيْلَهٗ وَ اَعْظَمَ اِحْسَانَهٗ بَعَثَ الْاَنْبِيَآءَ

बराबर से तौफीक दी है। अहकाम पर अमल करने की ताकत दी है। बुराईयोंसे बचने के रासते हमवार

لِيُبَيِّنَ عَدْلَهٗ وَ نَصَبَ الْاَوْصِيَآءَ لِيُظْهِرَ طَوْلَهٗ وَ فَضْلَهٗ وَ جَعَلَنَا

किये हैं। किसी व्यक्ति को उसकी वुसत व ताकत से जयादा तकलीफ नही दी है। पाकीजा है वो उसका

مِنْ اُمَّةِ سَيِّدِ الْاَنْبِيَآءِ وَ خَيْرِ الْاَوْلِيَآءِ وَ اَفْضِلِ الْاَصْفِيَآءِ وَ اَعْلٰى

करम किस कदर वाजेह और शान किस कदर बुलंद है। पाकीजा है वो उसकि अता किस कदर जलील

الْاَزْكِيَاءِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ سَلَّمَ اٰمَنَّا بِهٖ وَ بِمَا دَعَانَا

और उसका अहसान किस कदर अजीम है। उसने अंबिया कि भेजा ताके अपने अदल को जाहिर करे।

اِلَيْهِ وَ بِالْقُرْاٰنِ الَّذِىْ اَنْزَلَهٗ عَلَيْهِ وَ بِوَصِيِّهِ الَّذِىْ نَصَبَهٗ يَوْمَ

और औसिया को मोअययन किया ताके अपने फजल व करम का इजहार करे। हमको सय्यदुल

الْغَدِيْرِ وَ اَشَارَ بِقَوْلِهٖ هٰذَا عَلِيٌّ اِلَيْهِ وَ اَشْهَدُ اَنَّ الْاَئِمَّةَ الْاَبْرَارَ وَ

अंबिया और खैरूल औलिया अफजले असफिया और बुलंदतरीन अजकिया, हजरत मुहम्मद (स) कि

الْخُلَفَآءَ الْاَخْيَارَ بَعْدَ الرَّسُوْلِ الْمُخْتَارِ عَلِيٌّ قَامِعُ الْكُفَّارِ وَ مِنْ

उम्मत मे करार दिया है। हम उन पर और उनकी दावत पर ईमान ले आए और उस कुरान पर ईमान

بَعْدِهٖ سَيِّدُ اَوْلَادِهِ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ ثُمَّ اَخُوْهُ السِّبْطُ التَّابِعُ

लाए जिसको उन पर नाजिल किया गया है। और उस वसी पर जिसको गदीर के दिन मौला बनाया गया

لِمَرْضَاتِ اللّٰهِ الْحُسَيْنُ ثُمَّ الْعَابِدُ عَلِيٌّ ثُمَّ الْبَاقِرُ مُحَمَّدٌ ثَمَّ

है। और हाजा अली (ये अमी है) कहकर उसकी तरफ इशारा किया गया है। मै गवाही देता हूँ के

الصَّادِقُ جَعْفَرٌ ثُمَّ الْكَاظِمُ مُوْسٰى ثُمَّ الرِّضَا عَلِيٌّ ثُمَّ التَّقِيُّ مُحَمَّدٌ

आइम्मा अबरार और खुलाफा ए अखयार मे रसूले मुखतार के बाद पहले हजरत अली हैं जो कुफ्फार

ثُمَّ النَّقِيُّ عَلِيٌّ ثُمَّ الزَّكِيُّ الْعَسْكَرِيُّ الْحَسَنُ ثُمَّ الْحُجَّةُ الْخَلَفُ

कि फना करने वाले हैं। और उनके बाद उनके फरजंद हसन बिन अली फिर उनके भाई ताबे मरजिए

الْقَآئِمُ الْمُنْتَظَرُ الْمَهْدِیُّ الْمُرْجَی الَّذِیْ بِبَقَآءِہٖ بَقِیَتِ الدُّنْیَا وَ

°खुदा हुसैन उसके बाद हजरत आबिद अली हजरत मुहम्मद बाकिर हजरत जाफर सादिक फिर हजरत

بِیُمْنِہٖ رُزِقَ الْوَرٰی وَبِوُجُوْدِہٖ ثَبَتَتِ الْاَرْضُ وَ السَّمَآءُ وَ بِہٖ یَمْلَأُ

मूसा काजिम फिर हजरत अली रजा फिर हजरत मुहम्मद तकी फिर हजरत अली नकी फिर हजरत

اللّٰہُ الْاَرْضَ قِسْطًا وَّ عَدْلًا بَعْدَ مَا مُلِئَتْ ظُلْمًا وَّ جَوْرًا وَّ اَشْھَدُ اَنَّ

हसन असकरी जकी फिर हजरत हुज्जत काएमे मुनतजर महदी जिनकी बका से दनिया बाकी है और

اَقْوَالَھُمْ حُجَّۃٌ وَّ امْتِثَالَ لَھُمْ فَرِیْضَۃٌ وَّ طَاعَتَھُمْ مَّفْرُوْضَۃٌ وَّ

जिनकी बरकत से सबको रोजी मिल रही है। उनके वजूद से जमीन व आसमान काएम हैं। और वही

مَوَدَّتَھُمْ لَازِمَۃٌ مَقْضِیَّۃٌ وَّ الْاِقْتِدَآءَ بِھِمْ مُنْجِیَۃٌ وَ مُخَالِفَتَھُمْ

जमीन को जुल्म व जौर के बाद अद्ल व इनसाफ से भरने वाले हैं। और मै गवाही देता हूँ के उन सब

مُرْدِیَۃٌ وَّ ھُمْ سَادَاتُ اَھْلِ الْجَنَّۃِ اَجْمَعِیْنَ وَ شُفَآءُ یَوْمِ الدِّیْنِ

के अकवाल हुज्जत हैं। उनके अहकाम °खुदा वंदी फरीजा हैं। उनकी इताअत वाजिब है। और उनकी

وَاَئِمَّۃُ اَھْلِ الْاَرْضِ عَلَی الْیَقِیْنِ وَ اَفْضَلُ الْاَوْصِیَآءِ الْمَرْضِیِّیْنَ وَ

मुहब्बत लाजिम है। उनकी इकतेदा नजात बख्श और उनकी मुखालिफत मोलिक है। ये तमाम अहले

اَشْھَدُ اَنَّ الْمَوْتَ حَقٌّ وَّ مَسَآئَلَۃَ الْقَبْرِ حَقٌّ وَّ الْبَعْثَ حَقٌّ وَّ

जन्नत के सददार। कयामत के दिन के शफी और जमीन के लोगों के इमाम हैं। तमाम पसंदीदा औसिया

النُّشُوْرَ حَقٌّ وَّ الصِّرَاطَ حَقٌّ وَّ الْمِيْزَانَ حَقٌّ وَّ الْحِسَابَ حَقٌّ وَّ

से अफजल हैं। और मै गवाही देता हूँ के मौत, कब्र के सवाल, कयामत का दिन, कब्र से उ?ठना

الْكِتَابَ حَقٌّ وَّ الْجَنَّةَ حَقٌّ وَ النَّارَ حَقٌّ وَّ اَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ

कयामत मे फैलना, सिरात, मीजान, हिसाब, किताब, जन्नत व जहन्नम, सब सच है। और कयामत

فِيْهَا وَ اَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ اَللّٰهُمَّ فَضْلُكَ رَجَآئِيْ وَ

बेशक आने वाली है। और अल्लाह सब को कब्रों से ब हर हाल उ?ठाएगा। परवरदिगार मेरी उम्मीद

كَرَمُكَ وَ رَحْمَتُكَ اَمَلِيْ لَا عَمَلَ لِيْ اَسْتَحِقُّ بِهِ الْجَنَّةَ وَ لَا طَاعَةَ لِيْ

तेरा फज्ल व करम है। और मेरी आरजू तेरी मेहेरबानी है। मेरे पास कोई अमल नही है। जिस से जन्नत

اَسْتَوْجِبُ بِهَا الرِّضْوَانَ اِلَّا اَنِّيْ اعْتَقَدْتُ تَوْحِيْدَكَ وَ عَدْلَكَ

का हकदार बनूँ। और कोई इताअत नही है। जिस से तेरी रजा हासिल की जा सके। अलावा उसके के

وَارْتَجَيْتُ اِحْسَانَكَ وَ فَضْلَكَ وَ تَشَفَّعْتُ اِلَيْكَ بِالنَّبِيِّ وَ اٰلِهٖ مِنْ

मै तेरी तौहीद व अदल का मोताकिद हूँ और तेरे फजल व अहसान का उममादवार हूँ। तेरी बारगाह मे

اَحَبَّتِكَ وَ اَنْتَ اَكْرَمُ الْاَكْرَمِيْنَ وَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى

नबी व आले नबी हो शफी बनाया है। और तू बेहतरीन करम व रहम करने वाला है। अल्लाह हमारे

نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ اَجْمَعِيْنَ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ وَ سَلَّمَ تَسْلِيْمًا

नबी हजरत मुहम्मद और उनकी आले तय्यबीन व ताहिरीन पर रहमत नाजिल करे और उनपर बेशुमार

كَثِيْرًا كَثِيْرًا وَّ لاَحَوْلَ وَ لاَ قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ اَللّٰهُمَّ يَا

सलाम हों। "खुदा ए अली व अजीम के अलावा कोई ताकत नही है। "खुदाया ऐ बेहतरीन रहम करने

اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اِنِّيْ اَوْدَعْتُكَ يَقِيْنِيْ هٰذَا وَ ثَبَاتَ دِيْنِيْ وَ اَنْتَ خَيْرُ

वाले। मैने इस यकीन को और अपने दीन के सबात को तेरे पास अमानत रख दिया है और तू बेहतरीन

مُسْتَوْدَعٍ وَ قَدْ اَمَرْتَنَا بِحِفْظِ الْوَدَآئِعِ فَرُدَّهٗ عَلَيَّ وَقْتَ حُضُوْرِ مَوْتِيْ

अमीन है। तूने अमानत की हिफाजत का हुक्म दिया है। लिहाजा मौत के समय मेरी इस अकीदे की

अनेक मोअतबर रवायात में यह वाक्या आया है بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

अमानत को वापस कर देना अपनी रहमत के सहारे ऐ बेहतरीन रहमत करने वाले।

इस लिए के अंतिम सासों में शैत्ान आकर वसवसा और शक पैदा करना चाहता है। ताकि इंसान इस दुनिया से बिला ईमान चला जाए। यही कारण है के दुआओं में मौके पर खुदा की पनाह मांगने का हुक्म दिया गया है। जनाब फखरूल मोहक्केकीन ने बताया है के जो व्यक्ति सही अकीदे के साथ दुनिया से जाना चाहता है, उसे चाहिए के इमान के बुनियादी अकाएद को यकीनी दलीगों के साथ और सफाए कल्ब के साथ ़जेहेन में हा़जर करे फिर उसे परवरदिगार के हवाले कर दे।

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْعَدِيْلَةِ عِنْدَ الْمَوْتِ

ख़ुदाया मौत के समय हक से बातिल की तरफ झुकने से तेरी पनाह चाहता हूँ।

اَللّٰهُمَّ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اِنِّيْ اَوْدَعْتُكَ يَقِيْنِيْ هٰذَا وَثَبَاتَ دِيْنِيْ وَ

ऐ अरहमर राहेमीन मैने अपने यकीन को और अपने सबाते दीनी को तेरे पास अमानत रखवा दिया है के तू

اَنْتَ خَيْرُ مُسْتَوْدَعٍ وَ قَدْ اَمَرْتَنَا بِحِفْظِ الْوَدَائِعِ فَرُدَّهٗ عَلَيَّ وَقْتَ

बेहतरीन अमीन है। और तूने अमानतोंको वापस करने का हुक्म दिया है। लेहाजा मौत के समय मेरी इस

حُضُوْرِ مَوْتِيْ

अमानत को वापस कर देना।

उनकी फरमाइश की बिना पर इस दुआ अदीला का पढना और इसके माने को ़जहेन में रखना वक्ते मौत इनहेराफ से बचने के लिए बेहतरीन है। पर यह दुआ किसी मासूम की है या ईसे किसी आलिम ने मुरत्तब किया है। इल्मे हदीस के माहिर और रवायतों के जमा करने वाले आलिम मोहद्दिस हमारे उस्ताद मि़र्जा हुसैन नूरी ने फरमाया के दुआ अदीला मारूफा जाफर इब्ने अम की बनाई हुई है। और न किसी मासूम से नक्ल हुई है और न हाफि़जाने हदीस की किताबों में उसका कोई वुजूद पायाहै। पर वा़जेह रहे के शेख तूसी ने मो.बिन सुलैमान दैलमी से रवायत की है के मैने इमाम सादिक (अ) से अ़र्ज किया के आपके शियों में यह बात मशहूर है के इमान की दो किस्में हैं। एक मुसतकिटो साबित और दूसरे ़जाएल हो जाने का खतरा है। तो आप मुझे कोई ऐसी दुआ तालीम करें जिसके पढने के बाद मेरा ईमान ़जाएल न हो तो आपने कहा के हर वाजिब नमा़ज के बाद यह दुआ पढ़ो:

رَضِيتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَ بِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ آلِهٖ نَبِيًّا وَ بِالْاِسْلَامِ

मै ख़ुदा के रब होने हजरत मुहम्मद (स) के नबी होने इसलाम के दीन होने कुरान के किताब होने, काबा के

دِينًا وَ بِالْقُرْآنِ كِتَابًا وَ بِالْكَعْبَةِ قِبْلَةً وَ بِعَلِيٍّ وَلِيًّا وَ اِمَامًا وَ

किबला होने और हजरत अली (अ.स.) वली इमाम और हजरत हसन और हुसैन और अली इब्नुल हुसैन,

بِالْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ وَ عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ وَ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ وَ جَعْفَرِ بْنِ

मुहम्मद बिन अली जाफर बिन मुहम्मद, मुसा बिन जाफर, अली बिन मूसा मुहम्मद बिन अली, अली बिन

مُحَمَّدٍ وَ مُوْسَى بْنِ جَعْفَرٍ وَ عَلِيِّ بْنِ مُوسٰى وَ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ وَ عَلِيِّ بْنِ

मुहम्मद, हसन बिन अली और हुज्जत इबनुल हसन के पेशवा होने से राजी और मुतमइन हूँ। °खुदाया मै

مُحَمَّدٍ وَ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ وَ الْحُجَّةِ بْنِ الْحَسَنِ صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَئِمَّةً

उनकी इमामत से राजी हूँ। तू उनको मुझसे राजी करदे के तू हर शै पर कुदरत और इखतियार रखने वाला

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ رَضِيْتُ بِهِمْ اَئِمَّةً فَارْضَنِيْ لَهُمْ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

है।

दुआए जौशने कबीर

यह दुआ बलदुल अमीन और मिस्बाहे कफअमी में नक्ल की गई है। और इसकी रवायत इमामे ़जैनुल आबेदीन (अ.स.) से उनके पिता के हवाले से पैगंबरे इस्लाम से की गई है। के इस दुआ को जिब्रईले अमीन किसी जंग के मौके पर लाए थे। जब आपके शरीर पर एक भारी ि़जरा थी। जिसके आप खस्ता हाल हो रहे थे। तो जिब्रईल ने कहा पैगम्बर परवरदिगार आपको सलाम भेजता है और फरमाता है इस जौशन को उतार दे और इस दुआ को पढें जो आपके और आपकी उम्मत के लि अम्नो अमान का वसीला है। उसके बाद उन ह़जरत ने एक दुआ के बेशुमार फ़जाएल नक्ल किये हैं जिनके नक्ल करने का यह मौका नहीं है। उनमें से एक फæजीलत यह भी है के जो शख्स यह दुआ को अपने कफन पर लिख ले तो अल्लाह फरमाता है के मुझे उस बंदे पर अ़जाब करते हुए हया आती है। और जो